तुम्भे बणपशु तुम्भ बुद्धि अबा केते ।
बिलंका राजन बोलि न जाण कि मोते ॥ २१ ॥
दधिमुख बोइला जे के जाणे बिलका ।
कि निमन्ते आसिअछु कह छाड़ि शंका ॥ २२ ॥
एमन्त शुणि आहुरि कोपिला राक्षस ।
बोइला एक्षणि तोते करिबि बिनाश ॥ २३ ॥
न जाणु सहस्त्रशिरा रावण मो नाम ।
जाहार दुआरे बाड़ि ताटि खटे जम ॥ २४ ॥
अग्नि जाहार बसन काचे आसि निति ।
जाहार आगरे पांजि कहे बृहस्पति ॥ २५ ॥
पबन देबता आसि पकाए चामर ।
जाहार दुआरे बेद पढ़े बेदबर ॥ २६ ॥
तेतिश कोटि देबता जार आज्ञाकारी ।
जाहाकु निति खटन्ति लक्षे परिबारी ॥ २७ ॥
सात पद्म रथी जार दशपद्म सेना ।
एगार हजार जार मदमत्त जेना ॥ २८ ॥
हाती घोड़ा रथी रथ के पारिब कळि ।
चउद ब्रह्माण्डे जेहु एका महाबळी ॥ २९ ॥

बड़ी तेजी से बोला । २० तुम तो वन्य पशु हो, तुम्हारे बुद्धि ही कितनी है ? मैं बिलंका का राजा हूँ । क्या तू मुझे नहीं जानता ? २१ दधिमुख ने कहा कि बिलंका को कौन नहीं जानता है ? आप किसलिए आये हैं ? निःशंक होकर कहिए । २२ ऐसा सुनकर राक्षस और भी क्रुद्ध हो गया तथा कहने लगा कि अभी इसी क्षण तेरा विनाश कर डालूंगा । २३ तू नहीं जानता कि मेरा नाम सहस्त्रकण्ठ रावण है । जिसके द्वार पर यमराज दण्ड लेकर पहरा देते हैं । २४ नित्य आकर अग्नि जिसके वस्त्र स्वच्छ करता है तथा जिसके सामने बृहस्पति फलाफल का बखान करता है । २५ पवन आकर चवँर डुलाता है तथा जिसके द्वार पर ब्रह्मा वेदों का पाठ करते हैं । २६ तेंतीस करोड़ देवगण जिसके आज्ञाकारी हैं । जिसकी सेवा लाख-लाख दास नित्य किया करते हैं । २७ जिसके सात पद्म रथी और दस पद्म सेना है । ग्यारह हजार जिसके मदोन्मत्त योद्धा हैं । २८ हाथी, घोड़ा, रथ और रथी इन्हें कौन गिन सकता है ? जो चौदहों भुवनों में एक मात्र बलशाली है । २९ अरे बन्दर, तू उसका उपहास कर रहा है ।

ताहाकु तु परिहास करुछु मांकड़ ।
मुण्ड छिड़ि जिब तोर खाइले चापोड़ ।। ३० ।।
कह जाइ तो राजाकु करु आसि रण ।
तार पांजि पोछिलाणि जाण जम राण ।। ३१ ।।
एमन्त कहि गर्जिला प्रतापी दइत ।
देउळ अहाळी भांगि हेला चूर्णिभूत ।। ३२ ।।
कम्पिला किष्किन्ध्यापुर देखि दधिमुख ।
बोइला पूर्वे लंकार राजा दशमुख ।। ३३ ।।
तु जेमन्ते गरजुछु से गर्जिला आसि ।
आम्भे बोइलु समुद्र मध्ये बाळीपशि ।। ३४ ।।
सन्ध्या करुअछि तुम्भे रह किछि क्षण ।
न मानि बाळी पाखकु गला से रावण ।। ३५ ।।
सन्ध्या करु थिबा बेळे भेटिला से जाइ ।
धरिबा निमन्ते गला ता पाखकु धाइँ ।। ३६ ।।
जाणिताकु काख तळे बाळी देला जाकि ।
शेष कला नित्यकर्म जाहा थिला बाकी ।। ३७ ।।
घरे आसि ओदालुगा पालटिला बेळे ।
काखरु खसि रावण पड़े भूमि तळे ।। ३८ ।।

एक तमाचा खाने से तुम्हारा शिर टूट जाएगा । ३० अपने राजा को जाकर बोल कि वह आकर युद्ध करे । उसकी जन्मपत्री यमराज ने पोंछ डाली है ऐसा तू समझ ले । ३१ ऐसा कहकर प्रतापी दैत्य ने गर्जना की जिससे मन्दिर तथा अट्टालिकाएँ टूट कर चूर-चूर हो गयीं । ३२ किष्किन्धापुर को काँपते देखकर दधिमुख ने कहा कि पूर्व काल में लंका का राजा दशकंठ आकर इसी प्रकार गर्जा था, जैसे तुम गरज रहे हो । हमने उससे कहा कि बालि सागर में उतरकर सन्ध्या कर रहे हैं । आप कुछ काल के लिए प्रतीक्षा करें । परन्तु न मानकर रावण बालि के पास चला गया । ३३-३५ सन्ध्या करने के समय वह उनसे जा मिला । उन्हें पकड़ने के लिए वह उनके पास दौड़ गया । ३६ यह जानकर बालि ने उसे काँख के नीचे दबा लिया तथा अवशेष नित्यकर्म को समाप्त किया । ३७ घर आकर गीले वस्त्र बदलने के समय रावण काँख से निकलकर नीचे पृथ्वी पर जा गिरा । ३८ वह चेतनाशून्य होकर पड़ा था । उसे होश नहीं

अचेतन होइअछि नाहि तार चेता ।
काहिर मुढ़ा एहार दशगोटा मथा ।। ३९ ।।
एहाकु बन्दीरे रखा जाउ दिना केते ।
बुझिबा ना आसि थिला ए थेकि निमन्ते ।। ४० ।।
एमन्त शुणि ताहाकु पकाइलु बान्धि ।
मासक जाए से एथे मला कान्दि कान्दि ।। ४१ ।।
आम्भंकु बहुत करि कहि बाश आम्भे ।
राजाकु जे बुझाइलु कहि नाना भावे ।। ४२ ।।
छामुकु नेलु ताहाकु कले सेहि दया ।
शरण पशि होइला सेदिन निर्भया ।। ४३ ।।
मायावी नामे गोटाए राक्षस अइला ।
तो परि एमन्त आसि बहुत कहिला ।। ४४ ।।
राति अधे होइ थिले बाळी बीरमणि ।
नीदु उठि आसि कोपे मळि चक्षु बेनि ।। ४५ ।।
बिधाए माइले सेहि षण्ढरूप होइ ।
पळाइला तापच्छरे गला से गोड़ाइ ।। ४६ ।।
पाताळे लुचिला जाइ प्रतापी असुर ।
ताहाकु खोजि माइले बाळी नृपबर ।। ४७ ।।
कढ़िला प्रतापी दैत्य बरषक जाए ।
पाताळे माइले ताकु एहि बाळी राये ।। ४८ ।।

था । उसके दसों शिर कहाँ-कहाँ मुड़ गये थे । ३९ इसे कुछ दिन बन्दीगृह में रखा जाये फिर समझा जाएगा कि यह किसलिए आया था । ४० ऐसा सुनकर उसे बाँध लिया गया । एक महीने तक वह यहाँ पर रो-रोकर मरा । ४१ हमसे बहुत प्रकार से कहने पर हम लोगों ने राजा को नाना प्रकार से समझाकर दया करके उसे उनके समक्ष उपस्थित किया । वह उनकी शरण ग्रहण करके निर्भय हुआ । ४२-४३ फिर मायावी नाम का एक राक्षस आया । तुम्हारे समान उसने भी आकर बहुत कुछ कहा । ४४ अर्द्धरात्रि हो चुकी थी । बीर शिरोमणि बालि ने नींद से उठकर दोनों नेत्रों को मलते हुए उसे एक मुक्का मारा । वह साँड़ का रूप धारणकर भागा । बालि उसके पीछे खदेड़ते हुए चला गया । ४५-४६ प्रतापी असुर पाताल में जा छिपा । नृपश्रेष्ठ बालि ने उसे खोजकर मार डाला । ४७ प्रतापी दैत्य एक वर्ष पर्यन्त लड़ा, पर

ताहार भाइ दुन्दुभि नामे एक दैत्य ।
से आसि एमन्त गाळि देलाक बहुत ।। ४९ ।।
न सहि पारि से बाळी कला आसि रण ।
धइला से दानबर कोपरे चरण ।। ५० ।।
बुलाइ बुलाइ ताकु फिंगि देला रागे ।
ऋष्यमूक पर्बतरे पड़ि मला बेगे ।। ५१ ।।
आजि जाए पड़िअछि देख अस्थि जाइँ ।
मेरु गिरि परि तार पंजरा अटइ ।। ५२ ।।
चारि समुद्ररे निति करे तरपण ।
सूर्य्य उदे न हेउथु आसइ फेरिण ।। ५३ ।।
सहस्रगोटा मुण्ड तु बहु गर्ब करु ।
उबुरि कि जिबु आउ बाळीर आगरु ।। ५४ ।।
एमन्त कहिबा बेळे अइलाक बाळी ।
असुर गर्जन शुणि कोपे परज्वळि ।। ५५ ।।
देखिला सहसगोटा शिर अछि बहि ।
लांजकु बढ़ाइ देला किछिहिँ न कहि ।। ५६ ।।
दुइसहस्र हातकु लांजे देला बान्धि ।
चळि न पारिला दैत्य हेला तहिँ बन्दी ।। ५७ ।।

इन्हीं राजा बालि ने उसे पाताल में मार डाला । ४८ उसका भाई दुन्दुभि नाम का एक दैत्य था । उसने भी आकर इसी प्रकार बहुत गालियाँ दीं । ४९ उसे सहन न कर पाने के कारण बालि ने आकर युद्ध किया । उन्होंने कुपित होकर दानव का ैर पकड़कर घुमा-घुमाकर क्रोध से उसे फेंक दिया । वह ऋष्यमूक पर्वत पर गिरकर शीघ्र ही मर गया । ५०-५१ जाकर देख लो, आज तक उसकी हड्डियाँ पड़ी हुई हैं । उसका कंकाल सुमेरु पर्वत के समान है । ५२ वह नित्य चारों समुद्रों में तर्पण करते हैं और सूर्योदय के पहले ही लौट आते हैं । ५३ सहस्र शिर होने के कारण तुम बहुत गर्व कर रहे हो । बालि के आगे से क्या तुम बचकर जा सकोगे ? ५४ ऐसा कहने के ही समय बालि आ गया । असुर की गर्जना सुनकर वह क्रोध से प्रज्वलित हो उठा । ५५ उसे हजार शिरों के वहन करते हुए देखकर बिना कुछ कहे उसने पूँछ बढ़ा दी । ५६ दो हजार भुजाओं को पूँछ से बाँध दिया, जिससे दैत्य चल नहीं पाया और वहीं बन्दी हो गया । ५७ महान पराक्रमी बालि शिर पर चढ़ बैठा । जिस प्रकार

मुण्ड उपरे बसिण बाळि महाबीर।
जेसने बृहत् बृक्ष उपरे बानर ॥ ५८ ॥
हुँकार करि ए डाळु से डाळकु जाइ।
तेसने असुर मुण्डे चढ़ि जाए डेइँ ॥ ५९ ॥
ए मुण्डरु से मुण्डकु कुदामारि जाए।
अचळ होइ रहिछि दैत्य गिरि प्राये ॥ ६० ॥
एमन्त बाळीर पाद भारा हेलागरु।
रुधिर बहिला दैत्य नासिका मुखरु ॥ ६१ ॥
निसत होइबा देखि बाळी महाबीर।
बुलाइला लांजे धरि चक्र परकार ॥ ६२ ॥
फिगि देला पड़िला से सहस्र जोजने।
प्रहरके चेता पाइ बसि मने मने ॥ ६३ ॥
भाळइ बानर मोते कि न कला आज।
जाणिलि मो ठारु बेशी तार बळबीर्ज ॥ ६४ ॥
ता सगे बिबाद कले जश नाहिँ मोर।
एमन्त भाळि घरकु चळिला असुर ॥ ६५ ॥
किछि न कहि रहिला आपणार पुरे।
बृहस्पति जणाइले बासब छामुरे ॥ ६६ ॥
शुणि पुरन्दर बोले धन्यतुरे बाळी।
तिनि भुबनरे नाहिँ तो समान बळी ॥ ६७ ॥

बड़े वृक्ष पर वानर बैठता है। ५८ वह हुंकार करके इस डाल से उस डाल पर जाता है, वैसे ही बालि असुर के शिरों पर उछलने लगा। ५९ इस शिर से उस शिर पर बालि कूदकर चला जाता। दैत्य पर्वत के समान अचल रह गया। ६० इस प्रकार बालि के गुरुतम पद-भार से दैत्य के मुख और नाक से रक्त बहने लगा। ६१ महान पराक्रमी बालि ने उसे अलग देखकर पूँछ से पकड़कर चक्र के समान घुमाते हुए फेंक दिया। वह एक हजार योजन पर जा गिरा। एक प्रहर के पश्चात् चेतना पाने पर वह बैठकर मन ही मन सोचने लगा। ६२-६३ वानर ने आज हमारी क्या दशा नहीं की। मैं समझ गया कि उसका बल-विक्रम मुझसे अधिक है। ६४ उसके साथ कलह करने से मेरा यश नहीं होगा। ऐसा सोचकर असुर घर को चल पड़ा। ६५ कुछ न कहकर वह अपने महल में रह गया। बृहस्पति ने इन्द्र से सारी कथा बता दी। ६६ सुनकर इन्द्र

एमन्ते बहुत ताकु परशंसा कले ।
अच्युत पादुका भजि चक्रधर बोले ॥ ६८ ॥

शूरसेन द्वारा सहस्रशिरार नागपाश बन्धन ओ मोचन

एथु अनन्तरे कथा शुण शाकम्बरी ।
केतेक दिने बिलंका देश दण्डधारी ॥ १ ॥
मने बिचारिला मोते मुनि जे नारद ।
कहि थिले तिनि जण अटन्ति असाध्य ॥ २ ॥
मुनिर कथा अन्यथा नोहिला देखिलि ।
दुइ बीर ठारु अपमान त पाइलि ॥ ३ ॥
आउ एक बीर कथा कहिथिले मोते ।
बुझिबा ना सेहि बीर अटइ केमन्ते ॥ ४ ॥
एमन्त भाळि मंत्रीर हस्ते राज्य देइ ।
जम्बुद्वीपरे मिळिला दैत्यपति जाइँ ॥ ५ ॥
हइहय देशकु से गला तहुँ चळि ।
प्रताप मारतण्ड से दैत्य महाबळी ॥ ६ ॥
राज्यरे पशि बहुत देशग्राम नाशि ।
गोटा गोटा धरि गिळे गोरु जे मइँषि ॥ ७ ॥

ने कहा, हे बालि ! तुम धन्य हो। तीनों लोकों में तुम्हारे समान बलवान नहीं है। ६७ इस प्रकार उन्होंने उसकी बहुत प्रशंसा की। अच्युत भगवान की पादुकाओं का भजन करके चक्रधर यह कह रहा है। ६८

शूरसेन द्वारा सहस्रशिरा का नागपाश-बन्धन तथा मुक्ति

हे पार्वती ! इसके पश्चात् की कथा सुनो। कुछ दिनों में बिलंका राज्य के अधिपति ने मन में विचार किया कि नारद मुनि ने मुझसे कहा था कि महान पराक्रमी अजेय तीन हैं। १-२ मुनि की बात मिथ्या नहीं हुई। दो वीरों से तो मुझे अपमान मिल ही चुका। ३ उन्होंने और एक वीर की बात मुझसे कही थी। देखें वह वीर कैसा है ? ४ इस प्रकार विचार करके मंत्री के हाथों में राज्य सौंपकर दैत्यपति जम्बू द्वीप में जा पहुँचा। ५ वहाँ वह हैहय देश को चला गया। वह महान बलशाली दैत्य प्रताप में सूर्य के समान था। ६ राज्य में घूमकर उसने बहुत से गाँव तथा देश नष्ट कर दिये। गाय-भैंसों को पकड़कर समूचा

जे बण मानब आसि पड़इ ता आगे।
ताहाकु धरि उदरे धरि दिए बेगे ॥ ८ ॥
भये राज्य लोके जाइँ कलेक गुहारि।
भो मणिमा हइहय बंश दण्डधारी ॥ ९ ॥
काहुँ असुर गोटाए पशिला तो पुरे।
सहस्रगोटा बदन शृङ्ग परकारे ॥ १० ॥
मुख ताहार पर्वत गुहाठारु बड़।
दुइ सहस्र जे भुज दुइ गोटा गोड़ ॥ ११ ॥
गोरु मइँषि मानब जे पड़े ता आगे।
ताहाकु धरि उदरे भरि दिए बेगे ॥ १२ ॥
ताहार रूप दिशइ अति भयंकर।
शुणि पार्बती बोइले हे प्रभु शंकर ॥ १३ ॥
कथार सन्धित एथि रहिगला पुणि।
पूर्बे मोते कहि थिले परा शूळपाणि ॥ १४ ॥
बरषके थरे करे दानब आहार।
माहेन्द्र बेळारे दिए बढ़ाइण कर ॥ १५ ॥
जाहा पाए ताहा खाए नाहिँ ता बरण।
आजि केमन्ते खाइला क्षुधा नाहिँ पुण ॥ १६ ॥

निगलने लगा। ७ जो कोई मानव उसके आगे पड़ जाता, उसे पकड़ कर शीघ्र ही पेट में डाल लेता था। ८ भय से त्रस्त पुरवासियों ने जाकर गुहार लगाई, हे हैहय-वंशावतंस राजराजेश्वर! आपके नगर में एक असुर कहीं से आ घुसा है, जिसके शिखर के समान हजार मुख हैं। ९-१० उसके मुख पर्वत की कन्दराओं से भी बड़े हैं। दो हजार भुजाएँ तथा दो पैर हैं। ११ गाय, भैंस, मनुष्य जो भी उसके आगे आ जाता है, उसे वेग से उदरस्थ कर लेता है। १२ उसका रूप अत्यन्त डरावना दिखाई पड़ता है। यह सुनकर पार्बती जी बोलीं, हे भगवान शंकर! कथा की गुत्थी तो रह ही गयी। हे शूलपाणि! आपने तो मुझसे पहले कहा था। १३-१४ वह दानव वर्ष में एक बार ही भोजन करता था। माहेन्द्र योग के समय वह हाथ प्रसारित करता था और जो भी उसे मिलता, उसे बिना रोक-टोक के खा जाता था। फिर आज भूख न लगने पर भी वह कैसे खाने लगा? १५-१६ इस

एमन्त शुणि शंकर बोइले गो सखी ।
भल पचारिलु पच्छ कथा मने रखि ।। १७ ।।
आम्भे त भोळा महेश कहि जाउ भोळे ।
दानब पाळि पड़िला जाण सेंहि काळे ।। १८ ।।
पुरे थिला बेळे सिना जाणन्ति सेबके ।
स्नान मार्जणा होइण चळइ से भोके ।। १९ ।।
ताहार पाळि जाणिण बिलंकार प्राणी ।
पळान्ति आगे न रहि बेळकाळ जाणि ।। २० ।।
एठारे ताहाकु किए कहि बाकु नाहिं ।
पेट पोड़ि जिबारु से जाहा जाहिँपाइ ।। २१ ।।
ताहाकु गिळि दिअइ करकु बढ़ाइ ।
उदर पुरिबा जाए किछि न मानइ ।। २२ ।।
दुइ प्रहर पर्जन्ते खाइला असुर ।
तृपति होइला जहुँ पुरिला उदर ।। २३ ।।
एथु अनन्तरे कथा शुण देइ मन ।
आस्थानरे बसिथिला राजा शूरसेन ।। २४ ।।
बिष्णुर परम भक्त अटइ से राजा ।
गुहारि कलेक जहुँ आसिण परजा ।। २५ ।।

प्रकार सुनकर शंकर जी ने कहा, हे सहचरी ! पीछे की बात ध्यान रखकर तुमने अच्छा प्रश्न किया । १७ हम तो भोले शंकर हैं, मस्ती में कहते चले जाते हैं। उस समय दानव का वही योग आ गया था । १८ नगर में रहने पर तो सेवक उसे बता दिया करते थे । स्नान-मार्जन करके वह भूख में चलता था । १९ बिलंका-निवासी उसकी पाली के समय को समझ-बूझकर भाग जाते थे। कोई आगे नहीं पड़ता था । २० यहाँ पर तो उसे बताने को कोई नहीं था । पेट जलने से उसे जो भी जहाँ मिलता था, उसे हाथ बढ़ाकर निगल लेता था । पेट भरने तक कुछ भी नहीं मानता था । २१-२२ असुर ने दो प्रहर पर्यन्त भोजन किया । जब पेट भर गया तो वह तृप्त हो गया । २३ इसके बाद की कथा मन लगाकर सुनो । राजा शूरसेन सिंहासन पर विराजमान था । २४ वह राजा विष्णु का परम भक्त है। वहीं प्रजा ने आकर गुहार की । २५ राजा ने हाथ जोड़कर श्रीनारायण की स्तुति की ।

श्री हरिकिं कर जोड़ि कला राजा स्तुति ।
आहे प्रभु जगन्नाथ कमळार पति ।। २६ ।।
दुरित नाशन दीनबन्धु तोर नाम ।
भक्त बेदना न सहि पुरुष उत्तम ।। २७ ।।
भावग्राही नाथ तुहि अनाथर बन्धु ।
दुःखी दुःख निबारण कृपामय सिन्धु ।। २८ ।।
बिपद सागरु मोते करिबा उद्धार ।
मुहिँ दीन जन तोर पाद परिचार ।। २९ ।।
काहिँ आसि दानबेक होइला बइरी ।
बारेक उद्धार कर प्रभु दइतारि ।। ३० ।।
एमन्ते अनेक स्तुति करि नृपमणि ।
करे धनु शर घेनि उठिला तक्षणि ।। ३१ ।।
देखिला दानब दिशे पर्बत आकार ।
बिन्धिला बहुत शर न करि बिचार ।। ३२ ।।
गिळइ दानबराज बदन बिस्तारि ।
राहु ग्रह तपनकु ग्रास कला परि ।। ३३ ।।
शूरसेन शर जाक सूर्य्य तेज जिणि ।
समस्त भक्षिला दैत्य देखि नृपमणि ।। ३४ ।।

हे प्रभु जगत के नाथ ! आप लक्ष्मी के पति हैं । २६ हे दीनबन्धु ! तुम्हारा नाम दुःखनाशक है । हे पुरुषोत्तम ! तुम भक्त की वेदना को सहन नहीं कर पाते हो । २७ हे अनाथ के बन्धु ! तुम भाव को ग्रहण करनेवाले हो । हे कृपासागर ! तुम दुखी का दुःख हरनेवाले हो । २८ विपद-सिन्धु से आप मेरा उद्धार करें । मैं दीन जन आपके चरणों का दास हूँ । २९ एक दानव कहाँ से आकर शत्रु बन गया । हे दैत्यारि ! एक बार उद्धार कर दो । ३० नृपशिरोमणि ने इस प्रकार अनेक प्रकार से स्तुति की । फिर उसी समय धनुष-बाण लेकर उठ खड़ा हुआ । ३१ उसने पर्वत के आकार वाले दानव को देखा । उसने बिना विचारे ही बहुत से बाण छोड़े । ३२ जैसे राहु सूर्य को ग्रास कर लेता है उसी प्रकार वह दानवराज मुँह फैलाकर बाण निगल रहा था । ३३ सूर्य के तेज को जीतनेवाले शूरसेन के समस्त बाणों को दैत्य ने भक्षण कर लिया । यह देखकर नृपशिरोमणि शूरसेन ने गदा, मुग्दर, कुन्त, तलवार, भाले, शक्ति, परिघ, शूल, पट्टिश, मूसल आदि

गदा मुद्गर कुन्त असिपत्र भाल ।
शकति परिघ शूळ पट्टिश मूषळ ।। ३५ ।।
माइला जेतेक पड़ि अंगे हेला चूरि ।
ब्रह्मशर नीळबाण भुजबाण मारि ।। ३६ ।।
पाशुपत अग्निबाण नारायण शर ।
माइलाक शूरसेन करिण हुंकार ।। ३७ ।।
प्रतापी असुर देहे तिळे न भेदिला ।
देखि नृपतिर मने भय जात हेला ।। ३८ ।।
हृद पद्म सुमरिला गोविन्द गोपाळ ।
अनन्त अच्युत हरि प्रभु आदि मूळ ।। ३९ ।।
ए घोर संकटु मोते त्राहि कर आसि ।
भकतर बेदना न सहि ब्रह्मराशि ।। ४० ।।
बोइले भो शूरसेन अबध्य दइत ।
अकाट अतुट सेहि लक्षशिरा सुत ।। ४१ ।।
एहि नागपाश अस्त्र देउ अछि घेन ।
एथिरे से दानबकु कर तु बन्धन ।। ४२ ।।
एमन्त कहि अस्त्रकु देलेक बढ़ाइ ।
सानन्द होइ अस्त्रकु गुणरे बसाइ ।। ४३ ।।
श्रीहरि सुमरि छाड़ि देला बीरमणि ।
महानागे अइले जे शुन्ये टेकि फणि ।। ४४ ।।

जितने भी मारे, वह असुर के शरीर में लगकर चूर्ण हो गये। ब्रह्मबाण, नील और भुजबाण छोड़कर फिर शूरसेन ने हुंकार करके पाशुपत, अग्नि तथा नारायण-बाण छोड़े। ३४-३७ प्रतापी दैत्य का शरीर नहीं भिदा। यह देखकर राजा के मन में भय उत्पन्न हो गया। ३८ हृदयकमल में उसने गोविन्द, गोपाल, अनन्त, अच्युत आदि मूलहरि का स्मरण किया। ३९ हे प्रभु! आकर इस संकट से मुझे उबार लो। भक्त की वेदना को न सहकर ब्रह्मदेव बोले, हे शूरसेन! यह दैत्य अवध्य है। टूट नहीं सकता, कट नहीं सकता। यह लक्षकण्ठ का पुत्र है। ४०-४१ यह नागपाश दे रहा हूँ। इसे ग्रहण करो तथा इसी से दैत्य को बाँध लो। ४२ ऐसा कहकर अस्त्र बढ़ा दिया। प्रसन्न होकर बीरमणि ने श्री भगवान का स्मरण करके प्रत्यंचा पर सन्धान कर अस्त्र को छोड़ दिया। आकाश में फन उठाये

फुफुकार करि बिष दन्तरे पुराइ ।
बान्धि पकाइले ताकु लांजरे गुड़ाइ ।। ४५ ।।
बिषदन्त प्रहारिले ब्रह्मरन्ध्रे तार ।
चोटिला गरळ ज्वाळा तुटिला शरीर ।। ४६ ।।
पड़िलाक गोह जाइ भुमिर उपरे ।
ताहार पाखकु केहि न गलेक डरे ।। ४७ ।।
पर्बत आकारे दैत्य पड़िअछि तहिँ ।
धड़िकरे बिषजाक जीर्ण करि देइ ।। ४८ ।।
उठिबाकु इच्छा करे प्रतापी दइत ।
निगूढ़े बान्धि अछन्ति सर्पे रज्जुबत ।। ४९ ।।
चळि न पारइ देह जळइ पोड़इ ।
शरण शरण बोलि मुखे पुकारइ ।। ५० ।।
हे बीर मुँतोर पादे पशिलि शरण ।
जाणिलि तु पृथिबीरे अटु बड़ जण ।। ५१ ।।
बारेक रक्षा कर तु मोहर जीबन ।
एमन्त शुणि दैत्यर कातर बचन ।। ५२ ।।
दयाळु राजा गरुड़ शर देला पेशि ।
नागे डरि पळाइले दैत्य उठि बसि ।। ५३ ।।

बहुत से नाग आ गये । ४३-४४ उन्होंने फुफकारते हुए बिषाक्त दाँतों को गड़ाकर अपनी पूंछ में लपेटकर उसे बाँध डाला । ४५ उसके ब्रह्मरन्ध्र पर विषाक्त दाँतों का प्रहार किया । विष-ज्वाला फैलने से उसका शरीर टूटने लगा । ४६ वह मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा । भय से कोई भी उसके समीप नहीं गया । ४७ वहाँ दैत्य पहाड़ के आकार में पड़ा था । एक घड़ी में उस प्रतापी असुर ने विष को हजम करके उठने की इच्छा की । सर्प उसे दृढ़ बन्धन से बाँधे थे । ४८-४९ वह चल नहीं पा रहा था । उसका शरीर जल-भुन रहा था । वह मुख से शरण-शरण पुकार रहा था । ५० हे वीर ! हम तुम्हारे चरणों की शरण में आ गये । मैं समझ गया कि पृथ्वी में तुम बहुत बड़े व्यक्ति हो । ५१ एक बार तुम मेरे जीवन की रक्षा करो । दैत्य के इस प्रकार के आर्त वचनों को सुनकर दयावान राजा ने गरुड़ बाण छोड़ दिया । डरकर सर्प भाग गये और दैत्य उठकर बैठ गया । ५२-५३ वह बोला कि तुम हमारे मित्र बन गये । राजा ने

बोइले मोहर तुहि होइलु मइत्र ।
नृपति ताहाकु कहि आश्वासि बहुत ॥ ५४ ॥
गउरब कला तहुँ दानब जे गला ।
बिलंका भुबने जाइँ निश्चिन्ते रहिला ॥ ५५ ॥
एकथा जाक काहारि आगरे न कहि ।
सुखे राज्यकु पाळिला भोग कला मही ॥ ५६ ॥
शुणिलु त आद्य प्रान्त करि सबु कथा ।
एमन्त बीर अटइ जे सहस्र मथा ॥ ५७ ॥
बिलंका रामायणर ए उत्तर काण्ड ।
शुणि शुणाइला लोक जिणि जमदण्ड ॥ ५८ ॥
बइकुण्ठे जाइ बिष्णु आश्रारे रहइ ।
चक्रधर श्री अच्युत पयर भजइ ॥ ५९ ॥

लक्षशिरार बर लाभ ओ बिलंका ध्वंस शुणि कोप एवं पुनरपि बिलंका निर्माण

बोइले पार्बती देबी आहे भोलानाथ ।
लक्षशिरा हृदे हेला बइराग जात ॥ १ ॥
पितृ बइरी नाशिबा पाइँ राज्य छाड़ि ।
तप आरम्भिला बसि जोगासन माड़ि ॥ २ ॥

उसे बहुत सा आश्वासन देकर उसका सम्मान किया। तब दानव निश्चिन्त भाव से बिलंका नगर में जाकर रह गया। ५४-५५ यह बात उसने किसी से न कहकर सुखपूर्वक राज्य का पालन किया तथा पृथ्वी का उपभोग किया। ५६ तुमने आदि से अन्त तक की सारी कथा सुन ली है। सहस्रकण्ठ इस प्रकार का वीर था। ५७ बिलंका रामायण के इस उत्तरकाण्ड को लोग सुनकर अथवा सुनाकर, यमदण्ड को जीतकर, बैकुण्ठ में जाकर नारायण के आश्रय में वास करते हैं। चक्रधर श्री अच्युत नारायण का भजन करता है। ५८-५९

लक्षशिरा की वर-प्राप्ति तथा बिलंका-ध्वंस सुनकर कुपित होना और बिलंका का पुनर्निर्माण

पार्बती जी बोलीं, हे भोलानाथ! लक्षशिरा के हृदय में वैराग्य उत्पन्न हो गया। १ पिता के शत्रु का विनाश करने के लिए राज्य का

अनादि ब्रह्म पाइबा आशारे असुर ।
पाइला कि न पाइला कह हे शंकर ॥ ३ ॥
एमन्त शुणि बोइले देब शूळपाणि ।
मन देइ शुण लक्षशिरार काहाणी ॥ ४ ॥
देबंक छळे श्रीराम घेनि हनुमान ।
पोड़ि नारखार कले बिलंका भुबन ॥ ५ ॥
असुर असुरी तहिँ न रखिले एक ।
केबळ रहिला एका बिलंका नायक ॥ ६ ॥
न मारि पारिले ताकु रघुकुळमणि ।
देबंक सभा मध्यरे बृहस्पति भणि ॥ ७ ॥
रामंक हस्ते दानब न मरिबे केबे ।
उपाय कर एथकु मिळि सर्ब देबे ॥ ८ ॥
जेबे न आसिले एथे सीता ठाकुराणी ।
अमर होइ दानब स्वर्ग नेब पुणि ॥ ९ ॥
एमन्त शुणि बासब बोइले भो गुरु ।
सीता कि बीर अटन्ति श्री रामंक ठारु ॥ १० ॥
एथिरे बड़ सन्देह उपुजिला मोर ।
शुणि गुरु बोइले हो शुण सुनासीर ॥ ११ ॥

त्याग करके अनादि ब्रह्म को प्राप्त करने की आशा से दैत्य योगासन लगाकर तपस्या प्रारम्भ करके बैठ गया । हे शंकर जी ! वह उन्हें पा सका अथवा नहीं ? २-३ ऐसा सुनकर शूलधारी बोले कि मन लगाकर लक्षकण्ठ की कथा श्रवण करो । ४ देवताओं के बहाने से श्रीराम ने हनुमान को लेकर बिलंका नगर को जलाकर तहस-नहस कर डाला । ५ एक भी राक्षस तथा राक्षसी को नहीं छोड़ा । केवल एक मात्र बिलंकेश बचा था । ६ रघुकुल में श्रेष्ठ राम उसे नहीं मार पाये । देवताओं की सभा में श्रेष्ठ बृहस्पति ने कहा कि श्रीराम के हाथों से दानव कभी भी नहीं मरेगा । सभी देवता मिलकर उपाय करें । ७-८ जब तक राजरानी सीता यहाँ पर नहीं आयेंगी तब तक दानव अमर होकर स्वर्ग को ले लेगा । ९ ऐसा सुनकर इन्द्र बोले, हे गुरुदेव ! क्या सीता जी श्रीराम से अधिक शक्तिमती हैं ? १० इससे मुझे बड़ा संदेह हो रहा है । यह सुनकर गुरुजी ने कहा कि हे इन्द्र ! यह रावण रम्भ के वंश में उत्पन्न हुआ है । इसी से राम के हाथ से इसकी मृत्यु नहीं

रम्भ दानबर बंशे जात ए रावण ।
तेणु राम हस्ते नाहिँ एहार मरण ॥ १२ ॥
अग्नि देबता रम्भकु देइछन्ति बर ।
रम्भ बंशे जनमिबे जेतेक असुर ॥ १३ ॥
पुरुष हस्तरु मृत्यु न होइब केभे ।
तेणु जुगे जुगे आदिमाता जनामिबे ॥ १४ ॥
सेहि आदिमाता जाण सीता रूपे जात ।
सीता अइले मरिब प्रतापी दइत ॥ १५ ॥
सीतादेबी दुर्गा ठारु पंचशर पाइ ।
बिन्धिला मात्रे दानब अंग तूला होइ ॥ १६ ॥
बज्र अंग तुटिजिब कोमलांग हेब ।
रामंक बाणे मरिब प्रतापी दानब ॥ १७ ॥
श्रीराम सीतांक आगे करिछन्ति पण ।
एकाके जाइँ मारिबि बिलका रावण ॥ १८ ॥
लुहामइ बुलाइबि बिलका नबरे ।
जणे केहि न रहिबे ताहार बशरे ॥ १९ ॥
असुर असुरी एक न रखिबि तहिँ ।
एमन्त प्रतिज्ञा करि आसिछन्ति कहि ॥ २० ॥

है । ११-१२ अग्निदेव ने रम्भ को वर दे रखा है कि रम्भ के वंश में जितने भी असुर जन्म लेंगे, वह कभी पुरुष के हाथों नहीं मरेंगे । इसी कारण से आदिमाता युग-युग में अवतार ग्रहण करेंगी । १३-१४ वही आदिमाता सीता के रूप म उत्पन्न हुई हैं, ऐसा समझो । सीता के आने से ही प्रतापी दैत्य मरेगा । १५ सीता द्वारा दुर्गादेवी से पाँच बाण प्राप्त कर लेने पर उन्हें छोड़न मात्र से ही दैत्य का शरीर रुई-सा कोमल हो जाएगा । १६ उसका वज्रांग समाप्त होकर कोमलांग हो जाएगा, फिर प्रतापी दानव राम के हाथों से मर जाएगा । १७ श्रीराम ने सीता के समक्ष बिलंका रावण को अकेले ही जाकर मारने की प्रतिज्ञा की है । १८ उन्होंने यह भी कहा है कि बिलंका नगरी में लोहे की सिरावन चला दूंगा । उसके वंश में एक भी व्यक्ति नहीं बच पाएगा । १९ मैं एक भी असुर-असुरी को वहाँ नहीं छोड़ूंगा । इस प्रकार की प्रतिज्ञा करके वह वहाँ गये है । २० इसलिए राम सीता को लाने के लिए

तेणु राम न कहिबे सीता आणिबाकु ।
प्रतिज्ञा तन रहिब आणिले ताहांकु ॥ २१ ॥
प्रतिज्ञाबन्तर जेबे प्रतिज्ञा न रहे ।
मरण ठारु अधिक ताकु कष्ट हुए ॥ २२ ॥
श्रीराम प्रतिज्ञाबन्त पुरुष अटन्ति ।
परिहास करिबे त तांकु महासती ॥ २३ ॥
एणु अबध्य होइला जाण ए असुर ।
उपाए सतीकि आण ए बिलंका पुर ॥ २४ ॥
एमन्त शुणि बासब ताटका होइले ।
बृहस्पतिंक बदन अनाइ रहिले ॥ २५ ॥
घड़िक परे कहिले कह कि करिबा ।
कि उपाये जानकींकु एठाकु आणिबा ॥ २६ ॥
बृहस्पति बोइले हो न हुअ कातर ।
सरस्वतींकु पेशिबा रामंक छामुर ॥ २७ ॥
श्रीराम कण्ठरे बसि भुलाइबे तांकु ।
जेबे से कहिबे सीता सती आणिबाकु ॥ २८ ॥
एमन्त शुणि बासब ब्रह्मांकु कहिण ।
सरस्वतींकि पेशिले राम सन्निधान ॥ २९ ॥
रामंक कण्ठरे बिजे कले सरस्वती ।
सीता आणिबाकु राम कले सनमति ॥ ३० ॥

नहीं कहेंगे, क्योंकि उनको लाने से उनकी प्रतिज्ञा कैसे रहेगी ? २१ प्रतिज्ञा करनेवाले की यदि प्रतिज्ञा नहीं रहती तो उसे मरण से भी अधिक कष्ट होता है । २२ श्रीराम प्रतिज्ञावान पुरुष हैं । महासती सीता उनका उपहास भी करेंगी । इसलिए इस असुर को अवध्य हुआ ही समझो । उपाय करके सती सीता को बिलंकापुर में ले आओ । २३-२४ ऐसा सुनकर इन्द्र अवाक् रह गया । वह बृहस्पति के मुख की ओर ताकते रह गये । २५ एक घड़ी के पश्चात् बोले कि कहो क्या किया जाय ? कौन से उपाय से जानकी को यहाँ लाया जाय ? २६ बृहस्पति ने कहा कि अधीर न हो । राम के समीप सरस्वती को भेज देंगे । २७ श्रीराम के कण्ठ में बैठकर वह उन्हें विस्मृत कर देगी, जिससे वह सती सीता को लाने के लिए कह देंगे । २८ ऐसा सुनकर इन्द्र ने ब्रह्मा से कहकर सरस्वती को श्रीराम के समीप भिजवा दिया । २९ सरस्वती श्रीराम

हनुमान जाइँ सीता सतींकु आणिला ।
सीता रामंकर तहिँ कथा बार्त्ता हेला ॥ ३१ ॥
महासती स्वामींकु जे न कहिले कटु ।
ताहांक मन हरिले कहि कथा चाटु ॥ ३२ ॥
श्री दुर्गा देबींकि कर जोड़ि कले स्तुति ।
पांच गोटि शर देले पाइ सीता सती ॥ ३३ ॥
गर्भरे भरि समरे होइले प्रबेश ।
गर्भरु काढ़ि बिन्धिले मला से राक्षस ॥ ३४ ॥
राम तार मुण्ड जाक काटि पकाइले ।
बिलंका नगरे लुहामइ बुलाइले ॥ ३५ ॥
केबळ एका बचिला शतशिरा पुअ ।
पुर पोड़ि जिबा देखि पाइ महाभय ॥ ३६ ॥
पाताळपुरे लुचिला मामुँ घरे जाइँ ।
कांचन द्वीपरे लक्षशिरा जे अछइ ॥ ३७ ॥
शुक्र ठारु महामंत्र पाइ साधे जाग ।
सहस्र बरष करि अति कष्ट भोग ॥ ३८ ॥
अनाहत जोग साधि साधि हेला जोगी ।
अनादि ब्रह्म भेटिबा पाइँ अछि लागि ॥ ३९ ॥

के कण्ठ में बैठ गयी । राम ने सीता को लाने के लिए अपनी सहमति दे दी । ३० हनुमान जाकर सीता को ले आये । वहाँ पर श्रीराम और सीता के बीच परामर्श हुआ । ३१ महासती ने अपने पति से कटु वचन नहीं कहे अपितु लुभावनी बातों से उनका मन हर लिया । ३२ उन्होंने हाथ जोड़कर दुर्गादेवी की स्तुति की, फिर सती सीता ने उनसे पाँच बाण प्राप्त करके उन्हें गर्भ में डाल लिया तथा वह समरभूमि में प्रविष्ट हुईं । गर्भ से निकालकर बाण मारने से वह राक्षस मर गया । ३३-३४ राम ने उसके सारे शिर काट गिराये तथा बिलंकानगर में लोहे की सिरावन घुमा दी । ३५ केवल एक मात्र शतशिरा का पुत्र बच गया । नगर को जला हुआ देखकर अत्यन्त भय के कारण वह पातालपुर जाकर मामा के घर में छिप गया । लक्षशिरा तो कांचन द्वीप में था । ३६-३७ शुक्राचार्य से महामंत्र प्राप्तकर वह योग-साधना कर रहा था । एक हजार वर्ष उसने अत्यन्त कष्ट सहन किये । ३८ अनहद योग साधकर वह योगी हो गया । वह अनादि ब्रह्म की प्राप्ति में लगा था । ३९ मिलने पर वह प्रश्न करेगा कि उसके

भेटिले से पचारिब पिता शत्रु किए।
जाणिले ताकु मारिब जाइँ दैत्यराये ॥ ४० ॥
एहि रागद्वेषकु से न पारिला जिणि।
अहंकारे तार मन मज्जिअछि पुणि ॥ ४१ ॥
काहुँ अनाहत जोग पारिब से साधि।
मंत्र बळे दानबर तप हेला सिद्धि ॥ ४२ ॥
शून्य बाणी हेला दैत्य किम्पा करु तप।
असुर बोइले माइला कह के मो बाप ॥ ४३ ॥
शून्य पुरुष बोइले माइले कंकाळी।
केमन्ते माइले बोलि पुच्छे महाबळी ॥ ४४ ॥
शून्य पुरुष बोइले बिन्ध्य परबते।
खड़ग धरि छेदिले ता शिर किंचिते ॥ ४५ ॥
असुर बोले काहिँकि माइला ता कह।
शून्य पुरुष बोलइ महासेन राय ॥ ४६ ॥
तो बापकु देखि दुरु डरे पळाइला।
खाइबा पाइँ तो बाप ताकु गोड़ाइला ॥ ४७ ॥
पळाइ न पारि राजा अत्यन्त कातरे।
पशिलाक कउशिकी देबींक मंदिरे ॥ ४८ ॥

पिता का शत्रु कौन है ? जान लेने पर दैत्यराज उसे जाकर मार डालेगा। ४० इसी राग-द्वेष को वह नहीं जीत पाया। उसका मन अहंकार में डूब गया था। ४१ फिर अनहद योग वह कहाँ से साध पाएगा ? मंत्र के बल से दानव की तपस्या सिद्ध हो गयी। ४२ आकाशवाणी हुई कि दैत्य ! किस कारण से तपस्या कर रहे हो ? असुर ने कहा कि बताओ मेरे पिता को किसने मारा है ? ४३ शून्यपुरुष बोला, उसे कंकाली ने मारा है। तब महाबली लक्षशिरा ने पूछा कि कैसे मारा है ? ४४ शून्यपुरुष ने कहा कि विन्ध्य पर्वत पर तलवार लेकर उसका शिर काट डाला था। ४५ फिर असुर ने कहा कि अब बताओ कि उसे क्यों मारा था ? शून्यपुरुष ने कहा कि राजा महासेन तुम्हारे पिता को देखकर डर भागा। खाने के लिए तेरे बाप ने उसका पीछा किया। ४६-४७ न भाग सकने के कारण अत्यन्त आर्त होकर राजा कौशिकीदेवी के मन्दिर में घुस गया। ४८ वह वहाँ देवी के चरणों

शरण पशिला तहिँ देबींक चरणे ।
कंकाळी रूपरे देबी मिळिले तक्षणे ॥ ४९ ॥
खड्गरे काटिदेले तो बापर शिर ।
एमन्त शुणि बोइला प्रतापी असुर ॥ ५० ॥
काहिँ अछइ केमन्ते पाइबि मुँ ताकु ।
शून्य पुरुष बोइले फेरिजा घुरकु ॥ ५१ ॥
पुरे अबश्य भेटिबु तो पितृ बइरि ।
एमन्त शुणि असुर तप तेजि करि ॥ ५२ ॥
आसिबा पाइँ पुरकु करइ बिचार ।
शतशिरा पुत्र बिशशिरा जे असुर ॥ ५३ ॥
लक्षशिरा भारिजार पाशरे मिळिला ।
कान्दिकरि ता आगरे सबु जणाइला ॥ ५४ ॥
शुणि से कान्दि कहिला ता पितार आगे ।
पाताळकेतु झिअकु बोइला तु बेगे ॥ ५५ ॥
कांचन द्वीपकु जाअ आलो खुरणसी ।
से स्थानरे लक्षशिरा तपकरे बसि ॥ ५६ ॥
ताहाकु कहिले सेहि रामकु मारिब ।
दानब कुळक घोर कष्टु उद्धारिब ॥ ५७ ॥

की शरण में जा पहुँचा । तभी देवी कंकाली के रूप में प्रकट हो गयी । ४९ उसने तलवार से तेरे पिता का शिर काट दिया । ऐसा सुनकर प्रतापी दैत्य बोला— ५० वह कहाँ है और हमें कैसे मिलेगी ? शून्यपुरुष ने कहा कि तुम घर लौट जाओ । ५१ निश्चित ही अपने घर पर ही तुम्हारे पिता के शत्रु की तुमसे भेंट हो जायेगी । ऐसा सुनकर असुर तपस्या का त्याग करके नगर को लौटने का विचार करने लगा । तभी शतशिरा का पुत्र विशशिरा दैत्य लक्षशिरा की पत्नी के पास जा पहुँचा । उसने रो-रोकर उससे सब कुछ बता दिया । ५२-५४ यह सुनकर उसने अपने पिता के समक्ष क्रन्दन करते हुए सब कह सुनाया । पातालकेतु ने अपनी पुत्री से कहा कि खुरणसी ! तू शीघ्र ही कांचन द्वीप में उस स्थान पर चली जा जहाँ लक्षशिरा बैठकर तप कर रहा है । ५५-५६ उससे कहने से वह ही राम को मारेगा तथा दानव-वंश को घोर कष्ट से उबार लेगा । ५७ खुरणसी पिता के मुख से ऐसे वचनों को सुनकर

पितार मुखु एमन्त शुणि खुरणसी ।
बिबर देइ पाताळु मर्त्यपुरे आसि ।। ५८ ।।
संगते अछि ताहार दैत्य बिंशशिरा ।
कांचन द्वीपकु तहुँ गला होइ त्वरा ।। ५९ ।।
लक्षशिरा जोग भांगि आसिबा समये ।
खुरणसी प्रणिपात कला स्वामी पाए ।। ६० ।।
बिंशशिराहिँ पड़िला पयरे ताहार ।
चाळिश आखिरु लुह गड़े निरंतर ।। ६१ ।।
खुरणसी पुत्र शोके कांदि कहे उच्चे ।
आहारे दइब कहि निःश्वासकु मुञ्चे ।। ६२ ।।
शिरे कर ताड़ि बोले कि कलुरे बिहि ।
अपुत्रिक हेलि सिना एते काळे मुहिँ ।। ६३ ।।
आहारे सहस्रशिरा बीर शिरोमणि ।
जाहार पादे खटइ आसि बज्रपाणि ।। ६४ ।।
जमदेबता जाहार काचइ बसन ।
जाहार आज्ञाकु भांगि न पारे पबन ।। ६५ ।।
तेड़े बड़ बीर गोटा मला राम हाते ।
ए कथा गोटि कहिबि मु काहा अग्रते ।। ६६ ।।
बिलंकापुर बानर हस्ते गला नाश ।
आरे बाबु त्रिशिरा तु धार्मिक पुरुष ।। ६७ ।।

पातालबिबर से होकर मृत्युलोक में आ गयी । ५८ बिंशशिरा दैत्य उसके साथ ही था । वह शीघ्र ही कांचन द्वीप जा पहुँची । ५९ योग त्यागकर लक्षशिरा के आने के समय ही खुरणसी ने पति के चरणों में प्रणाम किया । ६० बिंशशिरा भी उसके चरणों पर गिर पड़ा । उसके चालीस नेत्रों से अविरल अश्रु झर रहे थे । ६१ पुत्र-शोक में क्रन्दन करती हुई खुरणसी उच्च स्वर में अरे भाग्य ! कहती हुई निःश्वास छोड़ने लगी । ६२ हाथों से शिर धुनते हुए वह बोली— अरे विधाता ! तूने क्या किया ? इस समय मैं निपूती हो गयी । ६३ हाय रे वीरश्रेष्ठ पराक्रमी सहस्रकंठ, जिसके चरणों की सेवा इन्द्र आकर किया करता था । यमदेव जिसके वस्त्र स्वच्छ करता था । पवन जिसकी आज्ञा को टाल नहीं सकता था । ६४-६५ इतना महान वीर राम के हाथों से मारा गया, यह बात मैं किसके आगे कहूँ ? ६६ वानर के हाथों से बिलंकापुर नष्ट हो गया ।

बड़ भाइ ठारु बाबु बुद्धिमन्त अति ।
बळबन्त बोलि तोते समस्ते बोलन्ति ।। ६८ ।।
काहिँ गला बाबु तोर बळबुद्धि जाक ।
जिणि न पारिलु बाबु बानर गोटाक ।। ६९ ।।
आरे बाबु शतशिरा कुळर नन्दन ।
महाक्षत्री बोलाउ तु बिलंका भुबन ।। ७० ।।
समस्ते मलरे केहि मारि न पारिल ।
आपे गल समस्तंकु संगतरे नेल ।। ७१ ।।
मोते काहिँ पाइँ संगे न नेलरे बाबु ।
अपुन्नित होइ केन्हे मुख देखाइबु ।। ७२ ।।
एका बेलकरे बाबु थिला मृत्यु जोग ।
ब्याघ्र दलकु केमन्त गिळि देला मृग ।। ७३ ।।
सिंह हाड़कु शृगाळ देला आसि गिळि ।
बानर गोटा बिलंकापुर देला जाळि ।। ७४ ।।
राक्षस दल मारइ बानरेक आसि ।
डरे ता पाखकु बीर न जान्ति भरसि ।। ७५ ।।
मानब ता संगे एका अछइ आबर ।
कहिबा ए असम्भव कथा का आगर ।। ७६ ।।

अरे वत्स त्रिशिरा ! तू तो धार्मिक और अपने बड़े भाई से अधिक बुद्धिमान व्यक्ति था । सभी तुझे महान बलशाली कहते थे । ६७-६८ हे बेटा ! तेरा बल व बुद्धि सब कहाँ चली गयी ? हे बेटा ! तुम एक बन्दर को नहीं जीत पाये । ६९ हे कुलनन्दन बेटा शतशिरा ! बिलंका देश में तुम महान योद्धा कहे जाते थे । ७० अरे ! सभी मर गये । उसे मार नहीं पाये । स्वयं चले गये और साथ में सबको ले गये । ७१ अरे बेटा ! मुझे साथ में क्यों नहीं ले गये ? निपूती होकर मैं किसे मुख दिखाऊँगी ? ७२ अरे बेटा ! एकबारगी ही सबका मृत्युयोग था । व्याघ्र के झुंड को मृग कैसे निगल गया ? ७३ सिंह की अस्थि को शृगाल आकर कैसे निगल गया ? एक वानर ने बिलंकापुर को जला दिया । ७४ एक वानर आकर राक्षस-दल को मारे और कोई भी वीर डर से उसके पास तक न जाये । ७५ और उसके साथ एक मानव भी है । यह असम्भव बात किसके समक्ष कहूँगी ? ७६ बिलंका देश में लोहे की सिरावन चल गयी, जिसकी भूमि की शोभा ने अलकापुरी के सौन्दर्य

बिलंका देशरे पुणि बुले लुहामइ ।
अळकापुरकु जिणि शोभा जेउँ भुइँ ।। ७७ ।।
मशा नाके पशि गला प्राय गजपल ।
मनुष्य हातरे मले बिलंकार मल्ल ।। ७८ ।।
गाते पशि सापकु जे माइला मंडुकी ।
मार्ज्जार पल माइला इन्दुर कि डाकि ।। ७९ ।।
मांकड़ हातरे पुणि मरन्ति असुरे ।
देखि फूटि न गला ए आखि कि प्रकारे ।। ८० ।।
सहिला केमन्ते फाटि न गला ए छाति ।
आश्चर्ज होइ पुच्छइ बिलंका नृपति ।। ८१ ।।
किरे बाबु बिशशिरा कान्दुछु किम्पाइँ ।
आबर कान्दुछि किम्पा पाट महादेई ।। ८२ ।।
एमन्त शुणि असुर शतशिरा बत्सि ।
पिन्दा कानिरे आखिरु लुह देइ पोछि ।। ८३ ।।
सक सक होइ कान्दि कहे खन खने ।
लुहामइ बुलिलाणि बिलंका भुबने ।। ८४ ।।
आहे बृद्ध पितामह सम्पद सरिला ।
पिता मले पुर जाक सबु पोड़ि गला ।। ८५ ।।
तुम्भर जे दुइ पुत्र पड़िले समरे ।
असुर असुरीसबु गले जमपुरे ।। ८६ ।।

को जीत लिया था । ७७ मच्छर की नाक में गजसमूह-जैसा प्रविष्ट हो गया । बिलंका के मल्ल मानव के हाथों मारे गये । ७८ बाँबी में घुसकर मेढ़की ने सर्प को मार डाला अथवा चूहे ने बुलाकर बिल्लियों के झुंड को मार डाला । ७९ बन्दर के हाथ से असुर मर रहे हैं । यह देख ये आँखें फूट क्यों नहीं गयीं ? ८० यह सहन कैसे हुआ ? छाती बिदीर्ण क्यों नहीं हो गयी ? तब बिलंका के नरपाल ने आश्चर्य से प्रश्न किया— ८१ अरे बेटा बिशकंठ ! क्यों रो रहे हो और यह राजमाता क्यों रो रही है ? ८२ ऐसा सुनकर असुर शतशिरानन्दन ने पहने हुए वस्त्र के छोर से आँख के आँसू पोंछ डाले । ८३ सिसकारियाँ भरते हुए रुक-रुककर रोते हुए उसने कहा कि बिलंका देश में लोहे की सिरावन फिर गयी है । ८४ हे वृद्ध पितामह ! सारी सम्पत्ति समाप्त हो गयी । पिता जी मर गये तथा सारा नगर जल गया । ८५ आपके दोनों बेटे रण-स्थल में

एकमात्र न रहिले बिलंकारे केहि ।
नबर उआस हाट बाट किछि नाहिँ ।। ८७ ।।
खाल ढ़िप समतुल कि कहिबि स्वामी ।
पळाइ अइलु अति कष्टे प्राण घेनि ।। ८८ ।।
कोपे लक्षशिरा आखि रंगबर्ण करि ।
दुइ लक्ष सूर्ज उदे किबा उदे गिरि ।। ८९ ।।
कि कहिलु कि कहिलु आरे बिशशिरा ।
दिबसे बाबु स्वपन देखु अछु परा ।। ९० ।।
कदली भेळारे किए लंघिला सागर ।
काहार जमदाढ़कु नाहिँ पुणि डर ।। ९१ ।।
काळसर्प मुखरे के भरिला अंगुळि ।
सुची मूनरे के देला मेरु गिरि टाळि ।। ९२ ।।
बाघर हाड़ केमन्ते शिआळ गिळिला ।
केहु आसि बिलंकारे एड़े कर्म कला ।। ९३ ।।
सतकरि कह बाबु न जाइ परते ।
एमन्त जणे के बीर नाहिँ त्रि जगते ।। ९४ ।।
चउद ब्रह्माण्ड मुहिँ पारे ओलटाइ ।
निमिषके समुद्रकु मुँ शोषि पारइ ।। ९५ ।।

गिर गये । समस्त राक्षसियाँ तथा असुर यमालय को चले गये । ८६ बिलका में कोई एक भी नहीं बचा । महल, नगर, हाट-बाट कुछ भी तो नहीं है । ८७ हे नाथ ! क्या कहें, ऊँची नीची भूमि समतल हो गयी ? अत्यन्त कष्ट में मैं प्राण बचाकर भाग आया । ८८ लक्षकठ ने क्रोधित होकर आँखें लाल कर लीं । लगता था मानों उदयाचल पर्वत पर एक लाख सूर्य उदय हो गये हों । ८९ अरे बीसकठ ! क्या कहा ? बेटा ! क्या दिन में सपना देख रहे हो ? ९० केले के बेड़े से कौन समुद्र पार कर गया ? किसे यमराज की दाढ़ का डर नहीं है ? ९१ कालनाग के मुख में किसने उँगली डाली है तथा सुई की नोंक से किसने सुमेरु पर्वत को हिलाया है ? ९२ बाघ की हड्डियों को सियार कैसे निगल गया ? बिलका में आकर किसने ऐसा काम किया है ? ९३ अरे बेटा ! कुछ न छिपाकर सही-सही कहो । ऐसा तो तीनों लोकों में कोई नहीं है । ९४ मैं चौदह लोकों को पलट सकता हूँ । क्षण मात्र में समुद्र को सोख सकता हूँ । ९५ जिस पराक्रमी लक्षशिरा का नाम सुनकर यमराज डर से ठंडा

जेउँ लक्षशिरा बीर नाम शुणि जम ।
डरे शीतेइ पड़इ टांकुरइ रोम ॥ ९६ ॥
काळदण्ड धरि थिले हस्तु पड़े खसि ।
इन्द्र कहि न पारइ जाहाकु भरसि ॥ ९७ ॥
से बीर गोटा थाउँरे एकर्म के कला ।
एमन्त शुणिण बिंशशिरा जे बोइला ॥ ९८ ॥
भो स्वामी मुँ कि कहिबि असम्भव कथा ।
मानब गोटा काटिला सहस्रेक मथा ॥ ९९ ॥
घर तार अजोध्यारे नाम तार राम ।
एकाके से धनु धरि कलाक संग्राम ॥ १०० ॥
रथ नाहिँ गजनाहिँ अश्वहिँ जे नाहिँ ।
केबळ बानर एक सगरे अछइ ॥ १०१ ॥
तार नाम हनु सेहि पोड़िला बिलंका ।
राणी मानंकु पोड़िला तिळे नाहिँ शंका ॥ १०२ ॥
माइले से न मरइ बड़ निदारुण ।
पोखरीरु बिष खाइ न मला से जुण ॥ १०३ ॥
सुरेखा ताकु गिळिला तहिँरे न मला ।
बंचि राणीकर नाक कान काटि देला ॥ १०४ ॥
कि कहिबि स्वामी सेहि कपिरजे गुण ।
क्षणके मूषा क्षणके गिरि परमाण ॥ १०५ ॥

पड़ जाता है और उसके रोयें खड़े हो जाते हैं । ९६ पकड़ा हुआ कालदंड हाथ से गिर जाता है । इंद्र भी डरकर कुछ नहीं कर पाता । ९७ उस वीर के रहते हुए यह काम किसने किया ? ऐसा सुनकर बीसकंठ ने उत्तर दिया । ९८ हे नाथ ! मैं असम्भव बात क्या कहूँ कि एक मानव ने हजार शिरों को काट डाला । ९९ उसका घर अयोध्या में है और उसका नाम राम है । उसने अकेले ही युद्ध किया । १०० उसके पास रथ, हाथी, घोड़े कुछ भी नहीं, केवल साथ में एक वानर है । १०१ उसका नाम हनुमान है । उसी ने बिलंका जलायी है । बिना तिल भर शंका के उसने रानियों को जला डाला । १०२ मारने से तो मरता नहीं और बड़ा ही कठोर है । तालाब का विष पीकर भी वह नहीं मरा । १०३ सुरेखा उसे निगल गयी फिर भी वह नहीं मरा उसने बचकर रानियों के नाक-कान काट डाले । १०४ हे नाथ ! उस वानर

जळ स्थळ अनळकु नाहिँ तार भय ।
आकाश मार्गरे उड़ि जाए पक्षी प्राय ॥ १०६ ॥
स्वामी बज्रहुँ कठिन जार देह गोटा ।
देखिले भय करिब तार मुख छटा ॥ १०७ ॥
आखि मिटि मिटि करि मिच्छे पड़े शोइ ।
पाखकु गले से उठे बिश्वमूर्त्ति होइ ॥ १०८ ॥
दान्तकु देखाइ दिए मुण्डकु टुंगारि ।
मळमूत्र त्याग करे देखिण असुरी ॥ १०९ ॥
असुरंकु देखि स्वामी खताइ हुअइ ।
सेहि कपि नाश कला तो बिलंका भुइँ ॥ ११० ॥
पुणि लक्षशिरा कोपे उठिला गरजि ।
महायोगी शिवंकर जोग गला भाजि ॥ १११ ॥
दल दल हेला मही पर्बते सहिते ।
कल बल हेले तहिँ थिले प्राणी जेते ॥ ११२ ॥
डरे देबतांक छाति हेला दक दक ।
धामइँ प्रतापी दैत्य होइ धक धक ॥ ११३ ॥
पच्छरे गोड़ाइ अछि राणी खुरणसी ।
धाएँ बिशशिरा होइ अण निशुआसी ॥ ११४ ॥

के गुण मैं क्या कहूँ ? एक क्षण मे वह चूहा बन जाता है और अगले क्षण में पहाड़ । १०५ उसे जल, स्थल तथा आग का डर नहीं है । आकाश में वह पक्षी के समान उड़ता है । १०६ हे स्वामी ! उसका सम्पूर्ण शरीर बज्र से भी कठोर है । उसके मुख की छटा को देखकर डर लगता है । १०७ आँख मिचकाकर झूठ-मूठ लेटकर सो जाता है । पास में जाने से वह विकराल रूप धारण करके उठ बैठता है । १०८ राक्षसियों को देखकर वह शिर को हिलाकर दाँतों को दिखा करके मल-मूत्र का त्याग कर देता है । १०९ हे नाथ ! असुरों को देखते ही वह व्यग्र हो जाता है । उसी वानर ने आपकी बिलंका भूमि को नष्ट किया है । ११० फिर तो लक्षशिरा ने क्रुद्ध होकर गर्जना की जिससे महायोगी शिव का योग भंग हो गया । १११ पर्वतों-समेत पृथ्वी कसमसा गयी । वहाँ जितने भी प्राणी थे वह कलबला उठे । ११२ भय से देवताओं का हृदय धक्-धक् करने लगा । प्रतापी दैत्य आतुरता से दौड़ पड़ा । ११३ रानी खुरणसी पीछे-पीछे दौड़ रही थी । साँस रोककर बीसकठ भी

घड़िक मध्ये मिळिले बिलंकारे जाइँ ।
देखि लक्षशिरा सेहि समतळ भुइँ ॥ ११५ ॥
दुइ लक्ष कर लक्षशिरे नेइ मारे ।
आहारे दइब बोलि कान्दि उच्च स्वरे ॥ ११६ ॥
बोलइ रे काहिँ गलु पुत्र मो त्रिशिरा ।
काहिँ गलुरे कुमरमणि शतशिरा ॥ ११७ ॥
बाबुरे सहसशिरा लुचिअछु काहिँ ।
जगती अट्टाळी राणी हंस पुर नाहिँ ॥ ११८ ॥
एमन्ते रोदन करु करु हेला कोप ।
दिशिला से काळान्तक जमर स्वरूप ॥ ११९ ॥
बिंशशिराकु बोइला जाइ आरे बाबु ।
कळपासुर मंत्रीकि पाताळु आणिबु ॥ १२० ॥
एमन्त शुणि से ठारु गला बिंशशिर ।
बिबर देइ पाताळे पशि महासुर ॥ १२१ ॥
कळपासुर भुबने मिळिलाक जाइँ ।
शुणि कळपा असुर अइलाक धाइँ ॥ १२२ ॥
मिळिला से लक्षशिरा छामुरे तक्षणे ।
प्रणमि से लक्षशिरा आजार चरणे ॥ १२३ ॥

दौड़ रहा था । ११४ एक घड़ी में ही वह लोग बिलंका जा पहुँचे । लक्षकंठ ने उस समतल भूमि को देखकर अपनी दो लाख भुजाओं से लाख शिरों को ठोक लिया । अरे दैव ! कहकर वह उच्च स्वर में क्रन्दन करने लगा । ११५-११६ अरे मेरे पुत्र त्रिशिरा, तुम कहाँ गये ? अरे अच्छे बेटे शतशिरा, तुम कहाँ गये ? ११७ अरे बेटा सहस्रकंठ ! तुम कहाँ छिपे हो ? जगती, अटारी, रनिवास कुछ भी तो नहीं बचा । ११८ इस प्रकार रुदन करते-करते उसे क्रोध चढ़ आया । वह काल का भी अन्त करनेवाले यम के स्वरूप का दिखाई देने लगा । ११९ उसने बीसकंठ से कहा, बेटा ! तुम पाताल जाकर मंत्री कल्पासुर को ले आओ । १२० ऐसा सुनकर महान असुर बीसकंठ बिवर से होकर पाताल पहुँच गया । १२१ फिर वह कल्पासुर के निवास पर गया । कल्पासुर सुनकर दौड़कर आ गया । १२२ वह शीघ्र ही लक्षशिरा के समक्ष उपस्थित हुआ । लक्षशिरा ने नाना के चरणों में प्रणाम करके कहा, हे मंत्री ! बताओ क्या किया जाय ? तुच्छ नर और वानर से कैसे

बोलइ भो मंत्री कह कि बुद्धि करिबा ।
छार नर बानरंकु केमन्ते पारिबा ॥ १२४ ॥
किम्पाइँ आसि होइला से आम्भ बइरी ।
सबंश मारि नाशिला बिलंका नगरी ॥ १२५ ॥
तुम्भ परा मंत्री थाउँ थाउँ हेला एहा ।
कळपा कहइ शुण आहो दैत्य नाहा ॥ १२६ ॥
तप अर्थे एठारु तु गलु जेउँ दिन ।
बड़ प्रतापी होइला तोहर नन्दन ॥ १२७ ॥
दुष्ट पणे तिआरिबा कथा न रखिला ।
आम्भंकु झिंगास करि बहुत कहिला ॥ १२८ ॥
तोर जेते सेनापति थिले पुणि तांकु ।
न रखिला बिलंकारे गोटिए काहाकु ॥ १२९ ॥
पळाइले घर द्वार भांगि जे समस्ते ।
के पाताळे के समुद्रे के जाइँ बनस्ते ॥ १३० ॥
रहिले ताहार डरे न पशिले पुरे ।
मुँ जाइँ रहिलि बाबु मोहर मन्दिरे ॥ १३१ ॥
राणी तोहर रहिला बापघरे जाइँ ।
शाळकगण तोहर न आसिले केहि ॥ १३२ ॥
अपमान करि तांक घरे से रहिले ।
सहस्त्रशिरा प्रताप सहि न पारिले ॥ १३३ ॥

निपटा जाय ? १२३-१२४ किस कारण से वह आकर हमारे शत्रु बन गये ? वंश समेत सबका संहार करके बिलंकानगरी को नष्ट कर डाला ! १२५ तुम्हारे मंत्री रहने पर यह सब हो गया। कल्पासुर ने कहा, हे दैत्यपति ! सुनो। १२६ तुम जिस दिन यहाँ से तपस्या के लिए गये तभी तुम्हारा बेटा अत्यन्त प्रतापी बन गया। १२७ दुष्टता के कारण उसने कोई बात नहीं मानी। हमें भी बहुत अपमानजनक वचन कहे। १२८ तुम्हारे जितने भी सेनापति थे उनमें से एक को भी उसने नहीं रखा। १२९ घर-द्वार छोड़कर सभी भाग गये। कोई पाताल में, कोई समुद्र में और कोई जंगल में जाकर बस गये। उसके भय से कोई भी नगर में नहीं घुसा। मैं भी जाकर अपने घर में रहने लगा। १३०-१३१ तुम्हारी रानी अपने पिता के घर जाकर रहने लगी। तुम्हारे साले भी कोई नहीं आये। १३२ अपमानित

देबतांकु खटाइला पाद तळे आणि ।
राम रूपरे जनम हेले चक्रपाणि ।। १३४ ।।
देबतांक छळे कले सबंशे संहार ।
तु रे बाबु तप कलु सहस्रे बत्सर ।। १३५ ।।
सिद्ध हेला कि ना बाबु तो मन कामना ।
लक्षशिरा बोलइ जे होइण बिमना ।। १३६ ।।
शून्य बाणी हेला मोते जाअ तुहो बेगे ।
किम्पाइ तु देह क्षीण करु महाजोगे ।। १३७ ।।
बिलंका पुरे भेटिबु तो पिता बइरी ।
एमन्त बाणी मुँ शुणि तप तेजि करि ।। १३८ ।।
आसिबा निमन्ते हेउ थिलि सज बाज ।
ए काळे मिळिला शतशिरार तनुज ।। १३९ ।।
कान्दि कहिला ए सबु कथा मोर आगे ।
शुणि एठाकु अइलि मुहिँ पुणि बेगे ।। १४० ।।
बिलंकार ए दुर्द्दशा देखि पोड़े मन ।
कि बुद्धि करिबा एबे कह मंत्रीगण ।। १४१ ।।
देबंक जोगु होइला सिनापुर नाश ।
देबे किम्पाइँ रहिबे मराइ मो बंश ।। १४२ ।।

होकर वह भी अपने घरों में रह गये। वह सहस्रकंठ का प्रताप सहन नहीं कर सके। १३३ उसने देवताओं को लाकर अपने चरणों की सेवा में लगा लिया। चक्रपाणि नारायण राम के रूप में अवतरित हुए। १३४ देवताओं के बहाने से उन्होंने वंश-सहित सबका संहार कर डाला। बेटा! तुमने हजार वर्ष तक तपस्या की। १३५ तुम्हारी मनोकामना सिद्ध हुई अथवा नहीं? तब लक्षशिरा ने दुखित मन से उत्तर दिया। १३६ शून्यवाणी हुई कि तुम शीघ्र ही घर लौट जाओ। तुम किसलिए तपस्या से शरीर क्षीण कर रहे हो? १३७ तुम बिलंकापुर में ही अपने पिता के शत्रु से भेंट करोगे। ऐसी वाणी सुनकर मैं तपस्या को त्यागकर आने के लिए तैयार हो रहा था। उसी समय शतकंठ का पुत्र मुझसे मिला। १३८-१३९ उसने रो-रोकर सारी बातें मुझसे कहीं। सुनने के बाद मैं शीघ्र ही यहाँ आ गया। १४० बिलका की यह दुर्दशा देखकर मेरा मन जल रहा है। हे मंत्रीश्रेष्ठ! अब बताओ कि क्या उपाय किया जाय? १४१ देवताओं के कारण ही नगर नष्ट हुआ है। मेरे वंश

जाउअछि स्वर्गपुर पकाइबि भांगि ।
एमन्त कहुँ कहुँ से गला पुणि रागि ॥ १४३ ॥
हस्ते एक गदा धरि मारिलाक चिरा ।
सहि न पारिला मही तार पादभारा ॥ १४४ ॥
शून्ये उठिला दइत्य कळा मेघ जाणि ।
दैत्य आसिबा बारता पाइ बज्रपाणि ॥ १४५ ॥
भये धाइँ जाइ ब्रह्मा छामुरे कहिले ।
शुणि बेदबर बेगे सेठाकु अइले ॥ १४६ ॥
तेतिश कोटि देबंकु घेनि बेदबर ।
मिळिले जाइँ प्रतापी दानब आगर ॥ १४७ ॥
बोइले दानब पति किम्पा तोर राग ।
अकारणे काहिँ पाइँ नाशिबु ए स्वर्ग ॥ १४८ ॥
आम्भेत तोहर भृत्य करि नाहुँ दोष ।
बिना दोषे आम्भ पुर करिछु बिनाश ॥ १४९ ॥
ब्रह्मांक मुखुँ एमन्त शुणि दैत्यपति ।
बोइला निर्द्दोषी केन्हे कह प्रजापति ॥ १५० ॥
बिलंका भुबन मोर नाशिल किम्पाइँ ।
पुत्र नाति मराइल रामकु अणाइ ॥ १५१ ॥

का संहार कराकर देवता कैसे रहेंगे ? १४२ मैं जा रहा हूँ । स्वर्ग को नष्ट-भ्रष्ट कर डालूँगा । ऐसा कहते-कहते वह पुनः क्रुद्ध हो उठा । १४३ हाथ में एक गदा लेकर उसने छलाँग लगा दी । उसके पद-भार को पृथ्वी सहन नहीं कर सकी । १४४ आकाश में उठते हुए दैत्य को काले बादल के समान समझकर इन्द्र ने दैत्य के आने का समाचार मिलते ही भय से दौड़ते हुए जाकर ब्रह्मा जी से निवेदन किया । यह सुनकर वेदज्ञ ब्रह्मा शीघ्र ही वहाँ आ गये । १४५-१४६ ब्रह्मा जी तेंतीस करोड़ देवताओं को लेकर प्रतापी दानव के आगे जाकर मिले । १४७ वह बोले— हे श्रेष्ठ दानव ! तुम किसलिए कुपित हो ? बिना कारण के ही स्वर्गलोक को क्यों नष्ट करोगे ? १४८ हम सब तो आपके दास हैं । हमने कोई अपराध भी नहीं किया है । बिना दोष के ही तुम हमारे नगर को नष्ट कर रहे हो । १४९ ब्रह्मा के मुख से ऐसे वचनों को सुनकर दैत्यराज ने कहा— हे प्रजापति ! बताओ, तुम निर्दोष कैसे हो ? १५० हमारे बिलंका देश को किसलिए नष्ट करवा डाला ? राम को बुलाकर पुत्र तथा

एमन्त शुणि बिधाता बोइलेक हसि ।
न बुझि न सुझि सिना करुअछु दोषी ।। १५२ ।।
राम मर्त्यबासी आम्भे अटु स्वर्गबासी ।
आम्भ संगे भेंट काहुँ हेला सेहि आसि ।। १५३ ।।
जातिरे मानब सेहि आम्भे त देबता ।
ताहार आम्भर काहुँ हेब कथा बार्त्ता ।। १५४ ।।
तोहर त सदादिने आम्भे आज्ञाकारी ।
तु बोइले तो कथारे दण्ड साजि करि ।। १५५ ।।
श्रीराम संगरे जाइँ करिबु समर ।
किम्पाइँ तु चिन्ता करु बिलंका ईश्वर ।। १५६ ।।
पूर्बे जेमन्ते बिलंकापुर थिला तोर ।
तहुँ शते गुण करि देबु जे सुन्दर ।। १५७ ।।
कालि प्रभाते देखिबु सिना आहो राये ।
गढ़ि देबु राति करे मिळि देबताए ।। १५८ ।।
एमन्त शुणि दानब हरष होइला ।
से दिन रात्रे अमर भुबने रहिला ।। १५९ ।।
बिश्वकर्माकु हकारि बोइले बिधाता ।
आहो बिश्वकर्मा तुहि छाड़ि सबु चिन्ता ।। १६० ।।

नातियों को मरवा डाला । १५१ ऐसा सुनकर ब्रह्मा ने हँसते हुए कहा कि बिना जाने-बूझे हमें दोषी ठहरा रहे हो । १५२ राम मृत्युलोक का निवासी है । हम स्वर्ग के रहनवाले हैं । उसकी आकर हमसे भेंट ही कहाँ हुई ? १५३ जाति में भी वह मानव तथा हम देवता हैं । हमारी उसकी बातचीत कैसे हो सकती है ? १५४ हम लोग तो सदा-सर्वदा आपके ही आज्ञाकारी हैं । तुम्हारे कहने से तुम्हारी बात पर हम लोग अस्त्र-शस्त्र सजाकर जाकर श्रीराम से युद्ध करेंगे । हे बिलंकेश ! तुम व्यर्थ ही चिन्ता क्यों कर रहे हो ? १५५-१५६ तुम्हारा बिलकापुर जैसा पहले था उससे भी सौ गुना सुन्दर बना देंगे । १५७ हे राजन् ! कल प्रातःकाल ही देख लेना, हम सब देवता मिलकर रात में ही उसे गढ़ डालेंगे । १५८ ऐसा सुनकर दानव प्रसन्न हो गया । उस दिन रात्रि में वह स्वर्गलोक में ही रह गया । १५९ ब्रह्मा जी ने विश्वकर्मा को बुलाकर कहा— हे विश्वकर्मा ! तुम सब चिन्ताओं को त्यागकर जाकर रात्रि में बिलकापुर का निर्माण करो । नहीं करने से

बिलंकापुर निर्माण कर जाइ राव्रे ।
न कले असुर मुखे पड़िबा समस्ते ।। १६१ ।।
गतुँ हेब शतेगुण जेमन्त सुन्दर ।
तेमन्त करि निर्माण कर जाइँ पुर ।। १६२ ।।
प्रभाते जाइ असुर देखि हेब तोष ।
नोहिले स्वर्ग भुबन करिबटि ध्वंस ।। १६३ ।।
ब्रह्मा बचने तक्षणे बिश्वकर्मा गला ।
रातिक मध्ये बिलंकापुर निर्माणिला ।। १६४ ।।
पूर्बे थिला जेउँ परि अट्टाळि जगती ।
कन्दि बिकन्दि अगणा पुर चउकति ।। १६५ ।।
उआस नगर उपबन अन्तःपुर ।
हातीशाळ ओटशाळ पाचेरी भण्डार ।। १६६ ।।
हाट बाट घाट सबु पूर्ब परि कला ।
राति न पाहुँ आपणा पुरे चळिगला ।। १६७ ।।
प्रभातुँ जाइँ दानब पुरकु देखइ ।
देबगणंकु बहुत प्रशंसा करइ ।। १६८ ।।
मंत्रीकि डकाइ आणि कहिला असुर ।
निर्भये आसि ए पुरे रहि घर कर ।। १६९ ।।
बीर महाबीर मोर राउत माहुन्त ।
हाती घोड़ा पाइक जे पात्र मंत्री मित्र ।। १७० ।।

सभी लोग असुर के मुख में चले जायेंगे । १६०-१६१ पहले से सौ गुनी सुन्दर हो, इस प्रकार से जाकर नगर का निर्माण करना । १६२ प्रातःकाल जाकर असुर को देखने से सन्तुष्टि हो जायेगी, नहीं तो वह स्वर्गलोक को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा । १६३ ब्रह्मा के कहने पर विश्वकर्मा उसी क्षण चला गया तथा रात्रि में ही बिलंका नगर का निर्माण कर डाला । १६४ जिस प्रकार जगत, अट्टालिकायें, आँगन, गली-कूचे, आवास, नगर के चारों ओर उपवन, अन्तःपुर, हाथीशाला, ऊँटों की शाला, भण्डार, चहारदीवारी, हाट, मार्ग, घाट सब कुछ जैसे थे, वैसे ही पहले की भांति तैयार करके रात बीतने के पहले ही वह अपने धाम को चला गया । १६५-१६७ प्रातःकाल दानव ने जाकर नगर को देखा तथा देवताओं की बहुत प्रशंसा की । १६८ असुर ने मंत्री को बुलवाकर निर्भयता से आकर उसी नगर में घर बसाने को कहा । १६९ मेरे वीर योद्धाओं, महावतों, हाथी-घोड़ा-

समस्तंकु कहि दिअ आसि से रहन्तु ।
धन बसनरे सबु पुराइ दिअन्तु ॥ १७१ ॥
कुबेरकु असुर जे कहिला डकाइ ।
भण्डार दिअ तु धन रत्नरे पुराइ ॥ १७२ ॥
डरे कुबेर देबता देला आणि धन ।
बरुण देबता आणि देला रत्नमान ॥ १७३ ॥
असुर असुरी आसि कले तहिँ बास ।
शुणिलु त ए बिलंका रामायण रस ॥ १७४ ॥
अमृत ठारु मधुर कर्णप्रिय अति ।
रामचरित मुकति पसरा पार्बती ॥ १७५ ॥
सुधार भण्डार एहि ग्रन्थ गोटि जाण ।
महामुनि बालमीक करिछि बखाण ॥ १७६ ॥
राम नाम न कहिबा मुख अपबित्र ।
राम नाम न शुणिबा कर्ण बिषपात्र ॥ १७७ ॥
राम नाम न भजिले पिण्ड अकारण ।
राम नाम पिण्डकु हे सर्बदा कारण ॥ १७८ ॥
राम नाम नाबकु जे आश्राकर नरे ।
पाप जलधिकि तरि जिब किंचितरे ॥ १७९ ॥

पायकों, सभासदों, मंत्रियों आदि से कह दो कि सभी आकर यहाँ रहें। धन तथा वस्त्र आदि सभी कुछ भर दो। १७०-१७१ असुर ने कुबेर को बुलाकर कहा कि तुम धन-रत्न से भण्डार भर दो। १७२ भय के कारण कुबेर देवता ने धन लाकर दिया। वरुणदेव ने अनेक रत्न लाकर दिये। १७३ असुर तथा असुरियों ने वहाँ आकर वासस्थान बना लिया। इस रसमयी बिलंका रामायण को तो तुमने सुना ही है। १७४ यह कानों को प्रिय लगनेवाली तथा अमृत से भी मधुर है। हे पार्वती ! राम-चरित्र मुक्ति की खान ही है। १७५ यह एक मात्र ग्रन्थ अमृत का भण्डार है, जिसका बर्णन महर्षि वाल्मीकि ने किया है। १७६ राम-नाम को न कहनेवाला मुख अपवित्र है। राम-नाम को न सुननेवाले कान विष-पात्र के समान हैं। १७७ राम-नाम का भजन न करने से यह शरीर ही व्यर्थ है। इस पिण्ड का कर्त्ता तो सर्वदा राम-नाम ही है। १७८ हे मानव ! राम-नाम रूपी नाव का जो भी सहारा लेता है, वह पाप-सिंधु को अनायास

चक्रधर श्रीरामर चरणे शरण ।
भवसागरु उद्धार पाइबा कारण ।। १८० ।।

श्रीरामंकर सैन्य सह बिलंका जात्रा ओ लक्षशिरार गदा बाते उड़िबा

एथु अनन्तरे कथा शुण गो पार्बती ।
पृथ्वी घोटिले असुरे तिळे नाहिं भीति ।। १ ।।
देबता मानंकु देले बहुत जे कष्ट ।
अनेक गोरु ब्राह्मण धरि करि नष्ट ।। २ ।।
देब सभारे कान्दिला पृथ्वी देबी जाइँ ।
देबे बिचारिले बसि सभामध्ये थाइ ।। ३ ।।
कि बुद्धि करिबा दैत्य मरिब केमन्ते ।
चाल जाइँ जणाइबा श्रीराम अग्रते ।। ४ ।।
इन्द्र बोइले समस्ते अजोध्याकु गले ।
असुर जाणिब निश्चे देबे मेळि कले ।। ५ ।।
मातळिकि पठाइबा गुपुतरे जाउ ।
देबंक दुःख रामंक छामुरे जणाउ ।। ६ ।।
कहि बोलि श्रीरामंकु बिलंकाकु आणु ।
राम नइले पळाइ जिबा ए भुबनु ।। ७ ।।

ही पार कर जाता है । १७९ संसार-सागर से उद्धार पाने के लिए चक्रधर श्री रामचन्द्र जी के चरणों की शरण में है । १८०

सेना-सहित श्रीराम की बिलंका-यात्रा तथा लक्षशिरा की गदा-बात से उड़ जाना

हे पार्वती ! इसके बाद की कथा सुनो । पृथ्वी पर असुर फैल गये । उन्हें तिल मात्र भी भय नहीं था । १ उन्होंने देवताओं को बहुत कष्ट दिये । बहुत सी गायों और ब्राह्मणों को पकड़कर नष्ट कर डाला । २ पृथ्वीदेवी ने जाकर देवताओं की सभा में क्रन्दन किया । सभा में बैठे हुए देवताओं ने विचार किया कि क्या उपाय किया जाय, जिससे दैत्य का संहार हो सके । चलो श्रीराम के पास चलकर कहा जाय । ३-४ इन्द्र ने कहा कि सभी के अयोध्या जाने पर असुर समझ जाएगा कि देवता निश्चय ही राम से मिल गये हैं । ५ गुप्त रूप से मातलि को भेजा जाय और देवताओं के कष्ट के बारे में श्रीराम को बता दे । ६ समझा-बुझाकर श्रीराम को बिलंका में ले आये । राम के न

असुरंक पाद सेबा करि न पारिबा ।
बिषपान करि आम्भे समस्ते मरिबा ॥ ८ ॥
असुर नाशिबा पाइँ श्रीराम जनम ।
देबंक निमन्ते सिना चापधारी राम ॥ ९ ॥
एमन्त भाळि समस्ते मातळिकि राइ ।
अजोध्यापुरकु देले तुरिते पठाइ ॥ १० ॥
बाक्यदेबीकि बोइले देबकार्ज कर ।
अजोध्यापुर जनंक कण्ठे बिजे कर ॥ ११ ॥
जेमन्ते राम एथकु आसिबे तुरिते ।
तहिँर बिचार मान कर जाइँ मर्त्ये ॥ १२ ॥
सरस्वती राम कण्ठे बिजे कले जाइ ।
पुर जनंकु मोहिले मोहिनी लगाइ ॥ १३ ॥
मातळि जाइ मिळिला अजोध्या नगरे ।
कहिला देबंक दुःख रामंक आगरे ॥ १४ ॥
भो देब अजोध्यापुर मण्डन राघब ।
तोर स्वर्गपुर पुणि घेनिले दानब ॥ १५ ॥
बुलाइ थिलु भो देब बिलंकारे मइ ।
पुणि सेहि होइलाणि असुरक भुइँ ॥ १६ ॥

आने पर हम लोग इस लोक से भाग चलेंगे । ७ हम असुर के चरणों की सेवा नहीं कर पाएँगे । विषपान करके हम सभी प्राण त्याग देंगे । ८ श्रीराम का जन्म असुरों के विनाश के लिए ही हुआ है । देवताओं के लिए ही तो उन्होंने धनुष धारण किया है । ९ इस प्रकार विचार करके सबने मातलि को बुलाकर शीघ्र ही अयोध्यापुरी को भेज दिया । १० सरस्वती देवी से अयोध्यावासियों के कण्ठ में विराजकर देवकार्य करने को कहा । ११ जिससे राम शीघ्र ही यहाँ पधारें । उसी प्रकार का विचार जाकर मृत्युलोक में करो । १२ सरस्वती जाकर श्रीराम के कण्ठ में विराजमान हो गयीं । अपनी मोहिनी डालकर उन्होंने पुरवासियों के मन मोहित कर लिये । १३ मातलि अयोध्या नगर में जा पहुंचा । उसने देवताओं का कष्ट श्रीराम से निवेदित किया । १४ अयोध्यापुरी को सुशोभित करने वाले प्रभु राघव ! तुम्हारी स्वर्गपुरी को पुनः दानवों ने ले लिया है । १५ हे देव ! आपने बिलंका में सिरावन चला दी थी । वही असुरों की भूमि पुनः बस गयी । पहले से भी सौ गुनी सुन्दर बन गयी है । सहस्रकंठ का

गतुँ शते गुण पुर हेलाणि सुन्दर ।
सहस्रशिरार पिता लक्षशिरा बीर ।। १७ ।।
बड़ प्रतापी अटइ पुत्रहुँ अधिक ।
ता पादे सेबा करन्ति निति देबलोक ।। १८ ।।
बोइला भो देब जेबे रामकु मारिब ।
तेबे स्वर्ग भुबनरे सुखरे रहिब ।। १९ ।।
जेबे न मारिब ताकु धरि दिअ आणि ।
मोर बंश मराइछ तार हस्ते पुणि ।। २० ।।
देबे कूट करि मोर पुर कले ध्वंस ।
एबे मो शत्रुकु आणि दिअ मोर पाश ।। २१ ।।
नोहिले बान्धिबि जाण गोटि गोटि करि ।
भागिबि जाइ देबता मानकर पुरी ।। २२ ।।
देखिबा केमन्ते रखे केउँ बाप आसि ।
राम कि बइरी तुम्भे अट सिना दोषी ।। २३ ।।
एणु इन्द्र आदि देबे न आसिले डरे ।
मेळि कले बोलि कोप करिबे असुरे ।। २४ ।।
गुपतरे पठाइले पाशकु तोहर ।
कहि अछइटि जाहा शुण सुनासीर ।। २५ ।।
रामंकु कहिबु जेबे न मारिबे दैत्य ।
देबगणंकर जाण मरण नियत ।। २६ ।।

पिता लक्षकंठ अपने पुत्र से अधिक महानतम प्रतापी है। देवता नित्य ही उसके चरणों की सेवा किया करते हैं। १६-१८ हे देव ! उसने कहा है कि जब तुम लोग राम को मारोगे तभी स्वर्ग में सुखपूर्वक रह पाओगे। १९ यदि उसे नहीं मार सकते तो उसे पकड़कर ही ला दो। उसी के हाथों से तुमने मेरे बंश का संहार कराया है। २० देवताओं ने षड्यंत्र रचकर मेरे नगर को नष्ट कर डाला। अब मेरे शत्रु को लाकर मुझे दो। २१ नहीं तो समझ लो कि एक-एक को बाँधकर देवताओं की पुरी को ध्वंस कर दूंगा। २२ देखूँगा कौन बाप आकर रक्षा करता है ? राम का साथ देने से तुम लोग अपराधी हो। २३ देवता राम से मिल गये, ऐसा जानकर असुर क्रुद्ध हो जाएगा। इसी कारण से इन्द्र आदि देवता डर के कारण नहीं आये। २४ छिपकर मुझे आपके पास भेजा है। जो कुछ इन्द्रदेव ने कहा है, उसे सुनें। २५ श्रीराम से कह देना, यदि आप दैत्य को नहीं मारेंगे तो

बिषपान करि पच्छे तेजिबुँ जीबन ।
केते खटिबुँ असुर पादे रातिदिन ।। २७ ।।
मातळि मुखुँ एमन्त शुणि रघुनाथ ।
बोइले मातळि तुहो जाअ जा तुरित ।। २८ ।।
इन्द्रकु कहिबु रहिथाउ निर्भय रे ।
असुर बंश निपात करिबि मुँ शरे ।। २९ ।।
लक्षमुखकु ताहार काटिबि अबश्य ।
भस्म करिबइँ पुणि से बिलंका देश ।। ३० ।।
एमन्त कहि मेलाणि देले मातळिकि ।
भरत शत्रुघनकु अणाइले डाकि ।। ३१ ।।
मातळि कहिबा कथा कहिले बुझाइ ।
देश बिदेशकु चार दिअ हे पठाइ ।। ३२ ।।
आसन्तु जे राजा माने सैन्य बळ घेनि ।
सज हुअन्तु अजोध्या पुरर सइनी ।। ३३ ।।
रथ गज अश्व साजि आणन्तु तुरिते ।
एमन्त शुणि भरत अनाइ अमात्ये ।। ३४ ।।
बोइले घोषणा दिअ अजोध्या नगरे ।
सज होइण आसन्तु बीर महाबीरे ।। ३५ ।।

देवताओं का मरण ही निश्चित समझ लें । २६ बाद में हम लोग विष पीकर जीवन त्याग देंगे । रात-दिन असुर के चरणों की कितनी सेवा करें । २७ मातलि के मुख से ऐसा सुनकर रघुनाथ जी ने कहा कि हे मातलि ! तुम शीघ्र ही जाओ । इन्द्र को कह देना कि वह बिना डर के रहे । मैं बाणों से असुर का वंश-सहित संहार करूँगा । २८-२९ अवश्य ही उसके लाख शिरों को काटूँगा और पुनः उस बिलंका देश को भस्म करूँगा । ३० इस प्रकार कहकर उन्होंने मातलि को बिदा किया । भरत और शत्रुघ्न को बुला भेजा । ३१ मातलि द्वारा कही हुई बातों को समझाकर वह बोले कि तुम देश-देशान्तरों में दूत भेज दो । ३२ अपनी सेना लेकर राजा लोग आ जायें । अयोध्यापुर की सेना भी सुसज्जित की जाय । ३३ हाथी, घोड़े, रथ सजाकर शीघ्र ही लायें । इतना सुनकर भरत ने मंत्री की ओर देखते हुए कहा कि अयोध्या नगर में घोषणा करा दो, वीर-पराक्रमी योद्धागण तैयार होकर आ जायँ । ३४-३५ चार

चारि दिगकु चारोटि दूत दिअ पेषि ।
राजांकु डाकि आणन्तु जुद्ध कथा भाषि ।। ३६ ।।
पात्र मंत्री शुणि देले राज्यरे घोषणा ।
बेगे सज होइ आस रथी सेना जेना ।। ३७ ।।
राम बिलंकाकु जिबे जुझिबा निमन्ते ।
एमन्त शुणि बिचार करन्ति समस्ते ।। ३८ ।।
चाल हो जिबा देखिबा असुरंक रण ।
आनन्द होइ धाइँले सेनापति गण ।। ३९ ।।
सरस्वती देबी अछि समस्तंकु मोहि ।
काहा मुखरे न जिबा पद न आसइ ।। ४० ।।
के बोलइ चाल जिबा बिलम्ब न कर ।
देखि न पारिले जुद्ध राम रावणर ।। ४१ ।।
सहस्रशिराकु पुणि माइले से जाइँ ।
काहुँ देखिबा आम्भर भाग्यरे त नाहिँ ।। ४२ ।।
एते दिने फिटि गला सुभाग्य आम्भर ।
कहिलेणि जिबा पाइँ राम रघुबीर ।। ४३ ।।
एमन्ते बिचारि लोके आनन्दे धामन्ति ।
जात्रा देखिबाकु जेन्हे बाळक हुअन्ति ।। ४४ ।।

दूत चारों दिशाओं में भेज दो, जो युद्ध की पाती देकर राजाओं को बुला लाएँ । ३६ सभासदों व मंत्रियों ने सुनते ही राज्य में घोषणा कर दी कि रथ-रथी, सेना, योद्धागण शीघ्र तैयार होकर आ जाएँ । ३७ श्रीराम युद्ध करने के लिए बिलंका जाएँगे । ऐसा सुनकर सभी विचार करने लगे कि चलो भाई असुरों का युद्ध देखेंगे । सेनापतियों के दल प्रसन्न होकर दौड़ पड़े । ३८-३९ सरस्वतीदेवी ने सभी को सम्मोहित कर रखा था । नहीं जाने का वाक्य किसी के मुख पर नहीं आ रहा था । ४० कोई बोला, चलो चलें । देर मत करो । राम और रावण का युद्ध तो नहीं देख पाये । ४१ सहस्रकंठ को उन्होंने जाकर ही मार दिया । कहाँ देखते, हमारे भाग्य में ही नहीं है । ४२ इतने दिनों पर हमारा सौभाग्य खुल गया । रघुवीर श्रीराम जी ने चलने के लिए कहा है । ४३ ऐसा विचार करते हुए लोग आनन्द से दौड़ रहे थे, जिस प्रकार मेला देखने के लिए बालक हो जाते हैं । ४४ जैसे तीर्थाटन के लिए तीर्थयात्री, उसी

तीर्थं करिबाकु जेन्हे तीर्थबासी जन ।
अजोध्या जनंक मन उच्छन्न तेसन ।। ४५ ।।
बाद्य नादरे चमकि पड़ुअछि पुर ।
चारि दिगरु अइले शुणि नृपबर ।। ४६ ।।
देखि राम सज होइ बिजे कले रथे ।
भरतकु बोइले तु रहिथाअ एथे ।। ४७ ।।
कर जोड़ि जणाइला भरत भो देब ।
मुहिँ जिबि तुम्भ संगे ए कथाहिँ ध्रुब ।। ४८ ।।
लक्ष्मण एकाके रहि रक्षा करु पुर ।
देखिबा केड़े प्राकर्मबन्त से असुर ।। ४९ ।।
एमन्त शुणि श्रीराम लक्ष्मणकु चाहिँ ।
बोइले बाबुरे पुर रखिथिबु तुहि ।। ५० ।।
राणी हंसपुर बाबु रखिबु जतने ।
एमन्त कहि चढ़िले पुष्पक बिमाने ।। ५१ ।।
सैन्यंकु बोइले सर्बे बस एथेँ आसि ।
रथ रथी घोड़ा हाती देशी से बिदेशी ।। ५२ ।।
अस्त्र शस्त्र घेनि रथे बस हो समस्ते ।
बसिले जाइँ सकळे से पुष्पक रथे ।। ५३ ।।

प्रकार अयोध्या के लोग उत्साहित मन से प्रसन्न थे । ४५ नगर बाद्य-नादों से जैसे चौंक पड़ता था । चारों दिशाओं से राजागण सुनकर आ गये थे । ४६ देखते ही रामचन्द्र जी तैयार होकर रथ पर आरूढ़ हो गये । उन्होंने भरत को वहीं रुकने को कहा । ४७ हाथ जोड़कर भरत ने कहा, हे देव ! मैं आपके साथ चलूंगा । यह बात अटल है । ४८ अकेले लक्ष्मण नगर की रक्षा करते रहें । मैं देखूंगा कि वह कितना पराक्रमी दैत्य है ? ४९ ऐसा सुनकर श्रीराम ने लक्ष्मण की ओर देखते हुए कहा, हे वत्स ! तुम नगर की रक्षा करते रहना । ५० हे तात ! यत्नपूर्वक रनिवास की रक्षा करना । इतना कहकर वह पुष्पक विमान पर चढ़ गये । ५१ सेना से कहा कि सभी यहाँ आकर बैठ जाएँ । देशी-विदेशी रथ, हाथी, घोड़े, रथी इसी पर आ जायँ । ५२ सभी लोग अस्त्र-शस्त्र लेकर यहाँ आकर बैठ जायँ । सभी लोग जाकर पुष्पक रथ पर बैठ गये । ५३ वशिष्ठ ने आकर शुभ मंगलाचरण पढ़े । सभी के प्रति

बशिष्ठ कहिले आसि शुभ अनुकूळ ।
घरे घरे पूर्णकुम्भ स्थापिले सकळ ।। ५४ ।।
अहिआ नारीए मिळि देले हुळहुळि ।
बाजिला जे बीरतर महुरी काहाळी ।। ५५ ।।
जोड़ि शंख बजाइले अग्रते शंखूआ ।
ब्राह्मण बेद पढ़िले आंगे होइठिआ ।। ५६ ।।
मंगळ अष्टके पाठ कले जउतिषे ।
हाट बाट घाट जाक पूरे जयघोषे ।। ५७ ।।
देवताए पुष्पवृष्टि कले आनन्दरे ।
पुष्पक रथकु राम बोइले सधीरे ।। ५८ ।।
किष्किन्ध्या राज्ये मिळिबु तु हो देबरथ ।
शून्यमार्गे रथ गला देइ बायुपथ ।। ५९ ।।
सुग्रीवर पुरे जाइ कपिपति पाशे ।
चार जणाइला आइ कपिपति पाशे ।। ६० ।।
शुणिण बानर राजा अइलेक धाइँ ।
श्रीराम बोइले शुण किष्किन्ध्यार साइँ ।। ६१ ।।
लंकाकु जाइ थिले हो ऋक्ष कपि जेते ।
समस्ते आसन्तु जिबे मोहर संगते ।। ६२ ।।
बिलंका राजन नाम अटे लक्षशिरा ।
मही सही न पारइ तार पाद भारा ।। ६३ ।।

घरों में जलपूरित कुम्भ स्थापित किये । ५४ अहिआती स्त्रियों ने मंगलध्वनि की । वीर-वाद्य तुरही, मौहर बज उठे । ५५ शंख बजानेवाले लोगों ने मिलकर शंखध्वनि की । आगे खड़े होकर ब्राह्मणों ने वेदपाठ किया । ५६ ज्योतिषियों ने मंगलाष्टक का पाठ किया । हाट, बाट, घाट जयध्वनि से पूर्ण हो गये । ५७ आनन्द से देवताओं ने पुष्पवर्षा की । श्रीराम ने धैर्य के साथ पुष्पक रथ से कहा— हे देवरथ ! तुम किष्किन्धा चलो । पुष्पक आकाश के वायु-पथ पर चल दिया । ५८-५९ सुग्रीव के महल में जाकर सुग्रीव के समीप चर ने सब बताया । ६० सुनते ही राजा दौड़कर आ गया । श्रीराम ने कहा कि हे किष्किन्धा के अधिपति ! जितने भी वानर तथा भालू लंका को गये थे, वह सभी हमारे साथ चलेंगे । ६१-६२ लक्षकंठ नाम का बिलका का राजा है । उसके पैरों का भार पृथ्वी सहन नहीं कर पा रही है । ६३ उसने देवताओं को बहुत कष्ट दिये हैं । पुत्र

देबता मानंकु कष्ट देलाणि बहुत ।
पुत्र छळे कोप करि प्रतापी दइत ॥ ६४ ॥
सबंशे मारिब तहिँ न रखिबि एक ।
एमन्त शुणि बोलइ किष्किन्ध्या नायक ॥ ६५ ॥
मोर पुरे चारि दिन रहन्तु गोसाइँ ।
कपिंकि मुँ अणाउछि दूत बरगाइ ॥ ६६ ॥
माल्यबन्ते रहिल मो पुर न माड़िल ।
रावण मारि पुष्पक रथे शून्ये गल ॥ ६७ ॥
स्वामी दिने न पड़िला चरण तोहर ।
पबित्र कर भो स्वामी पुरकु मोहर ॥ ६८ ॥
तारा महादेई संगे घेनि नारी गण ।
अर्घ्य देइ बन्दाइला श्रीराम चरण ॥ ६९ ॥
भकति घेनिण प्रभु मिळिले ता पुरे ।
समस्तंकु गउरब करि कपि बरे ॥ ७० ॥
उत्तम भोजन देला जाहाकु जेमन्ते ।
संतोष होइ रहिले सेठारे समस्ते ॥ ७१ ॥
नृपतिए सुग्रीवकु कले धन्य धन्य ।
नोहिले कि मित्र पणे हुअन्तु भाजन ॥ ७२ ॥

के कारण प्रतापी दैत्य कुपित हो गया है । ६४ मैं उसका वंश के समेत नाश करूँगा । एक को भी नहीं छोड़ूँगा । ऐसा सुनकर किष्किन्धा के अधिपति ने कहा— ६५ हे स्वामी ! चार दिन आप मेरे नगर में रहें । मैं दूत भेजकर वानरों को बुला लेता हूँ । ६६ आप माल्यवन्त पर्वत पर रहे थे । हमारे नगर में प्रविष्ट नहीं हुए थे । रावण-वध के उपरान्त आकाश-मार्ग से चले गये थे । ६७ हे स्वामी ! एक दिन भी आपके चरण नहीं पड़े । आप मेरे महल को पवित्र करें । ६८ पट्टमहिषी तारा ने स्त्रियों के साथ अर्घ्य देकर श्रीराम के चरणों की पूजा की । ६९ भक्ति के प्रभाव से प्रभु श्रीराम उसके महल में गये । कपिश्रेष्ठ ने सबका सम्मान किया । ७० जिसे जैसा पसन्द था, उसे वैसा ही उत्तम भोजन प्रदान किया । सभी वहाँ पर संतुष्ट होकर रहे । ७१ राजाओं ने सुग्रीव को धन्यवाद दिया । ऐसा न होने से क्या तुम मित्रता के पात्र होते ? ७२ मन के अनुसार तुमने इतने लोगों का सत्कार किया तथा भक्ति से श्रीराम

एते लोकंक चरचा कलु मन जाणि।
रामंक मन तोषिलु भकतिरे पुणि ॥ ७३ ॥
एमन्त प्रशंसा करुँ मिळिले बानरे।
एमन्त बानर थाट देखि नृपबरे ॥ ७४ ॥
आचम्भित होइ देखु अछन्ति से रथे।
पृथिबी घोटि अछन्ति ऋक्ष कपि जूथे ॥ ७५ ॥
गिरि कन्दर पुरिछि न मिळइ बाट।
दधिमुखा काळिमुखा गोलांगुड़ा थाट ॥ ७६ ॥
श्रीराम बोइले मित बिलम्ब न कर।
पुष्पक रथे बसन्तु सकल बानर ॥ ७७ ॥
थाट सहिते तोहर बस बेगे जाइँ।
शुणि आनन्दे कपि ए अइलेक धाइँ ॥ ७८ ॥
नळ नीळ जाम्बवान हनु आदि जेते।
सुषेण ताराक्ष तार अंगद सहिते ॥ ७९ ॥
तहिँ राम से पुष्पक रथकु बोइले।
लंकापुरकु हो चळ बिभीषण तुले ॥ ८० ॥
राक्षस थाटकु घेनि बिलंकाकु जिबा।
तेबे सिना लक्षणिरा दानब जिणिबा ॥ ८१ ॥
एमन्त बहु शून्यरे गला रथ चळि।
कहुँ कहुँ लंकापुर मध्ये जाइ मिळि ॥ ८२ ॥

का मन संतुष्ट कर दिया। ७३ इसी प्रकार प्रशंसा करते-करते वानर आ पहुँचे। श्रेष्ठ राजाओं ने इस प्रकार की वानरी सेना को देखा। वह लोग आश्चर्यचकित होकर पुष्पक रथ से देख रहे थे। वानर और भालुओं के झुंडों से पृथ्वी भरी पड़ी थी। ७४-७५ पर्वत-कन्दराएँ भर जाने से मार्ग नहीं मिल रहा था। दधिमुख, कालीमुख, गोपुच्छ वानरों की सेना थी। ७६ श्रीराम ने कहा, हे मित्र! बिलम्ब मत करो। सभी वानर पुष्पक रथ पर बैठ जाएँ। ७७ अपनी सेना के साथ तुम जाकर शीघ्र ही बैठ जाओ। यह सुनकर प्रसन्न होकर वानर दौड़कर आ गये। ७८ नल, नील, जामवन्त, हनुमान, सुषेण, ताराक्ष तथा अंगद के साथ सभी थे। ७९ तब श्रीराम ने पुष्पक से बिभीषण के पास लंकापुर चलने को कहा— ८० राक्षसी सेना को लेकर बिलंका चलेंगे। तभी तो दानव लक्षकंठ को जीतेंगे। ८१ इस प्रकार आकाश में पुष्पक बहुत दूर

पुष्पक बिमान देखि असुर असुरी ।
बिचार करन्ति एथे बसि दशशिरी ॥ ८३ ॥
चउद ब्रह्माण्ड जाक बुले निमिष के ।
एमन्त बेळे मिळिला बिभीषण पाखे ॥ ८४ ॥
रामंकु देखि राक्षस राजन उठिला ।
पादे पड़ि उठि पुणि शिरे कर देला ॥ ८५ ॥
मंदोदरी राणी आसि बन्दिला चरण ।
श्रीराम बोइले तु हो शुण बिभीषण ॥ ८६ ॥
बिलंकाकु जिबा तोर थाट सजकर ।
लक्षशिरा नामे तहिँ अछइ असुर ॥ ८७ ॥
देबंक पाइँ ताहाकु करिबा निधन ।
एमन्त शुणि बोलइ असुर राजन ॥ ८८ ॥
आजिक मो पुरे प्रभु रहि कालि जिबा ।
अपबित्र भुबनकु पबित्र करिबा ॥ ८९ ॥
एमन्त कहि आदरे घेनि गला पुरे ।
समस्तंकु चरचा से कलाक सम्भारे ॥ ९० ॥
गउरब पाइ तहिँ रहिले समस्ते ।
भरत शत्रुघ्न आदि नरपति जेते ॥ ९१ ॥

चला गया और बातों-बातों में लंका जा पहुँचा । ८२ पुष्पक बिमान को देखकर राक्षसियाँ तथा राक्षस विचार-विमर्श करने लगे कि इसी पर बैठकर दशकंठ निमिषमात्र में चौदह भुवनों में घूम लेता था । इसी समय विभीषण के पास वह आ पहुँचा । ८३-८४ रामचन्द्र जी को देखकर राक्षसराज उठ पड़ा । पैरों में गिरकर उठा और हाथों को शिर में लगा लिया । ८५ रानी मन्दोदरी ने आकर चरणों की वन्दना की । श्रीराम बोले, हे विभीषण ! सुनो । ८६ बिलंका चलना है । तुम अपनी सेना सजा लो । वहाँ पर लक्षकंठ नाम का एक असुर है । ८७ देवताओं के लिए उसे मारना है । ऐसा सुनकर राक्षसराज बोला— ८८ हे प्रभु ! आज मेरे नगर में रहें, कल चलेंगे । आप अपबित्र भवन को पावन कर दीजिए । ८९ ऐसा कहकर वह सबको आदर के साथ महल में ले गया और सम्हालकर सबकी सेवा की । ९० भरत, शत्रुघ्न आदि जितने भी राजागण थे, वह सब आदर पाकर वहाँ रहे । ९१ वह लक्षपुरी

लंकापुर शोभा देखि आचम्भित होन्ति ।
रामचन्द्रंकु बहुत प्रशंसा करन्ति ॥ ९२ ॥
असुर असुरी देखि हुअन्ति ताटका ।
पर दिन प्रभातरु हेले डका हका ॥ ९३ ॥
आस आस बेगे आस बिळम्ब न कर ।
सज होइण आसिले लंकार असुर ॥ ९४ ॥
समस्ते पुष्पक रथ उपरे बसिले ।
बिलंकापुररे जाइ शून्यरे खसिले ॥ ९५ ॥
प्रचण्ड पर्बते रहि देले सर्बे दृष्टि ।
बिजुळि प्राय झटकुअछि पुर गोटि ॥ ९६ ॥
एथु अनन्तरे देबी पार्बती गो शुण ।
देबकु चाहिं क्रोधरे बोले दैत्य राण ॥ ९७ ॥
रामकु जेबे न देब मोते तुम्भे आणि ।
गोटि गोटि करि निश्चे पकाइबि हाणि ॥ ९८ ॥
एमन्त बेळे डगरा कहिला बारता ।
भो मणिमा साबधाने शुणिबा मो कथा ॥ ९९ ॥
समदण्ड घेनि राम प्रचण्ड पर्बते ।
देखिण अइलि तहिँ थिलइँ गुपते ॥ १०० ॥

की शोभा को देखकर आश्चर्य कर रहे थे तथा श्रीराम की बहुत प्रशंसा कर रहे थे। ९२ राक्षस-राक्षसी भी अवाक् रह गये। अगले दिन प्रात काल सबका बुलावा हुआ। ९३ जल्दी आओ, शीघ्र आओ, विलम्ब मत करो। लंका के असुर तैयार होकर आ गये। ९४ सभी पुष्पक रथ पर बैठ गये तथा बिलकापुर पहुँचकर आकाश से नीचे उतरे। ९५ प्रचण्ड पर्वत पर स्थित होकर सभा ने दृष्टि डाली। एक नगर बिजली की भाँति जगमगा रहा था। ९६ इसके बाद हे पार्वती! सुनो। दत्यराज देवताओं की ओर देखकर क्रोध से कहने लगा— ९७ यदि तुम लोग राम को लाकर मुझे नहीं दोगे तो एक-एक को मैं निश्चित ही समाप्त कर दूँगा। ९८ इसी समय दूत ने आकर समाचार दिया। हे राज-राजेश्वर! सावधान होकर आप मेरी बात सुनें। ९९ मैं प्रचण्ड पर्वत पर छिपा था। मैं राम को देखकर आया हूँ। राम समान रूप से अस्त्र, शस्त्र और असंख्य सेना लेकर आया है। रास्ता तक नहीं मिलता।

असंख्य सइनि संगे न मिळइ बाट ।
पृथिबी बोटि अछइ श्रीरामर थाट ।। १०१ ।।
बिचार करिबा हेउ जेमन्त दिशइ ।
बानर मानब ऋक्ष राक्षस अछइ ।। १०२ ।।
हाती घोड़ा रथ रथी पाइक अछन्ति ।
शुणिण से लक्षशिरा बिलंका नृपति ।। १०३ ।।
बोलइ सते कि राम आसिअछि एथे ।
जाहा लागि रातिदिन निद नाहिं मोते ।। १०४ ।।
से मोर परम शत्रु खोजुथिलि ताकु ।
जाणिलि मृत्यु कढ़ाइ आणिला पाखकु ।। १०५ ।।
दइबहिं बड़ जणे जाणिलि एथर ।
नोहिले राम केमन्ते आसन्ता एपुर ।। १०६ ।।
सिंहमुखकु कि मृग स्वइच्छारे आसे ।
मृत्यु जोग घटिले से मिळे आसिपाशे ।। १०७ ।।
एसन्त कहि आस्थाने बसिला दइत ।
दरशन कले पात्र मित्र जे अमात्य ।। १०८ ।।
बीर महाबीर जेता राउत माहुन्त ।
सेना सेनापति तहि अछन्ति बहुत ।। १०९ ।।
गह गह शबद जे सिन्धु घोष जाणि ।
देबता माने अछन्ति से सभारे पुणि ।। ११० ।।

सारी पृथ्वी पर श्रीराम की सेना फैली हुई है । १००-१०१ अब जैसा दिखाई दे वैसा विचार करें । वानर, भालू, राक्षस तथा मानव सभी हैं । १०२ हाथी, घोड़े, रथ-रथी, पायक आदि सभी हैं । यह सुनकर बिलकेश लक्षकंठ बोला, क्या सच में राम यहाँ आया है ? जिसके लिए दिन-रात मुझे नींद नहीं आती । १०३-१०४ वह मेरा परम बैरी है । मैं उसी को खोज रहा था । समझ गया कि मृत्यु ही उसे निकालकर पास में ले आयी है । १०५ मैं अब जान गया कि भाग्य बड़ा प्रबल है । नहीं तो राम इस नगर में कैसे आता ? १०६ क्या मृग अपनी इच्छा से सिंह के मुख में आ जाता है ? मृत्यु का योग आने पर वह पास आकर मिलता है । १०७ ऐसा कहकर दैत्य सिंहासन पर बैठ गया । सभासद, मित्र और मंत्रियों ने उसके दर्शन किये । १०८ वहाँ पर अनेक वीर, महान योद्धा, महावत, सेनानायक, सेनापति आदि थे । १०९ उस सभा में

लक्षशिरकु हलाइ कहइ दइत ।
आरे इन्द्र शुणुछुत कि कहइ दूत ।। १११ ।।
तुम्भर जे अति प्रिय छार नर राम ।
प्रचण्ड पर्वते आसि कलाणि बिश्राम ।। ११२ ।।
से मले तुम्भर टाणपण जिब सरि ।
कहुँ कहुँ कोपभरे भीष्मसूर्ति धरि ।। ११३ ।।
होइला से काळान्तक अनळ समान ।
बेळु बेळ बढ़ि जाइ व्यापिला गगन ।। ११४ ।।
सूर्य्य रथ भेदकला तार शिर जाइँ ।
शून्ये जाइ न पारिले छाया देबी साइँ ।। ११५ ।।
लक्षे गोटा सूर्य्य किबा उइँला गगने ।
तेसन दानब नेत्र बिराजे बदने ।। ११६ ।।
भुज जाक लम्बि गला शाळ गजा प्राय ।
अंजन शइलठारु कळा तार काय ।। ११७ ।।
दन्त पाटि तारा पंक्ति प्राये बिराजइ ।
मुण्ड बाळ फरफर होइण उड़इ ।। ११८ ।।
कोटि धूमकेतु उदे हेला प्राय दिशे ।
कर्ण जाक खण्ड खण्ड मेघ कि आकाशे ।। ११९ ।।

देवता भी उपस्थित थे। गहमा-गहमी के शब्द सागर-गर्जन से प्रतीत होते थे। ११० दैत्य ने लक्ष शिरों को हिलाते हुए कहा, अरे इन्द्र ! तूने सुना। दूत क्या कह रहा है ? तुम्हारा अत्यन्त प्रेमी जो तुच्छ मानव राम है, उसने प्रचण्ड पर्वत पर आकर डेरा जमाया है। १११-११२ उसके मरने से तुम्हारी शान खत्म हो जायेगी। बातों-बातों में कुपित होकर उसने विकराल रूप धारण किया। ११३ वह कालान्तक अग्नि के समान हो गया। शनैः-शनैः वह बढ़कर आकाश में फैल गया। ११४ उसका शिर जाकर सूर्य के रथ से टकराया। छायादेवी के पति भास्कर आकाश में गमन न कर पाये। ११५ दानव के मुखमण्डल पर विराजित नेत्र ऐसे लग रहे थे मानों आकाश में एक लाख सूर्य उदय हो गये हों। ११६ शाल वृक्ष की शाखाओं के समान उसकी भुजाएँ फैल गयीं। उसका शरीर अंजन-पर्वत से अधिक काला था। ११७ उसके दाँत तारा की पंक्तियों-जैसे सुशोभित थे। शिर के बाल फरफराकर उड़ रहे थे। ११८ लगता था मानों करोड़ों धूमकेतु उदय हो गये हों। आकाश में छितराये

रूप महाभयंकर अति बिकटाळ ।
घोटि अछि दैत्यपति गगन मण्डळ ॥ १२० ॥
घन घन रड़ि घाते घड़ घड़ि परि ।
कम्पिला ता पाद भरा पाइ बसुन्धरी ॥ १२१ ॥
देब दानब जेतेक थिले पुणि तहिँ ।
दानब रूपकु केहि न पारिबे चाहिँ ॥ १२२ ॥
आखि बूजि पकाइले देखि तार तेज ।
बासब भळिले स्वर्ग नाश गला आज ॥ १२३ ॥
जम भाळे मोर पुर रहिबि कि आउ ।
अग्नि तुल्य दैत्य कोपे जळे दाउ दाउ ॥ १२४ ॥
प्रळय होइब ब्रह्मा सृष्टि न रहिब ।
प्रतापी दैत्यकु काहु पारिबे राघब ॥ १२५ ॥
एमन्त बिचारु दैत्य उठिला गरजि ।
पाखे केहि न रहिले पकाइले भाजि ॥ १२६ ॥
धाइँला से कोपे लुहा गदा धरि करे ।
लक्ष भार गदा सेहि महाबळ धरे ॥ १२७ ॥
बुलाइला ताकु धरि कोपे से दइत ।
दुइ लक्ष हातरे से भ्रमे चक्रबत ॥ १२८ ॥

बादलों के टुकड़ों के समान उसके कान थे। ११९ उसका रूप अत्यन्त भयंकर और विकराल था। दैत्यपति सम्पूर्ण आकाशमण्डल में व्याप्त हो गया था। १२० बादलों की घरघराहट के समान उसका सिंहनाद था, जिसके पद-भार से सम्पूर्ण भूमण्डल कम्पित होने लगा। १२१ वहाँ पर जितने भी देवता और दानव थे, वह उस दानव के रूप को नहीं देख सके। १२२ उसके तेज को देखकर सबने आँखें बन्द कर लीं। इन्द्र ने सोचा कि आज स्वर्गलोक नष्ट हो गया। १२३ यमराज ने सोचा कि क्या आज मेरा नगर बच पायेगा? दैत्य अग्नि के समान धू-धू करके जल रहा था। १२४ प्रलय हो जायेगा। ब्रह्मा की सृष्टि नहीं बच पायेगी। क्या प्रतापी दैत्य से राघव युद्ध में सक्षम होंगे? १२५ ऐसे विचार आते ही दैत्य गर्जन करने लगा। कोई भी पास नहीं टिका। सब भाग गये। १२६ वह लोहे का गदा हाथ में लेकर दौड़ा। वह महान पराक्रमी एक लक्ष भार का गदा लिये था। १२७ उस दैत्य ने क्रुद्ध होकर वह गदा पकड़कर घुमायी। दो लाख हाथों में वह चक्र के

तहिँरु पबन जात हेला घन घन ।
जेसने खण्डिआ भूत घोटइ गगन ॥ १२९ ॥
धूळि पत्र जाहा पड़े आगरे ताहार ।
ताहाकु उड़ाए करि चक्कर आकार ॥ १३० ॥
तेसन दानब गदा पबन आघाते ।
उड़िले तेतिश कोटि देबता समस्ते ॥ १३१ ॥
दानब जेतेक थिले उड़िले सकळे ।
देबे उड़ि उड़ि गले आकाश मण्डळे ॥ १३२ ॥
शून्य पुरुष से माने शून्यरे रहिले ।
दानव माने आकाश मार्गे चळि गले ॥ १३३ ॥
जोजन अन्तरे केहि पड़िलाक जाइ ।
केहि राक्षस सतुरि हातरे पड़इ ॥ १३४ ॥
केहि बिशाशये केहि कोटिए हस्तरे ।
एमन्त उड़िले सर्बे दानब गदारे ॥ १३५ ॥
प्रचण्ड पर्बत मुखे असुर धामइँ ।
श्रीराम अनाइ देले रथ परे थाइ ॥ १३६ ॥
बोइले रे हनु देख आसुछि असुर ।
बिळम्ब न करि बेगे अस्त्रधरि मार ॥ १३७ ॥
आपे धनुशर धरि रहिले से रथे ।
तरभर होइ बीरे रहिले पर्बते ॥ १३८ ॥

समान नाच रही थी । १२८ उससे सनसनाकर हवा निकलने लगी । जिस प्रकार चक्रवात आकाश में भर जाता है । १२९ उसके आगे धूल, पत्ते जो भी पड़ते थे, वह चक्कर खाकर उड़ने लगते थे । १३० उसी प्रकार दानव की गदा की हवा की चपेट से तैंतीस कोटि देवता तथा जितने भी दानव थे, सब के सब उड़ गये । देवता लोग आकाशमण्डल में उड़ने लगे । १३१-१३२ वह लोग आकाशचारी थे अतः आकाश में रह गये । दानव लोग आकाश में उड़कर एक योजन दूर जा गिरे । कोई राक्षस सत्तर हाथ पर जा गिरा । १३३-१३४ कोई दो हजार, कोई एक करोड़ हाथ पर, इसी प्रकार सभी दानव गदा से उड़ गये । १३५ असुर प्रचण्ड पर्वत की ओर दौड़ रहा था । रथ पर बैठे श्रीराम ने उसकी ओर ताका । १३६ वह बोले, हे हनुमान ! देखो । दैत्य आ रहा है । देर मत करो, अस्त्र लेकर इसे मारो । १३७ स्वयं वह धनुष-बाण लेकर

ऋक्ष कपि राक्षस से मानब सइनी ।
अस्त्र शस्त्र धरि सर्बे धोटिले मेदिनी ॥ १३९ ॥
पुष्पक रथरु राम अइले उतुरि ।
हनुकु बोइले बाबु रक्षा कर गिरि ॥ १४० ॥
नृपति माने बोलन्ति काहिँ काहिँ दैत्य ।
बिभीषण बोले शुणि होइ आचम्बित ॥ १४१ ॥
कि जुद्ध करिब तुम्भे न पारुछ देखि ।
गदा बुलाइ धाउँछि चाहिँ मछि आखि ॥ १४२ ॥
एक दृष्टिरे समस्ते अनाइले ताकु ।
समस्त दृष्टि अछइ बिलंका आड़कु ॥ १४३ ॥
के बोइला पर्बत एके बोलइ मेघ ।
समस्तंकु पछ करि राम हेले आग ॥ १४४ ॥
बाम डाहाणे भरत शत्रुघ्न ए दुइ ।
बिभीषण बीर तांक पारुशे अछइ ॥ १४५ ॥
सुग्रीव अंगद हनु जाम्बव ए चारि ।
हस्ते धरि रहिछन्ति गोटा गोटा गिरि ॥ १४६ ॥
पबनहुँ बेगे धाइँ आसइ असुर ।
कुम्भकार चक्रप्राय बुले गदाबर ॥ १४७ ॥

रथ पर रह गये । हड़बड़ा कर वीर योद्धा पर्वत पर चले गये । १३८ भालू, बन्दर, राक्षसी और मानवी सेना सब अस्त्र-शस्त्र लेकर पृथ्वी पर फैल गयी । १३९ राम पुष्पक विमान से उतर आये । हनुमान से उन्होंने पर्वत की रक्षा करने को कहा । १४० राजा लोग कहने लगे कि दैत्य कहाँ है ? यह सुनकर विभीषण ने आश्चर्यचकित होकर कहा कि तुम लोग क्या युद्ध करोगे ? तुम तो देख भी नहीं पा रहे हो । वह गदा घुमाते हुए दौड़ रहा है । जरा ठीक से आँखें खोलकर देखो । १४१-१४२ सभी ने उसे टकटकी लगाकर देखा । सबकी दृष्टि बिलंका की ओर लगी थी । १४३ कोई कहता था, यह पर्वत है । कोई बोला, यह मेघ है । तभी सबको पीछे हटाकर श्रीराम आगे आ गये । १४४ उनके दायें-बायें भाग में भरत और शत्रुघ्न दोनों थे । उन्हीं के पास पराक्रमी विभीषण था । १४५ सुग्रीव, अंगद, हनुमान और जामवन्त हाथों में एक-एक पर्वत लेकर खड़े थे । १४६ असुर वायु-वेग से भी तीव्र गति से दौड़ा चला आ रहा था । उसकी श्रेष्ठ गदा कुम्हार के चाक की भाँति नाच रही

तहुँ चक्रबात जात हुए घन घन ।
महाभयंकर मूर्त्ति धरि से पवन ।। १४८ ।।
बहिला प्रचण्ड होइ घोटिला गगन ।
सम्भाळि ता न पारिले अजोध्या राजन ।। १४९ ।।
उड़िले गगन मार्गे से कोदण्डधारी ।
भरत शत्रुघ्न हनु सुग्री आदि करि ।। १५० ।।
बिभीषण जाम्बवान नळ नीळ आदि ।
ऋक्ष कपि जेते थिले पृथिबि आच्छादि ।। १५१ ।।
राक्षस मानव थाट रथ गज अश्व ।
समस्ते उड़िले पाइ गदार बतास ।। १५२ ।।
पक्षी प्राय दिशन्ति से गगन मार्गरे ।
भउँरी देइ उठाइ पारा जे प्रकारे ।। १५३ ।।
के जाइँ पड़िला काहिँ असम्भाळ होइ ।
पुष्पकरथ पड़िला अजोध्यारे जाइँ ।। १५४ ।।
श्रीराम पड़िले जाइँ जोजनेक दूरे ।
भरत शत्रुघ्न दुहेँ दुइ जोजनरे ।। १५५ ।।
हनुमान सहस्रेक हात गला उड़ि ।
सम्भाळ होइला बीर भूमिरे न पड़ि ।। १५६ ।।

थी । १४७ उससे सनसनाकर चक्रवात उत्पन्न हो रहा था । वह वायु अत्यन्त भयंकर रूप धारण कर रही थी । १४८ प्रचण्ड होकर उस झंझा ने आकाश को घेर लिया, जिसे अयोध्यापति श्रीराम सम्हाल नहीं पाये । १४९ कोदण्डधारी श्रीराम आकाश-मार्ग में उड़ने लगे । भरत, शत्रुघ्न, हनुमान, सुग्रीव, बिभीषण, नल, नील, जामबन्त आदि जितने भी वानर-भालू पृथ्वी पर फैले थे; राक्षसी तथा मानवी सेना के रथों, हाथियों, घोड़ों-समेत गदा की हवा से सभी उड़ गये । १५०-१५२ वह आकाश-मार्ग में पक्षियों के समान दिख रहे थे । ठीक जैसे कलाबाजियाँ खाता हुआ कबूतर उड़ता है । १५३ कोई कहीं जाकर न सम्हलकर गिर पड़ा । पुष्पक यान जाकर अयोध्या में गिरा । १५४ श्रीराम एक योजन की दूरी पर जा गिरे । भरत, शत्रुघ्न दोनों दो योजन पर जा गिरे । १५५ हनुमान एक हजार हाथ उड़ गये । वह सम्भल गये, इससे पृथ्वी पर नहीं गिरे । १५६ विभीषण भी उड़ते-उड़ते एक योजन चला गया।

बिभीषण उड़ि उड़ि जोजनेक गला ।
सम्भाळि होइण बीर सेठारे रहिला ।। १५७ ।।
रथसबु पड़ि भांगि होइ गला चूना ।
तळे पडि छेचि होइ मले केते सेना ।। १५८ ।।
दानब देखिला केहि नाहान्ति पर्बते ।
दूत जाइँ मो आगरे कहिला केमन्ते ।। १५९ ।।
काहाकु न पाइ बीर कोप कला शान्ति ।
बाहुड़िला बिलंकाकु असुर नृपति ।। १६० ।।
देखिला आस्थान तळे नाहान्ति गोटिए ।
बसिला जाइ जगती परे दैत्य राए ।। १६१ ।।
चारगण आसि तार छामुरे मिळिले ।
एक एक करि तार चरण बन्दिले ।। १६२ ।।
पचारिला से दुर्दान्त असुर ताहांकु ।
न देखिलि पर्बतरे मुहिँ से रामकु ।। १६३ ।।
रथ गज किछि नाहिँ नाहिँ थाट सैन्य ।
एमन्त शुणि बोइले तहिँ चार गण ।। १६४ ।।
भो देब तुम्भर गदा बाते गले उड़ि ।
अकळित थाट देह होइ भिड़ा भिड़ि ।। १६५ ।।
रहिथिले पर्बतरे देखि अछु आम्भे ।
असुर पुणि पुच्छिला काहिँ गले देबे ।। १६६ ।।

वह पराक्रमी सम्हलकर वहीं रह गया । १५७ सारे के सारे रथ टूटकर चूर-चूर हो गये । नीचे गिरकर कितनी सेना कुचलकर मर गयी । १५८ दानव ने देखा कि पर्वत पर कोई नहीं है । दूत ने मेरे आगे जाकर कैसे कहा ? १५९ किसी को न पाकर दैत्य का क्रोध शान्त हो गया । तब असुराधिप बिलंका लौट आया । १६० उसने सिंहासन के नीचे भी किसी को नहीं देखा, तब दैत्यराज जाकर जगती पर बैठ गया । १६१ दूत लोग उसके समक्ष पहुँच गये । उन्होंने एक-एक करके उसके चरणों की वन्दना की । १६२ उस क्रूर असुर ने उनसे पूछा— मैंने तो राम को पर्वत पर नहीं देखा । १६३ हाथी, घोड़े, फौज-फाटा कुछ भी तो नहीं था । ऐसा सुनकर दूतों ने उत्तर दिया । १६४ हे देव ! सब आपकी गदा की हवा से उड़ गये । अनगिनत सेना देह से देह टकराती हुई पर्वत पर देखकर हम लोग आये थे । तब असुर ने पूछा, देवता लोग कहाँ गये ? १६५-१६६

मोर थाट काहिँ पाइँ एथु पळाइले ।
एमन्त शुणि छामुरे चारे जणाइले ॥ १६७ ॥
भो मणिमा जेते बेळे धरि गदाबर ।
बुलाइले उड़िगले थाट जाक तोर ॥ १६८ ॥
तेतिश कोटि देबता ता संगे उड़िले ।
गगन मार्गरे जाइँ के काहिँ पडिले ॥ १६८ ॥
शुणिण दानब राजा बोलइ रे चारे ।
काहिँ किए अछि खोजि आण मो छामुरे ॥ १७० ॥
मंत्रीकि मोर छामुकु आण जा हकारि ।
शुणि दूत माने तहुँ गले बेग करि ॥ १७१ ॥
जे जहिँ थिले ताहाकु कहिलेक जाइ ।
राजार हकर तुम्भे आस बेग होइ ॥ १७२ ॥
मिळले आसि सकळे नृपति छामुरे ।
दानबर पाद बन्दि बसिले सभारे ॥ १७३ ॥
मंत्रीकि चाहिँ पुछइ असुर राजन ।
कोपे प्रचण्ड गिरिकि कलइँ गमन ॥ १७४ ॥
काहारिकि न देखिलि अइलि बाहुड़ि ।
उबुरिकि जाउ थान्ते मो मुखरे पड़ि ॥ १७५ ॥
मिच्छ मो छामुरे आसि कहिले ए चारे ।
बिचारि एहांकु दण्ड दिअ ए सभारे ॥ १७६ ॥

मेरी सेना यहाँ से क्यों भाग गयी ? ऐसा सुनकर दूतों ने उससे कहा— १६७ हे राजराजेश्वर ! जिस समय आपने गदा पकड़कर घुमायी तभी फ़ौज उड़ गयी । १६८ उनके साथ ही तेंतीस करोड़ देवता भी उड़े तथा आकाश में जाकर कौन जाने कौन कहाँ गिरा ? १६९ यह सुनकर दानवराज बोला, अरे दूतो ! कौन कहाँ है ? हमारे सामने खोज करके ही आओ । १७० मंत्री को हमारे पास बुलाकर ले आओ । यह सुनकर दूत लोग शीघ्र ही वहाँ से चले गये । १७१ जो जहाँ थे, उनसे जाकर कहने लगे कि राजा ने बुलाया है, शीघ्रता से चलो । १७२ सभी राजा के समीप आकर मिले और दानव को चरण-वन्दना करके सभा में बैठ गये । १७३ मंत्री की ओर देखकर असुरों के राजा ने प्रश्न किया । मैं कुपित होकर प्रचण्ड पर्वत पर गया । १७४ किसी को न देखकर मैं लौट आया । मेरे पेट में पड़कर क्या वह बचकर जा सकते थे ? १७५ इन दूतों ने झूठमूठ ही

एमन्त शुणि कहइ मंत्री कल्पासुर ।
मणिमा मिछ नुहइ कहिले जा चार ॥ १७७ ॥
बन पर्बत जे माड़ि रहि थिले थाट ।
पिम्पुड़ि जिबाकु तहिँ न थिला त बाट ॥ १७८ ॥
बड़ प्रतापी अटइ से राम राजन ।
ताहार हस्तरे जेबे थिब शरासन ॥ १७९ ॥
क्षणकरे तिनिपुर पारिब से जिणि ।
बाळी नामे किष्किन्ध्यारे थिला कपिमणि ॥ १८० ॥
बळबन्त पणे ताकु न थिले के सरि ।
लंकार रावण ताकु जुद्धरे न पारि ॥ १८१ ॥
ता संगे मइत्र होइ रहिला जीबन ।
सहस्रशिरा जे तोर प्रथम नन्दन ॥ १८२ ॥
बाळीकि से न पारिला अइलाक हारि ।
तेड़े बड़ बीर गोटा राम धनुधरि ॥ १८३ ॥
एका बाण करे मारि पकाइला जाण ।
संगते घेनि बहुत ऋक्ष कपिगण ॥ १८४ ॥
समुद्ररे बन्ध बांधि लंका देला पोड़ि ।
दशशिरा रावणर बुकु बाणे पोड़ि ॥ १८५ ॥

हमसे आकर कह दिया । इस सभा में विचार करके इन्हें दण्ड दो । १७६ ऐसा सुनकर मंत्री कल्पासुर बोला, हे राजराजेश्वर ! जो भी दूतों ने कहा, वह मिथ्या नहीं है । १७७ सेना बनों और पर्वतों पर भर गयी थी । चींटी तक चलने का स्थान नहीं था । १७८ वह राजा राम अत्यन्त प्रतापी है । यदि उसके हाथ में धनुष-बाण हो तो वह एक क्षण में तीनों लोकों को जीत सकता है । किष्किन्धा में बालि नाम का वानरमणि था । बल-विक्रम में कोई भी उसकी समता में नहीं था । लंका का रावण भी उससे युद्ध करने में सक्षम नहीं था । १७९-१८१ उसने उससे मित्रता करके अपने प्राणों की रक्षा की । तुम्हारा जो पहला बेटा सहस्रकंठ था, वह भी बालि को न हरा सका अपितु हारकर चला आया था । इतने बड़े वीर को राम ने धनुष धारण करके एक ही बाण से मार गिराया । बहुत से वानर, भालुओं को साथ लेकर सागर में पुल बनाकर उसने लंका जला डाली तथा दशकंठ रावण का हृदय बाणों से बींधकर जला डाला । १८२-१८५ कुम्भकर्ण तथा इन्द्रजित आदि जितने भी वीर थे,

कुम्भकर्ण इन्द्रजित आदि जेते बीर।
समस्तंकु मारि लंका कला छार खार॥ १८६॥
बिलंकारे बुलाइला आसि लुहामइ।
अकिळत थाट तार संगरे अछइ॥ १८७॥
आसिथिला तो संगते जुझिबा निमन्ते।
उड़ि गले से समस्ते तोर गदा बाते॥ १८८॥
कि कहिबुँ मणिमा तो गदार पवने।
देवता सहिते आम्भे उड़िलु गगने॥ १८९॥
शुणि लक्षशिरा हसे टह टह होइ।
मोहर प्राकर्म सेहि राम न जाणइ॥ १९०॥
सहस्रशिरा आबर शतशिरा मारि।
दशशिरा त्रिशिराकु संग्रामे संहारि॥ १९१॥
मने गर्ब करि अछि मुहिँ बड़ बीर।
पृथिबीरे न थोइबि गोटिए असुर॥ १९२॥
न जाणइ लक्षशिरा नामे अछि दैत्य।
जाहार प्रताप सहि न पारे आदित्य॥ १९३॥
बीर सिंह अटइ से ब्रह्माण्ड भितरे।
काळ जम बोलइ जे जमर उपरे॥ १९४॥

उन सबको मारकर उसने लंका को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। १८६ उसी ने आकर बिलंका में लोहे की सिरावन चला दी। उसके साथ अनगिनत सेना है। १८७ वह आपके साथ युद्ध करने हेतु आया था। तुम्हारी गदा की हवा से वह सब उड़ गये। १८८ हे राजराजेश्वर! क्या कहें, तुम्हारे गदा की हवा से देवताओं के साथ हम लोग भी आकाश में उड़ गये थे। १८९ यह सुनकर लक्षकंठ ठठाकर हँसने लगा, फिर बोला कि मेरे पराक्रम को वह राम नहीं जानता। १९० सहस्रशिरा तथा शतशिरा को मारकर, रावण और त्रिशिरा को समर में बध करके वह मन में घमण्ड किये है कि मैं बड़ा वीर हूँ। पृथ्वी में एक भी असुर को नहीं छोड़ूँगा। १९१-१९२ उसे ज्ञात नहीं है कि लक्षकंठ नाम का एक दैत्य है, जिसका प्रताप सूर्य भी सहन नहीं कर पाता। १९३ वह ब्रह्माण्ड के भीतर पराक्रमी सिंह है। काल यम भी कहता है कि यह मेरे ऊपर है अर्थात् मुझसे भी शक्तिमान है। १९४ उसे मारने के लिए उसके पास

ताहार पाखकु आसे मारिबा निमन्ते ।
जाणिलि मृत्यु ताहाकु आणि थिला एथे ।। १९५ ।।
एमन्त शुणि बोइले बीरे महाबीरे ।
भो मणिमा कि कहिबु तुम्भर छामुरे ।। १९६ ।।
मन्द कृत्य कल देल ताहांकु उड़ाइ ।
नर बानरंक मांस सुस्वादु अटइ ।। १९७ ।।
बिधाता आणि कर्मकु भेटाइला बेळे ।
मणिमा उड़ाइ देल गदा बाते बेळे ।। १९८ ।।
रुधिर पिइ मांसकु खाइ थान्तु पोड़ि ।
शुणि हसिला असुर हस्त निश मोड़ि ।। १९९ ।।
जय तु हिंगुळा मागो दुर्गति नाशिनी ।
तोहर महिमा घोर महासिन्धु जाणि ।। २०० ।।
अथळ अकूळ पुणि अटइ अपार ।
कळि न पारन्ति ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर ।। २०१ ।।
तोहर जेतेक रूप के पारिब गणि ।
समुद्र बोलि पराये ताहाकु मु मणि ।। २०२ ।।
केवळ तोहर पादे पशिलि शरण ।
दीन चक्रधर दुःख कर निवारण ।। २०३ ।।

आया है। मैं समझ गया कि मृत्यु ही उसे यहाँ ले आयी थी। १९५ ऐसा सुनकर वीर तथा महान पराक्रमी योद्धा बोले, हे राजराजेश्वर ! हम आपसे क्या कहें ? आपने उन्हें उड़ाकर बुरा कार्य किया। नर तथा वानरों का मांस स्वादिष्ट होता है। १९६-१९७ भाग्य से जब कर्म करने का समय आया तो आपने उन्हें गदा की हवा से उड़ा दिया। १९८ हम लोग रक्त पीकर, मांस को भूनकर खाते। यह सुनकर असुर अपने हाथों से मूछें ऐंठते हुए हँसने लगा। १९९ हे दुर्गति का नाश करनेवाली माता हिंगुला ! तुम्हारी जय हो। तुम्हारी महिमा महान सागर-जैसी है। २०० अथाह, अनन्त तथा तट-रहित है। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर भी जिसका पार नहीं पाते। २०१ तुम्हारे जितने रूप हैं, उनकी गणना कौन कर सकता है ? हम तो उसे समुद्र के समान ही मानते हैं। २०२ हम केवल आपके चरणों की शरण में आ गये हैं। आप दीन चक्रधर के दुःखों का निवारण कर दें, अर्थात् दुःख को दूर कर दें। २०३

सर्वसैन्य मृत्यु ओ लक्षशिरार जुद्धे पराजय

पार्बती बोइले तहुँ कि हेला शंकर।
श्रीराम जे उड़ि गले जोजनेक दूर ॥ १ ॥
कि बिचार कले तहुँ कह शूळपाणि।
बड़ कउतुक लागे शुणिबाकु पुणि ॥ २ ॥
एमन्त शुणि बोइले देब देब हर।
प्रचण्ड पर्बते आसि मिळि हनु बीर ॥ ३ ॥
देखिला जे रथ गज किछि तहिं नाहिं।
आश्चर्य्य होइला बीर बिलंकाकु चाहिं ॥ ४ ॥
धन्यरे असुर तोर बळ पराक्रम।
काहिँ गला बिभीषण काहिँ गले राम ॥ ५ ॥
काहिँ गले कपि थाट सुग्रीव अंगद।
काहिँ गले लका थाट नरपति वृन्द ॥ ६ ॥
काहिँ गले श्रीरामर भाइ जे भरत।
एमन्त बोलि कपाळे माइलाक हस्त ॥ ७ ॥
काहाकु न पाइ बीर करुछि रोदन।
एमन्त बेळे मिळिला आसि बिभीषण ॥ ८ ॥
हनु बोइला हे लंकापति थिलु काहिँ।
दानबर गदा बते उड़ि गलि मुहिँ ॥ ९ ॥

समस्त सेना का संहार तथा युद्ध में लक्षशिरा की पराजय

पार्बती जी बोलीं, हे शंकर ! फिर क्या हुआ ? श्रीराम एक योजन दूर उड़ गये, तब क्या बिचार किया ? हे शूलपाणि ! कहिए। मुझे सुनने के लिए बड़ा कौतूहल हो रहा है। १-२ ऐसा सुनकर देवाधिदेव शंकर जी ने कहा कि हनुमान प्रचण्ड पर्वत पर लौट आये। ३ उन्होंने देखा कि वहाँ पर रथ, हाथी कुछ भी नहीं हैं। बिलंका की ओर देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। ४ हे असुर ! तेरा बल-विक्रम धन्य है। विभीषण और श्रीराम कहाँ चले गये ? ५ कपियों के दल, अंगद, सुग्रीव कहाँ चले गये ? लंका की सेना तथा राजा लोग कहाँ चले गये ? ६ श्रीराम के भाई भरत कहाँ चले गये ? ऐसा कहकर उन्होंने हाथों से अपना माथा ठोक लिया। ७ किसी को न पाकर वीर हनुमान रुदन करने लगे। इसी समय विभीषण आकर उनसे मिले। ८ हनुमान बोले,

बिभीषण बोइला मुँ उड़ि गलि हनु ।
बड़ प्रतापी असुर कुळर ए भानु ॥ १० ॥
जेउँ थाट धोटि थिला पृथिबीकि पूरि ।
धन्यरे असुर धन्य तोर गर्भधारी ॥ ११ ॥
गदा बाते उड़ाइलु एड़े बड़ थाट ।
लंकापुर ध्वंसिले जे बण मर्कट ॥ १२ ॥
से तोहर गदाबाते उड़ि गले पुणि ।
त्रइलोक्य ठाकुर जे रघुकुळ मणि ॥ १३ ॥
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड जा लोमे बिराजइ ।
ताहांकु तु गदाबाते देलुरे उड़ाइ ॥ १४ ॥
एमन्ते प्रशंसा कले दैत्यकु बहुत ।
एमन्त बेले मिळिला आसि कपिनाथ ॥ १५ ॥
संगे अछन्ति ताहार जूथपति माने ।
ऋक्ष कपि थाट रुण्ड हेले सेहि स्थाने ॥ १६ ॥
भरत शत्रुघ्न आसि होइले प्रबेश ।
मिळिले आसि सेठारे लंकार राक्षस ॥ १७ ॥
नरपति माने आसि मिळिलेक तहिँ ।
ऋक्ष कपि थाटे पूर्ण हेला पुणि मही ॥ १८ ॥

हे लंकापति! आप कहाँ थे? मैं तो दानव की गदा की हवा से उड़ गया था। ९ विभीषण ने कहा, हनुमान! मैं भी उड़ गया था। यह असुरकुल का प्रतापी सूर्य है। १० जो सेना पृथ्वी पर फैल गयी थी। इतनी विशाल सेना को तूने गदा-वात से उड़ा दिया। हे असुर! तुम धन्य हो। तुम्हारी गर्भधारिणी माता धन्य है। जिन वानरों ने लंकापुर को ध्वस्त कर डाला था। वह भी तुम्हारे गदा-वात से उड़ गये। रघुकुलमणि, तीनों लोकों के नाथ श्रीराम, जिनके रोम-रोम में कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड जड़ित हैं। उन्हें भी तुमने गदा-वात से उड़ा दिया। ११-१४ इस प्रकार दैत्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उसी समय कपिपति सुग्रीव आ पहुँचे। १५ उनके साथ में यूथपति थे। भालू, वानरों के झुंड के झुंड उस स्थान पर आ गये। १६ भरत, शत्रुघ्न भी आकर प्रविष्ट हुए। लंका के राक्षस भी वहाँ आ मिले। १७ राजाओं के दल भी वहीं आ पहुँचे। वानर, भालुओं के दल से पृथ्वी पुनः भर गयी। १८ कोदण्डधारी राम पर्वत पर प्रविष्ट हुए। हे हिमांचलकुमारी! इसके

कोदण्डधर प्रबेश होइले पर्बते ।
हिमबन्त दुलणी गो शुण एथुअन्ते ॥ १९ ॥
चार जाइँ जणाइला शिरे जोड़ि कर ।
भो देब बिलंकाधिप असुर ईश्वर ॥ २० ॥
पुणि राम थाट घेनि बिजय पर्बते ।
लागिछन्ति कपिबळ सिन्धु परिजन्ते ॥ २१ ॥
बृक्ष गिरि बनस्तरे नाहिँ टिके स्थान ।
बिचार करिबा कार्ज बिलंका राजन ॥ २२ ॥
चार गण मुखु शुणि असुराधिराय ।
मंत्रीकि चाहिँ बोलइ कहकि उपाय ॥ २३ ॥
मंत्री बोले थाट घेनि जिबा चाल आम्भे ।
गोड़ाइ मारिबा छाड़ि न देबाटि केभे ॥ २४ ॥
जद्यपि से आसि आम्भपुरे प्रबेशिबे ।
आम्भर जे भेद मुद्रा सबु जाणि जिबे ॥ २५ ॥
आगहुँ शत्रुकु बाट न देबाटि छाड़ि ।
गोटि गोटि धरि देबा पर्बते कचाड़ि ॥ २६ ॥
मंत्रीर कथा नृपति मनकु अइला ।
थाट सजकर बोइलि कोपे आज्ञा देला ॥ २७ ॥
अइले कुजंभ जंघा बीर बेश होइ ।
पाताळकेतु जीमूतकेतु दुइ भाइ ॥ २८ ॥

पश्चात् सुनो । १९ दूत ने हाथों को जोड़कर शिर से लगाकर कहा—हे देव ! बिलंकापति ! हे असुरेश्वर ! राम पुनः दल-बल लेकर पर्वत पर आ पहुँचे । कपिदल सागरपर्यन्त फैल गया है । २०-२१ वन, पर्वत और वृक्षों पर थोड़ा भी स्थान नहीं बचा । हे बिलंकाराजन् ! विचार करके कार्य करें । २२ दूतों के मुख से इस प्रकार सुन बिलकाधिपति ने मंत्री की ओर देखकर कहा कि अब क्या उपाय किया जाए ? २३ मंत्री ने कहा कि चलिए हम लोग भी सेना लेकर चलें । उन्हें खदेड़-खदेड़कर मारेंगे, कभी भी छोड़ेंगे नहीं । २४ यदि वह आकर हमारे नगर में घुस जाएंगे तो वह हमारी सब भेद की बातें जान जाएंगे । २५ आगे बढ़कर शत्रु को मार्ग नहीं छोड़ेंगे । एक-एक को पकड़कर पर्वत पर पछाड़ देंगे । २६ मंत्री की बात राजा के मन में बैठ गयी । उसने कुपित होकर सेना तैयार करने की आज्ञा दी । २७ कुजभ और जंघा वीर-वेश

काळकेतु फाळकेतु सुनखा कुनखा ।
रश्मीकेतु हयग्रीव सुर्मुखा दुर्मुखा ।। २९ ।।
हयमुख गजमुख हेन्ताळ बेताळ ।
शोणितकेतु पिशितकेतु केतुमाळ ।। ३० ।।
दीर्घदन्त बहुदन्त उन्मत्त प्रमत्त ।
शिबामुख सिंहमुख मत्त महामत्त ।। ३१ ।।
जुगान्तक रोगान्तक बीर गिरिकाय ।
मंगळकेतु शिराळकेतु मायाकाय ।। ३२ ।।
जम्ब कुजम्ब शोणितकेतु निशाचर ।
जलोद्भव आदि ए जे भहा महाबीर ।। ३३ ।।
जपा अजपा कुजपा सुजपा ए चारि ।
छामुरे आसि मिळिले अस्त्र शस्त्र धरि ।। ३४ ।।
साजिले असुर थाट बिलका नगरे ।
लक्षशिरा बोलइ से डाकि उच्चस्वरे ।। ३५ ।।
श्रीराम थाटकु मोर थाट जिब बळि ।
आहे पात्र मित्र तुम्भे बेगे जाअ चळि ।। ३६ ।।
बिलंकारे न रहिबे गोटिए असुर ।
असुरी मात्र जगिबे ए बिलंकापुर ।। ३७ ।।
समस्ते आसन्तु सज होइ आम्भे जिबा ।
श्रीरामर थाट मारि आहार करिबा ।। ३८ ।।

ारण कर आ गये । दोनों भाई पातालकेतु और जीमूतकेतु, कालकेतु, ुनखा, सुनखा, रश्मिकेतु, हयग्रीव, सुर्मुखा, दुर्मुखा, हयमुख, गजमुख, न्ताल, बेताल, शोणितकेतु, पिशितकेतु, केतुमाल, दीर्घदन्त, बहुदन्त, उन्मत्त, मत्त, शिवामुख, सिंहमुख, मत्त, महामत्त, युगान्तक, रोगान्तक, पराक्रमी गिरिकाय, मंगलकेतु, शिरालकेतु, मायाकाय, जम्ब, कुजम्ब, निशाचर, ोणितकेतु, वीर और महान पराक्रमी जलोद्भव आदि जो भी थे । ापा, कुजपा, अजपा, सुजपा यह चारों अस्त्र-शस्त्र लेकर सामने आ हुँचे । २८-३४ बिलंकानगर में असुरदल तैयार हो गया । लक्षकंठ बुलाकर उच्च स्वर में कहा— ३५ श्रीराम की सेना से हमारी सेना धिक बलवर है । हे सभासद मित्रो ! तुम शीघ्र ही चले जाओ । ३६ बलंका में एक भी असुर नहीं रहेगा । केवल असुर-स्त्रियाँ ही इस गर की रक्षा करेंगी । ३७ सभी तैयार होकर आ जाओ, हम

मद पिइ आसिथिबे कहिब ताहांकु ।
नर बानरंक मांस मारि खाइबाकु ॥ ३९ ॥
रुधिर पिइ सन्तोष होइबे से आजि ।
मिळिब तांकु उत्तम मद मांस भोजि ॥ ४० ॥
एमन्त घोषणा दिए पुर जाक बुलि ।
रामकु मारिबा पाइँ जिबा आम्भे काळि ॥ ४१ ॥
एमन्त शुणि डगरा पुरे पुरे पशि ।
नागरा देला शुणिण दैत्य होइ खुसि ॥ ४२ ॥
सजहोइ बाहारिले घरद्वार छाड़ि ।
मद खाइ मत्त होइ छाड़ुछन्ति रड़ि ॥ ४३ ॥
धर धर मार मार पड़ुछि चहळ ।
आस आस चाल चाल शुभे महागोळ ॥ ४४ ॥
बाजइ जे बिजिघोष निशाण काहाळि ।
बीर तूर बाद्यपुर पड़इ उछुळि ॥ ४५ ॥
पर्बत उपरे थाइँ शुणिले श्रीराम ।
बोइले असुरे कालि करिबे संग्राम ॥ ४६ ॥
बाद्य नादरे कम्पइ बिलंका नगर ।
बड़ प्रतापी अटइ बळिष्ठ असुर ॥ ४७ ॥

चलेंगे । श्रीराम की सेना को मारकर भोजन करेंगे । ३८ कह देना कि वह सब मद पीकर नर और वानरों का मांस खाने के लिए आवें । ३९ आज वह लोग रक्त पीकर सन्तुष्ट हो जाएंगे । उन्हें उत्तम मद और मांस का भोजन मिलेगा । ४० सारे नगर में घूमकर इस प्रकार की घोषणा करा दो । हम लोग राम को मारने के लिए कल चलेंगे । ४१ इस प्रकार सुनकर मुनादी करनेवाले नगर में घुसे और घर-घर पर नगाड़े बजाकर घोषणा कर दी, जिसे सुनकर दैत्य प्रसन्न हो गये । ४२ वह घर-द्वार छोड़कर तैयार होकर निकल पड़े । मद पीकर उन्मत्त होकर सिंहनाद करने लगे । ४३ पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो का शोर मचने लगा । आओ-आओ, चलो-चलो का कोलाहल सुनाई पड़ता था । ४४ विजय-घोष, निशान, तुरही, तूर्य आदि वीर-वाद्य बजने से गूँज उठ रही थी । ४५ पर्वत के ऊपर से श्रीराम ने शोर सुनकर कहा कि असुर कल युद्ध करेगा । ४६ वाद्य-नाद से बिलंकानगर कम्पित हो रहा था । बलवान असुर अत्यन्त प्रतापी है । ४७ हे विभीषण ! इस समय सोचकर

आहे बिभीषण कह रुथिर बिचार ।
हनु आदि अछ तुम्भे महा महाबीर ।। ४८ ।।
कि बुद्धि करिबि एबे बिचारि ता कह ।
एमन्त शुणि बोलइ पबनर पुअ ।। ४९ ।।
मारिबा राक्षस बळ एक न थोइबा ।
बिलंका नगर जाक पुणि पोड़ि देबा ।। ५० ।।
बिभीषण बोले देब प्रतापी दइत ।
कुम्भकर्ण रावणहुँ महा बळबन्त ।। ५१ ।।
सहस्रशिरा आबर बीर इन्द्रजित ।
अतिकाय आदि थिले जेतेक दुर्दान्त ।। ५२ ।।
बळिष्ठ पणे एठाकु नोहिबेक सरि ।
महाबळबन्त बाळि बानर केशरी ।। ५३ ।।
सुबुहुँ से महाबळी जाण तिनिपुरे ।
से सरि नोहिब पुणि एहाकु समरे ।। ५४ ।।
गदाघाते उड़ाइला एड़े बड़ थाट ।
से बीर संगते जुद्ध करिले मर्कट ।। ५५ ।।
अकारणे मरिबे ए पशु जीब गुड़ा ।
केबळ बन पर्बते पूरि जिबे मड़ा ।। ५६ ।।
अजोध्यारु आसिछन्ति जेते थाट तोर ।
देखिला मात्रके जिबे काळजम पुर ।। ५७ ।।

बताओ । हनुमान आदि तुम लोग अत्यन्त पराक्रमी वीर हो । ४८ क्या उपाय किया जाय, यह बताओ ? ऐसा सुनकर पवनपुत्र हनुमान बोले— ४९ राक्षसदल को मारेंगे । एक को भी नहीं छोड़ेंगे । बिलंकापुर को पुनः जला डालेंगे । ५० विभीषण ने कहा कि प्रतापी दैत्य कुम्भकर्ण और रावण से भी अधिक बलवान है । ५१ सहस्रकंठ, इन्द्रजित् और अतिकाय आदि जितने भी दुर्दान्त दैत्य थे, पराक्रम में इनकी समता का कोई नहीं था । महान पराक्रमी कपिकेशरी बालि, जो तीनों लोकों में सबसे अधिक बलवान था, वह भी युद्ध में इसकी बराबरी का नहीं था । ५२-५४ इतने बड़े दल को इसने गदा की हवा से उड़ा दिया । उस वीर के साथ युद्ध करने से पशु, जीव, वानर अकारण ही मारे जायेंगे । वन, पर्वत केवल शवों से भर जाएगा । ५५-५६ अयोध्या से जितनी भी सेना आपकी आयी है, देखने मात्र से ही वह सब काल के गाल में चली

लंका राक्षसे एहाकु न होइबे सरि।
बिचारि कार्य्य करिबा हेउ चापधारी ॥ ५८ ॥
अकारण मराइबा किम्पाइँ एहांकु।
से माने कि साहाहेबे जुद्धरे तुम्भकु ॥ ५९ ॥
बाछि बाछि रखि सैन्य दिअ पठिआइ।
एमन्त शुणि बोइले रघुकुळ साइँ ॥ ६० ॥
आहे लंकपति जाहा कहिल ता सत।
बिमानकु सुमरिले प्रभु रघुनाथ ॥ ६१ ॥
जाणि से पुष्पक जान शुन्यरे अइला।
प्रचण्ड पर्बते राम पारुशे मिळिला ॥ ६२ ॥
बोइला मो थाट जाक चढ़ि ए बिमाने।
कालिक जुद्ध देखिब रहि तुम्भे शून्ये ॥ ६३ ॥
तहुँ जे जाहा पुरकु जिब सर्बे चळि।
अटन्ति त ए असुरे जाण महाबळि ॥ ६४ ॥
एहांक संगे संग्रामे न पारिब तुम्भे।
एकाके जुद्ध करिबुँ रहि एथे आम्भे ॥ ६५ ॥
आम्भर तुले रहिबे भरत शत्रुघ्न।
बिभीषण जाम्बवान बीर हनुमान ॥ ६६ ॥
नळ नीळ अंगद जे ताहार कुमर।
आबर रहिबे एथे मइत्र आम्भर ॥ ६७ ॥

जाएगी। ५७ लंका के राक्षस भी इसका मुकाबला नहीं कर सकेंगे। हे चापधर! विचारपूर्वक कार्य करें। ५८ इन्हें व्यर्थ ही क्यों मरवाया जाय। यह युद्ध में आपके सहायक कैसे होंगे? ५९ छाँट-छाँटकर सेना रखकर शेष सबको भेज दीजिए। इस प्रकार सुनकर रघुकुल के स्वामी श्रीराम बोले, ६० हे लंकापति, जो तुमने कहा वह सत्य है। प्रभु रघुनाथ ने यान का स्मरण किया। ६१ सोचते ही विमान आकाश में आ पहुँचा और प्रचण्ड पर्वत पर श्रीराम के निकट उतर आया। ६२ श्रीराम ने कहा, मेरी सम्पूर्ण सेना इस विमान में बैठकर आकाश में रहकर कल का युद्ध देखे, फिर वहाँ से सब लोग अपने घर चले जाना। ये असुर अत्यन्त बलवान हैं। ६३-६४ इनके साथ तुम लोग युद्ध नहीं कर सकोगे। यहाँ रहकर हम अकेले ही युद्ध करेंगे। ६५ हमारे पास भरत, शत्रुघ्न रहेंगे। हमारे मित्र विभीषण, जामवन्त, पराक्रमी हनुमान, नल, नील

एहांक भिन्न समस्ते बस हो बिमाने ।
समस्ते रथे बसिले रामंक बचने ।। ६८ ।।
रहिला पुष्पक जान आकाश मार्गरे ।
रामचन्द्र रहिले से पर्बत उपरे ।। ६९ ।।
हनुमान आदि बीर जगिले निर्बन्धे ।
श्रीरामचन्द्र शोइले निश्चिन्तरे निदे ।। ७० ।।
रजनी पाहिला दिग बिरळ दिशिला ।
बिलंका नृपति राति थाउ जे उठिला ।। ७१ ।।
लक्षशिरे लक्षगोटि बान्धिला मुकुट ।
सूर्य्य किरणे दूरकु दिशे झट झट ।। ७२ ।।
बाहुरे जे बीर नेत उड़े फर फर ।
बसिला से बीर जाइँ रथर उपर ।। ७३ ।।
बाहारिले पूर्बे द्वारे बिलंकारु थाट ।
असंख्य असुर सैन्य न मिळइ बाट ।। ७४ ।।
बोइलाक दैत्यपति मंत्रींकि अनाइँ ।
रहिल बिलंकापुर जगुआळ होइ ।। ७५ ।।
शाळक गण आबर रहिबे श्वसुर ।
जपा अजपा आदि ए चारि गोटि बीर ।। ७६ ।।

तथा तारा-पुत्र अंगद भी यहीं रहेंगे । ६६-६७ इनके अतिरिक्त सभी विमान में बैठ जाओ । सब लोग राम के कहने से रथ पर बैठ गये । ६८ पुष्पक विमान आकाश में जाकर स्थित हो गया । रामचन्द्र जी पर्वत के ऊपर चले गये । ६९ हनुमान आदि वीर यत्न से पहरा देते रहे । श्रीराम निश्चिन्त होकर सो गये । ७० रात्रि समाप्त हो गयी, दिशाएँ छिटकी दिखने लगीं । बिलंकानरेश रात्रि रहते हुए उठ पड़ा । ७१ उसने लाख शिरों पर लाख मुकुट बाँध लिये, जिनसे सूर्य-जैसी चमचमाती किरणें दूर से दिखायी देती थीं । ७२ बाहुओं पर वीरनेत फरफराकर उड़ रहे थे । फिर वह वीर रथ के ऊपर जा बैठा । ७३ बिलंका के पूर्वद्वार से दल-बल बाहर निकला । असंख्य असुरों की सेना थी । मार्ग नहीं मिल रहा था । ७४ दैत्यपति ने मंत्री की ओर देखकर कहा, तुम बिलंका के रक्षक बनकर रहो । ७५ हमारे साले तथा ससुर भी रहेंगे । जपा, अजपा आदि चारों वीर अस्त्र-शस्त्र लेकर निरन्तर हमारे नगर की

एमाने जगिबे करे अस्त्र शस्त्र धरि।
निर्बन्धरे रखिथिबे पुरकु मोहरि ॥ ७७ ॥
जम्ब कुजम्ब आदि जे बीर सेनापति।
चारि द्वारे जगिथिबे जाण दिबाराति ॥ ७८ ॥
अन्तःपुर हाटबाट बजार जेतेक।
जत्न करि रखिथिबे मोहर शाळक ॥ ७९ ॥
भण्डार घरकु जगि थिब तुम्भे मोर।
राणी हंसपुर जगि रहिबे श्वशुर ॥ ८० ॥
एमन्त कहि रथकु चळाइला आगे।
असुर थाट गमन्ति तार पछ भागे ॥ ८१ ॥
दिशन्ति से गिरि प्राय महाभयंकर।
पाद भरे पृथिबी जे हुए थरहर ॥ ८२ ॥
अठर जोजन माड़ि चालुछन्ति दैत्य।
मद खाइ मत्त होइ मातिछन्ति नृत्ये ॥ ८३ ॥
कुदन्ति धामन्ति केहि गर्जन छाड़न्ति।
बाहास्फोट मारि केहि शून्यरे उठन्ति ॥ ८४ ॥
निर्भय से निरपेक्ष निदारुण अति।
निशाचर थाट देखि कहे लंकपति ॥ ८५ ॥
भो प्रभु देख आसन्ति असुरे निर्भया।
बढ़ाइ अछन्ति देख गिरि प्राय काया ॥ ८६ ॥

रक्षा करेंगे। ७६-७७ जम्ब, कुजम्ब आदि चारों पराक्रमी सेनापति दिन-रात चारों द्वारों की रक्षा करेंगे। ७८ अन्तःपुर तथा जितने भी हाट, बाजार तथा मार्ग हैं, उन्हें मेरे साले यत्नपूर्वक देखते रहेंगे। ७९ तुम मेरे भण्डार-घर की रक्षा करना। रनिवास की रक्षा ससुर करते रहेंगे। ८० ऐसा कहकर उसने रथ आगे को बढ़ा दिया। उसके पीछे असुरदल चल रहा था। ८१ वह पर्वत के समान अत्यन्त भयंकर दिखायी दे रहे थे। उनके पद-भार से पृथ्वी थर्रा रही थी। ८२ अट्ठारह योजन पृथ्वी दबाकर दैत्य चल रहे थे। मद पीकर, उन्मत्त होकर, नृत्य में मस्त हो रहे थे। ८३ कोई उछलता, कोई दौड़ता और कोई गर्जना कर रहा था। बाँहों को हिलाकर कई आकाश में उठ रहे थे। ८४ वह निडर, निरपेक्ष तथा अत्यन्त क्रूर थे। निशाचरों की सेना को देखकर लंकापति विभीषण ने कहा— ८५ हे प्रभु! निडर असुर

बिकटाळ मुख देख दिशे भयंकर ।
बेगे उठ धनु धर बिलम्ब न कर ।। ८७ ।।
चाहिँ देले गिरि शिखे रहि चापधारी ।
माड़ि आसुछन्ति जेन्हे समुद्र लहरी ।। ८८ ।।
अकळित बळ तार न जाइ कळना ।
कोदण्डरे गुण देले चाहिँ दैत्यसेना ।। ८९ ।।
बिभीषण धनु शर धइलेक बेगे ।
भरत शत्रुघ्न धनु धइलेक रागे ।। ९० ।।
लक्षशिरा रथ चढ़ि होइअछि आग ।
पर्बतु ओल्हाइ राम गले होइ बेग ।। ९१ ।।
ताहांक पछे अछन्ति हनु आदि बीरे ।
श्रीराम प्रबेश हेले दानब छामुरे ।। ९२ ।।
कोदण्ड टंकारि प्रभु चढ़ाइले गुण ।
से धनु टंकार ध्वनि उठे घन घन ।। ९३ ।।
आकाश पाताळ पृथ्वी घोटिला जे ध्वनि ।
थर हर होइ भये कम्पिला मेदिनी ।। ९४ ।।
लहरी प्रमाणे माड़ि आसुथिले थाट ।
बन्ध देले पाणि जेन्हे न पाइण बाट ।। ९५ ।।

लोग अपने शरीर को पहाड़ की भाँति विशाल बनाकर आ रहे हैं। इन्हें देखिए। ८६ इनके बिकराल मुख बड़े डरावने लग रहे हैं। आप धनुष-बाण लेकर शीघ्र ही उठें। देर न करें। ८७ गिरि-शिखर पर स्थित धनुर्धारी राम ने उनकी ओर दृष्टि डाली। वह सागर की लहरों के समान बढ़े चले आ रहे थे। ८८ उसकी सेना असंख्य थी, जिसकी गिनती नहीं की जा सकती थी। श्रीराम ने दैत्यों की सेना को देखकर कोदण्ड पर प्रत्यञ्चा चढ़ा दी। ८९ विभीषण ने तुरन्त ही धनुष-बाण उठा लिये। भरत, शत्रुघ्न ने भी कुपित होकर धनुष धारण कर लिये। ९० रथ पर चढ़ा हुआ लक्षकंठ आगे हो गया था। श्रीराम वेग के साथ पर्वत पर से उतर आये। ९१ उनके पीछे हनुमान आदि वीर थे। श्रीराम दानव के समक्ष जा पहुँचे। ९२ कोदण्ड पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर प्रभु राम ने टंकार दी। उस धनुष से घनघोर टंकार की ध्वनि निकल रही थी। ९३ आकाश, पाताल और भूमण्डल में वह ध्वनि भर गयी। पृथ्वी भयभीत होकर थर-थर काँपने लगी। ९४ सेना लहरों के समान बढ़ती चली आ

रहि जाए स्थिर होइ रहिले तेसन ।
घृत काष्ठ पाइ जळथिबा हुताशन ॥ ९६ ॥
पाणि पकाइले जेन्हे शिखा पड़े लइँ ।
टंकार शबद शुणि महाभय पाइ ॥ ९७ ॥
चमकि पड़िले देह शीतेइ पड़िला ।
छाति दक दक हेला सर्बाङ्ग थरिला ॥ ९८ ॥
अस्त्र शस्त्र हस्तु खसि पड़िलाक तळे ।
कि शबद होइ कहि रहिले सकळे ॥ ९९ ॥
रथे बसि आसुथिला बीर लक्षशिरा ।
घन घन कम्पिलाक जहुँ बसुन्धरा ॥ १०० ॥
न चळिला रथ गोटि पड़िला दोहलि ।
रथर उपरे थाइँ दैत्य गला हलि ॥ १०१ ॥
टंकार शबद जाइँ पशिला ता कर्णे ।
बधिर पराय होइ रहि किछि क्षणे ॥ १०२ ॥
चाहिँ देला आगे बिजे राम धनुर्द्धर ।
कोदण्डकु टंकारन्ति धरि बारम्बार ॥ १०३ ॥
रथरे थाइ बोइला प्रतापी दइत ।
आरे रे मानव तोर मरण नियत । १०४ ॥

रही थी । जैसे बाँध बाँध देने से पानी को रास्ता नहीं मिल पाता, वह स्थिर हो जाता है, उसी प्रकार वह रुक गयी । जैसे घी और काठ को पाकर अग्नि प्रज्वलित हो जाती है; परन्तु पानी पड़ जाने से अग्नि-शिखा मन्द हो जाती है । उसी प्रकार टंकार शब्द सुनकर अत्यन्त भयभीत होकर वह सब चौंक पड़े । उनके शरीर ठण्डे पड़ गये । छाती धक्-धक् करने लगी और सारा शरीर काँपने लगा । ९५-९८ हाथ से अस्त्र-शस्त्र छिटककर जमीन पर गिर गये । 'यह कैसा शब्द है ?' कहकर सभी रुक गये । ९९ पराक्रमी लक्षकंठ रथ पर बैठा आ रहा था । जब पृथ्वी जोर से काँपने लगी तब रथ नहीं चल पाया और धचके खाने लगा । रथ पर बैठा हुआ दैत्य हिल गया । १००-१०१ टंकार का शब्द उसके कानों में जा घुसा । वह कुछ क्षणों के लिए बहरा-सा हो गया । १०२ उसने सामने धनुर्धारी राम को देखा जो कोदण्ड लेकर बार-बार टंकार कर रहे थे । १०३ रथ से ही प्रतापी दैत्य ने कहा, अरे मानव ! तेरी मृत्यु निश्चित है । १०४ इसीलिए तुझे काल खींचकर

तेणु काळ तोते एथे आणिछि कढ़ाइ ।
तो निमन्ते दिन राति निद मोते नाहिँ ।। १०५ ।।
खोजुथिलि दइब ता भेटाइला आणि ।
पड़िलुणि मोर मुखे जिबु काहिँ पुणि ।। १०६ ।।
सिंह आगुँ शशा अबा पळाइ पारइ ।
मार्जार मुखरु अबा मूषा उबुरइ ।। १०७ ।।
बाघ हाबुड़रु अबा जाइ पारे छेळि ।
साप हाबुड़रु जाइ पारइ बेंगुली ।। १०८ ।।
नेउळ आगरु अबा जाइ पारे साप ।
मो मुखु रखिबु आजि आसि केउँ बाप ।। १०९ ।।
मुँ घरे न थिले तुहि पशि मोर पुरे ।
पुत्र नाति सहित रे मारि सबंशरे ।। ११० ।।
बुलाइलु ए बिलंकापुरे लुहामइ ।
एमन्त बोलिण कोपे दानब गर्जइ ।। १११ ।।
श्रीराम बोइले किम्पा गर्जुरे दानब ।
एहि क्षणि जम तोते बान्धि घेनि जिब ।। ११२ ।।
गर्जिबे देबता माने क्षणे हुअ स्थिर ।
गर्ब करु बहि सिना लक्षे गोटा शिर ।। ११३ ।।

ले आया है। तेरे लिए ही मुझे रात-दिन नींद नहीं आती थी। १०५ मैं खोजा करता था। भाग्य ने तुझे आन मिलाया। अब तू मेरे मुख में पड़ गया है। बचकर कहाँ जाएगा? १०६ सिंह के सामने से क्या खरगोश भाग सकता है? क्या बिल्ली के मुख से चूहा बच सकता है? १०७ व्याघ्र की पकड़ से क्या बकरी जा सकती है? साँप की दबोच से क्या मेढकी जा सकती है? १०८ क्या नेवले के आगे से सर्प भाग सकता है? आज कौन सा बाप आकर मेरे मुख से तेरी रक्षा करेगा? १०९ मेरे घर में न रहने पर तूने मेरे नगर में घुसकर वंश-सहित मेरे पुत्र तथा नातियों को मार डाला है। ११० इस बिलंकानगर में तूने लोहे की सिरावन चला दी। इस प्रकार कहते हुए दैत्य क्रोध से गर्जन करने लगा। १११ श्रीराम बोले, अरे दानव! क्यों गरज रहा है? इसी समय यम तुझे बाँधकर ले जाएगा। ११२ एक क्षण रुक जा, अभी देवता लोग गर्जन करेंगे। लाख शिर धारण करके तू घमण्ड कर रहा है। ११३ तेरे शिर-रूपी बकरी के झुण्ड के लिए मेरा बाण

तो मुण्ड छाग पलकु मो नाराच बाघ ।
रुधिर पिइब मारि मने अछि राग ।। ११४ ।।
एमन्त शुणि दानब कोपे परज्वळि ।
लक्ष हस्ते लक्ष धनु धरि महाबळि ।। ११५ ।।
छाइ देला गगनकु नाराचर जाळे ।
जेसने कि जलधारा पड़े बृष्टि काळे ।। ११६ ।।
अत्यन्त भाबे समर बेळुँ बेळ हेला ।
बाण घाते पृथिबि जे कषण लभिला ।। ११७ ।।
कहि नुहेँ से समर कथा बदनरे ।
श्रीराम जुझन्ति लक्षशिरार संगरे ।। ११८ ।।
आदित्यकु मेघ जेन्हे दिअइ घोड़ाइ ।
तेसन अदृश्य हेले प्रभु रघुसाइँ ।। ११९ ।।
देखि हाहाकार कले हनु आदि बीरे ।
देबे देखि आचम्बित रहि आकाशरे ।। १२० ।।
रोमे रोमे श्री रामंक अंग भेदे बाण ।
देखि महाकोप कले रघुकुळ राण ।। १२१ ।।
चाहुँ चाहुँ बिश्वमूर्त्ति धइलेक प्रभु ।
मस्तकरे बिराजन्ति महादेव शम्भु ।। १२२ ।।

व्याघ्र के समान है, जो कुपित हो गया है और मारकर रक्त का पान करेगा । ११४ ऐसा सुनकर दानव क्रोध से प्रज्वलित हो गया । उस महान पराक्रमी दानव ने लाख हाथों में धनुष लेकर बाणों से आकाश को शर-जाल से छा दिया । वर्षाकाल की जलधारा के समान बाणों की वर्षा हो रही थी । ११५-११६ समय समय पर तीव्रतर भाव से संघर्ष बढ़ा । शराघातों से पृथ्वी का कष्ट बढ़ गया । ११७ उस युद्ध का वर्णन मुख से नहीं हो सकता । श्रीराम लक्षकंठ के साथ संग्राम कर रहे थे । ११८ जैसे बादल सूर्य को छिपा लेता है, उसी प्रकार रघुकुल के स्वामी श्रीराम बाणों के कारण अदृश्य हो गये । ११९ यह देखकर हनुमान आदि वीर हाहाकार करने लगे । आकाश से देखकर देवता आश्चर्य में पड़ गये । १२० श्रीराम के अंग के रोम-रोम बाणों से बींध गये । यह देखकर रघुकुल के नायक श्रीराम बहुत कुपित हो गये । १२१ देखते ही देखते उन्होंने विराट रूप धारण किया । उनके मस्तक पर भगवान शंकर विराजमान थे । १२२ उनके असंख्य नेत्र कोटि-कोटि

कोटि कोटि सूर्य्य निन्दे असंख्य नयन ।
असंख्य जे शिर बाहु असंख्य चरण ।। १२३ ।।
चउद ब्रह्माण्ड धोटि अछि रूप गोटि ।
महाभयंकर रूप भयंकर पाटि ।। १२४ ।।
देखि दानबर करुँ खसि पड़े धनु ।
बिश्वरूप देखि मने बिचारइ हनु ।। १२५ ।।
धन्य मोर पिता माता धन्य मोर जन्म ।
धन्य मोर हेला आजि ए बेनि नयन ।। १२६ ।।
देखिलि मुँ प्रभुंकर बिराट मूरति ।
एहा कहि कर जोड़ि करइ जे स्तुति ।। १२७ ।।
हनु बिना काहारिकि न दिशइ रूप ।
देखि देबे भय कले श्रीरामंक कोप ।। १२८ ।।
निश्चय प्रळय हेब न रहिब मही ।
लक्षशिरा रथपरे पड़े मुर्च्छा जाइ ।। १२९ ।।
पुणि सौम्य रूप प्रभु धइले तक्षणे ।
चेता पाइ दानव जे मने मने गुणे ।। १३० ।।
नुहइ ए सान पुणि नुहइ इतर ।
एहाकु जे जिणिब से बोलाइब बीर ।। १३१ ।।

सूर्यों की निन्दा कर रहे थे। उनके अगणित चरण और भुजाएँ थीं। १२३ उनका एक रूप चौदह ब्रह्माण्डों में छा गया था। उनका रूप अत्यन्त डरावना और उनका मुख भयंकर था। १२४ यह देखकर दानव के हाथों से धनुष गिर पड़ा। विराट स्वरूप देखकर हनुमान विचार करने लगे— १२५ मेरे पिता-माता धन्य हैं। मेरा जन्म धन्य है। हमारे यह दोनों नेत्र आज धन्य हो गये। १२६ मैंने भगवान के विराट रूप का आज दर्शन कर लिया। ऐसा कहकर वह हाथ जोड़कर स्तुति करने लगे। १२७ हनुमान को छोड़कर वह रूप किसी को दिखायी नहीं दे रहा था। श्रीराम का क्रोध देखकर देवता भयभीत हो गये। १२८ निश्चित रूप से प्रलय हो जाएगा। पृथ्वी नहीं बचेगी। लक्षकंठ रथ पर मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। १२९ भगवान राम ने पुनः सौम्य रूप धारण कर लिया। चेतना लौटने पर दानव अपने मन में सोचने लगा। १३० यह छोटा नहीं है। यह अन्य भी नहीं है। इसे जो सर्प्रा पाएगा, वह वीर कहा जाएगा। १३१ ऐसा सोचने के समय

हसिलाक टह टह होइ बीरमणि ।
श्रीरामंक मुख चाहिँ बोले शिर झुणि ॥ २०५ ॥
आरे मानवा तोर पूरिलाटि काळ ।
आरे रे मानवा जमकरे तोर बाळ ॥ २०६ ॥
आरे रे मानवा तोर पिइबि रुधिर ।
आरे रे मानबा फेरि जिबुकि तु घर ॥ २०७ ॥
नुहइ मुँ सप्तशिरा त्रिशिरा आबर ।
सहस्रशिरा पराये मणुकि पामर ॥ २०८ ॥
मुहिँ त निशस्त्र तुहि अटु शस्त्रधारी ।
बिन्धु किना दिन राति तु नाराच धरि ॥ २०९ ॥
जेते तोते शिखाइछि गुरु जे तोहर ।
करु कि ना ताहा सबु मो देहे प्रहार ॥ २१० ॥
तुम्हे दशजण मुहिँ अटे एका जणे ।
परखिबा तुम्भ आम्भ बळ आजि रणे ॥ २११ ॥
धाइंला एमन्त कहि बदन बिस्तारि ।
दिशे एक शैळे लक्ष गुहा थिला परि ॥ २१२ ॥
गरजन घातेपुर पकाउछि भांगि ।
श्रीराम मारन्ति शर बेळु बेळ रागि ॥ २१३ ॥

हँस पड़ा। श्रीराम के मुख की ओर ताककर शिर हिलाते हुए वह बोला, अरे मानव ! तेरा समय पूर्ण हो गया। अरे मानव ! तेरे बाल यमराज के हाथों में हैं। २०५-२०६ अरे मानव ! मैं तेरा खून पी जाऊँगा ! तू क्या बचकर घर जा सकेगा। २०७ मैं सप्तशिरा तथा त्रिशिरा नहीं हूँ। अरे नीच ! तू क्या मुझे सहस्रकण्ठ के समान समझ रहा है। २०८ मैं शस्त्र-विहीन हूँ और तू शस्त्रधारी है। तू रातोदिन क्यों न बाण मारता रहे। तेरे गुरु ने तुझे जितना भी सिखाया हो, उन सबका प्रहार मेरे शरीर पर करता रहे। तू दश जनों से है। मैं एकाकी हूँ। पर आज युद्ध में हमारे-तुम्हारे बल की परख होगी। २०९-२११ ऐसा कहकर वह मुख फैलाकर दौड़ा। लगता था जैसे एक पर्वत पर एक लाख गुफायें हों। २१२ गर्जन के आघात से वह नगर डालता था। समय-समय पर कुपित होकर श्रीराम बाण मार रहे तोड़े थे। २१३ वर्षाऋतु में जैसे जल बरसता है उसी प्रकार धनुर्धारी

कंकड़ा मासरे जळ बरषिला परि ।
शरबृष्टि करुछन्ति प्रभु चापधारी ।। २१४ ।।
बिभीषण शत्रुघन भरत ए तिनि ।
बिन्धुछन्ति धनु धरि मेघवृष्टि जाणि ।। २१५ ।।
अनुक्षणे बाण पड़े दानब उपरे ।
जेसने करका पड़े शइळ शिखरे ।। २१६ ।।
सात दिन सात राति नाहिँ ना बिश्राम ।
नीळ बाण भुज बाण माइले श्रीराम ।। २१७ ।।
पाशुपत ब्रह्मशर ब्रह्मशिरा पुण ।
बाबल जे मन भेदी सम्मोहन बाण ।। २१८ ।।
काळान्तक जुगान्तक इन्द्र अग्नि शर ।
शूळ शकति मुषळ तोमर मुद्गर ।। २१९ ।।
पवनास्त्र बरुणास्त्र अस्त्र कृतान्तक ।
बइष्णवी चक्र चन्द्र सूर्य्य आवर्त्तक ।। २२० ।।
कुन्त जष्टि एक मुना द्विमुना त्रिमुना ।
नागपाश काळपाश बज्र सूचीमुना ।। २२१ ।।
देवशर नागशर गन्धर्वक शर ।
मारुछन्ति अनुक्षणे प्रभु रघुवीर ।। २२२ ।।
दानब रहिछि जुद्धे महागिरि प्राय ।
चारि बीर धनुर्द्धर जगते अजेय ।। २२३ ।।

श्रीराम बाणों की वर्षा कर रहे थे । २१४ विभीषण, शत्रुघ्न तथा भरत यह तीनों धनुष धारण करके जल-वर्षा के समान बाण-वर्षा कर रहे थे । २१५ प्रतिक्षण दानव के समान ऊपर बाण गिर रहे थे । जिस प्रकार पर्वत के शिखर पर ओले गिरते हैं । २१६ श्रीराम ने नील बाण तथा भुजबाण छोड़े । सात दिन और सात रात तक बिश्राम नहीं मिला । २१७ भगवान राघव प्रतिक्षण पाशुपत, ब्रह्मशर, ब्रह्मशिरा, मन-भेदी, सम्मोहन बाण, बाबल, कालान्तक, युगान्तक, इन्द्रशर, अग्निशर, शूल, शक्ति, मूषल, तोमर, मुग्दर, पवनास्त्र, वरुणास्त्र, कृतान्तकास्त्र, वैष्णवी चक्र, चन्द्र-सूर्य-आवर्तक कुन्त, यष्टि, एक फल वाले, दो और तीन फलों वाले बाण, नागपाश, कालपाश, वज्र, सूचीनोक, देवशर, नागशर, गन्धर्व बाणों से प्रहार कर रहे थे । २१८-२२२ युद्ध में दानव महान पर्वत-सा टिका था । चार पराक्रमी धनुर्धर, जो संसार में अजेय हैं, वह सात दिन, सात रात

सात दिन सात राति बाण बिन्धि बिन्धि ।
हात न चळिला शर नपारि से सन्धि ॥ २२४ ॥
कपि बीरे तरु शिळा बरषन्ति आणि ।
करका पड़ि पर्बते हुए जेन्हे पाणि ॥ २२५ ॥
तेसन दानब देहे पड़ि हुए चूना ।
बज्रहुँ कठिन अटे दनुजर सेन्हा ॥ २२६ ॥
आश्चर्य्य होइले देखि शून्ये देबगण ।
बोइले त हीराठारु ए असुर टाण ॥ २२७ ॥
केमन्ते मरिब एहि दैत्य महाबळी ।
एमन्त भाबन्ति स्वर्गे देवताए मिळि ॥ २२८ ॥
देखि महाभय कले हनु आदिबीरे ।
महाबळबन्त दैत्य गोटाए महीरे ॥ २२९ ॥
एहा सम बीर जणे देखि नाहुँ काहिँ ।
केमन्त मरिब दैत्य बुद्धि दिशु नाहिँ ॥ २३० ॥
बोइलाक लक्षशिरा उच्चे हसि हसि ।
निलठा पणरे तुम्भे जुद्ध कर आसि ॥ २३१ ॥
जेउं बीर गदा बाते उड़ाइण देला ।
तार बळ तुम्भंकुरे जणा कि न गला ॥ २३२ ॥

बाण चला-चलाकर थक गये। उनके हाथ नहीं चल रहे थे। वह बाणों का सन्धान नहीं कर पा रहे थे। २२३-२२४ पराक्रमी वानर ला-लाकर वृक्ष और शिलाओं की वर्षा कर रहे थे। परन्तु वह सब पर्वत पर गिरकर ओले के समान पानी-पानी हुए जा रहे थे। २२५ उसी प्रकार दानव के शरीर पर वह सब गिरकर चूर-चूर होते जा रहे थे। दानव का अंग वज्र से भी अधिक कठोर था। २२६ आकाश से देखकर देवता लोग चकित रह गये तथा कहने लगे कि दैत्य हीरा से भी अधिक कठोर है। २२७ यह महान बलशाली दैत्य कैसे मरेगा। देवता मिलकर स्वर्ग में यही विचार करने लगे। २२८ हनुमान आदि वीरों को यह देखकर बड़ा भय लगने लगा। पृथ्वी पर यह दैत्य एक महान बलशाली है। २२९ इसके समान वीर पुरुष कहीं भी नहीं दिखाई दिया। दैत्य किस प्रकार से मरेगा! कोई उपाय ही नहीं दिख रहा। २३० लक्षकण्ठ ने उच्च स्वर में हँसते-हँसते कहा कि निठल्लेपन से आकर तुम युद्ध कर रहे हो। २३१ जिस वीर ने गदा की हवा से उड़ा दिया उसका बल तुम

छार नर बानर त अट नीच जाति ।
मेरु पर्बतकु ढेळा मारुछ दुर्मति ॥ २३३ ॥
चन्द्रमाकु धरिबाकु बढ़ाउछ हात ।
सूचीमुने टाळुछरे महत पर्बत ॥ २३४ ॥
सामान्य राक्षस रणे मारि गोटा केते ।
मन बढ़िजाइ अछि आकाश पर्य्यन्ते ॥ २३५ ॥
साहस बळिबा हेतु मो संगते जुझ ।
मोहर बिक्रम बळ केते एबे बुझ ॥ २३६ ॥
एहा कहि धाइँला से करि गरजन ।
चापोड़के सुग्रीवकु कला अचेतन ॥ २३७ ॥
अंगदकु गोइठाए माइला निठाइ ।
तारार नन्दन पड़े अचेतन होइ ॥ २३८ ॥
नळकु नोळ उपरे नेइ कचाड़िला ।
जाम्बव उपरे कोपे बिधाए मारिला ॥ २३९ ॥
चेता बूड़िगला पाइ बिषम आघात ।
देखिला जे आगे अछि बीर हनुमन्त ॥ २४० ॥
ताहाकु धरिबा पाइँ धामन्ते असुर ।
भये पच्छघुञ्चा देले पबन कुमर ॥ २४१ ॥

लोगों की समझ में नहीं आया । २३२ तुम तो तुच्छ जाति के नर और वानर हो । अरे दुर्बुद्धि ! मेरु पर्वत पर ढेला मार रहे हो । २३३ चन्द्रमा को पकड़ने के लिए हाथ बड़ा रहे हो । विशाल पर्वत को सुई की नोक से हिला रहे हो । २३४ युद्ध में कुछ एक साधारण राक्षसों को मारकर नभ पर्यन्त तुम्हारा मन बढ़ गया है । २३५ साहस बढ़ाने के लिए हमसे जूझ रहे हो । अब समझो कि हमारा बल और विक्रम कितना है । २३६ ऐसा कहकर वह गर्जना करते हुए दौड़ा और एक चपेटे में ही उसने सुग्रीव को चेतनाशून्य कर दिया । २३७ अंगद को ताककर घेंचा मारा जिससे तारापुत्र मूर्च्छित होकर गिर पड़ा । २३८ नल को लेकर नील के ऊपर दे पटका तथा कुपित होकर उसने जामवन्त को एक मुक्का मारा । २३९ कठोर आघात पाकर उसकी चेतना लुप्त हो गई । उसने आगे पराक्रमी हनुमान को देखा । २४० उन्हें पकड़ने के लिए दौड़ते हुए असुर के भय से पवननन्दन पीछे हट गये । २४१ तब दानव दौड़कर

रामंक पाखकु गला दनुज जे धाइँ ।
पच्छघुञ्चा देले डरे प्रभु रघुसाइँ ॥ २४२ ॥
रामंक हनु हटिबार देखि विभीषण ।
पळाइला धनुशर धरि छाड़ि रण ॥ २४३ ॥
शत्रुघन भरत ए दुहेँ गले हटि ।
पळान्ति ए पाञ्चे दैत्य जाउछि पाछोटि ॥ २४४ ॥
सहस्र जोजन जाए गोड़ाइला दैत्य ।
देखि महाकोप भरे कैकेयीर सुत ॥ २४५ ॥
लेउटि धनुकु धरि बिन्धिलेक बाण ।
रह रह बोलि उच्चे डाकिकरि पुण ॥ २४६ ॥
केणिकि जाउछ कर मो संगे समर ।
पठाइबि एहि क्षणि तोते जमघर ॥ २४७ ॥
एहाकहि टंकारिले बार बार धनु ।
शुणिण एमन्त बाणी बहुशिरा सुनु ॥ २४८ ॥
जष्टि प्रहारिले जेन्हे लेउटइ अहि ।
तेसन से लेउटिला न पारिण सहि ॥ २४९ ॥
भरत रहिबा देखि रहिले समस्ते ।
बिश्वमूर्त्ति धरि हनु अइला तुरिते ॥ २५० ॥
शतेजूण जाए तार बढ़ि अछि काय ।
दिशन्ति से भयंकर महागिरि प्राय ॥ २५१ ॥

राम के समीप गया । भय के कारण प्रभू रघुनाथ जी भी पीछे हट गये । २४२ राम तथा हनुमान को पीछे हटा देखकर विभीषण धनुष-बाण लिये रण छोड़कर भाग गया । २४३ भरत और शत्रुघ्न भी दोनों हट गये । यह पाँचों भागे जा रहे थे और दैत्य पीछा करते हुए जा रहा था । २४४ दैत्य ने उन्हें एक हजार योजन पर्यन्त खदेड़ा । यह देखकर कैकेयी-नन्दन भरत को बड़ा क्रोध भर आया । २४५ उन्होंने पलटकर धनुष लेकर बाण चला दिया । ठहर ! ठहर ! कहते हुए उच्च स्वर में उन्होंने कहा, अरे ! कहाँ जा रहा है ? इसी क्षण तुझे यमपुर भेज रहा हूँ । २४६-२४७ यह कहते हुए उन्होंने बारम्बार धनुष पर टंकार दी । ऐसा सुनकर बहुशिरानन्दन छड़ी से मारे हुए सर्प की भाँति सहन न करते हुए लौट पड़ा । २४८-२४९ भरत को रुका देखकर सभी ठहर गये । विराट् रूप धारण करके हनुमान तुरन्त आ गये । २५० उनका

रोसकरे पर्बतेक वान्धि आसे घेनि ।
महाबिश्वमूर्त्ति धरि अछइ पावनि ॥ २५२ ॥
राक्षसकु पर्बतरे पकाइला पोति ।
हनुमानर ए कर्म देखि दैत्यपति ॥ २५३ ॥
बोइला बानर धन्य तोर पिता माता ।
धन्य धन्य बीर तू रे अटु बळबन्ता ॥ २५४ ॥
एहा कहि गिरि जाक छिड़ाउ पकाइ ।
दुइ लक्ष हस्ते धरे हनुकु से जाइ ॥ २५५ ॥
दुइ हस्ते हनु ताकु धइला साउँटि ।
दुहेँ जाक हेले मुण्डे मुण्ड पिटापिटि ॥ २५६ ॥
धरा धरि होइ तळे गले दुहेँ पड़ि ।
घड़िए पर्य्यन्ते दुहेँ हेले गड़ा गड़ि ॥ २५७ ॥
राक्षसकु तळे पाड़ि माड़ि बसे हनु ।
उदय गिरिरे उदे हेले किबा भानु ॥ २५८ ॥
तेसन पबन सुत तेज बिराजइ ।
दानब छातिरे बसि बिधा प्रहारइ ॥ २५९ ॥
पर्बतरे बज्राघात प्राय उठे ध्वनि ।
देखि राम प्रशंसन्ति धन्य तू पावनि ॥ २६० ॥

शरीर सौ योजन का हो गया था। वह अत्यन्त भयानक पर्वत के समान दिख रहे थे। २५१ कुपित हुए एक पर्वत लेकर आते हुए पवननन्दन ने विशाल रूप धारण कर रखा था। २५२ उन्होंने राक्षस को पर्वत से तोप दिया था। हनुमान के इस कार्य को देखकर दैत्यराज ने कहा, हे वानर! तू धन्य है। तेरे माता-पिता धन्य हैं। अरे वीर! तू बलवान है। २५३-२५४ यह कहकर उसने पर्वत को तोड़ फेंका और जाकर अपनी दो लाख भुजाओं से हनुमान को पकड़ लिया। दोनों एक-दूसरे पर शिरों से प्रहार करने लगे। २५५-२५६ धर-पकड़ करते हुए दोनों गिर पड़े। एक घड़ी पर्यन्त दोनों आपस में भिड़कर गिरते पड़ते रहे। २५७ राक्षस को नीचे गिराकर हनुमान उस पर चढ़ बैठे। लगता था मानो उदयाचल पर सूर्य उदित हो गया हो। २५८ उसी प्रकार तेजस्वी हनुमान सुशोभित हो रहे थे। वह दानव की छाती पर चढ़े हुए मुक्कों से प्रहार कर रहे थे। २५९ पर्वत पर होती हुई वज्राघात जैसी ध्वनि हो रही थी। यह देखकर श्रीराम प्रशंसा करने लगे। हे पवननन्दन! तुम धन्य हो। २६० आकाश-मार्ग से देवता लोग

देबताए बोलन्ति जे शून्यमार्गे थाइ ।
धन्य धन्य मारुति तो सम बीर नाहिं ॥ २६१ ॥
देबकार्य्य कर बाबु असुरकु मार ।
उश्वास होइब बाबु पृथिबीर भार ॥ २६२ ॥
हनुर बिषम घात पाइण दुरन्त ।
प्रहरेक जाए तहिँ होइला अचेत ॥ २६३ ॥
मुण्डकु मोड़इ हनु करि गरजन ।
न छिड़इ बज्रठारु अटइ कठिन ॥ २६४ ॥
प्रहरक जाए हनु माइलाक जेते ।
सर्प चोट व्यर्थ जेन्हे गरुड़र माथे ॥ २६५ ॥
तेसन तहिँरे किछि नोहिला ताहार ।
चेतना पाइ देखिला बळिष्ठ असुर ॥ २६६ ॥
लेउटाइ हनुकु से बसिलाक माड़ि ।
मुखे राम राम कहे हनु तळे पड़ि ॥ २६७ ॥
देखिण श्रीराम धनु धइलेक करे ।
बिन्धिले हाबोड़ा बाण चळिगला खरे ॥ २६८ ॥
दानबकु लेउटाइ पकाइला तळे ।
हनु उठि दानबकु धरे पुणि बळे ॥ २६९ ॥

कह रहे थे। मारुति ! तुम धन्य हो ! धन्य हो ! तुम्हारे समान कोई वीर नहीं है। २६१ तुम देवताओं का कार्य करो। असुर को मार दो। हे तात ! इतसे पृथ्वी भार से मुक्त हो जायेगी। २६२ हनुमान के कठोर आघात से दुर्धर्ष दैत्य एक प्रहर के लिए मूर्च्छित हो गया। २६३ हनुमान गर्जना करते हुए उसके शिर को मरोड़ रहे थे। वह वज्र से भी अधिक कठोर था। टूट ही नहीं रहा था। २६४ एक प्रहर तक हनुमान ने जितने भी प्रहार किये वह सब उसी प्रकार व्यर्थ सिद्ध हुए जैसे गरुड़ के मस्तक पर सर्प के प्रहार बेकार होते हैं। २६५ वैसे ही उससे उसका कुछ भी नहीं बिगड़ा। होश आने पर बलवान दैत्य ने देखा। २६६ वह पलटकर हनुमान पर चढ़ बैठा। हनुमान नीचे पड़े हुए मुख से राम-राम कह रहे थे। २६७ यह देखकर श्रीराम ने हाथों में धनुष उठा लिया और हाबोड़ा बाण छोड़ दिया जो प्रखर वेग से चल पड़ा। २६८ उसने दानव को नीचे पलटा दिया। हनुमान ने फिर बलपूर्वक दानव को पकड़ लिया। २६९ उन्होंने उसके दोनों पैर पकड़कर उसे पर्वत पर दे पटका

दुइपाद धरि ताकु कचाड़िला नेइ ।
तार देह बाजि गिरि गला चूर्ण होइ ॥ २७० ॥
न मला दनुज देखि आचम्बित हनु ।
समुद्ररे पकाइला पुणि बात सूनु ॥ २७१ ॥
जळरे न मला सेहि अइला पहरि ।
देखिला कूळरे अछि बळबन्त हरि ॥ २७२ ॥
धाइँला से धरि बाकु महाकोप भरे ।
पळाइला हनुमान ता आगरु डरे ॥ २७३ ॥
पळाउछि हनु पच्छे धाइँछि असुर ।
देह पबनरे गिरि बृक्ष होइ चूर ॥ २७४ ॥
कोपेण भरत पच्छे माइले बाटुळि ।
पक्षीप्राय गगनरे सेहु गला चळि ॥ २७५ ॥
बज्र प्राय बजिला से असुरर कर्ण ।
भ्रमिला असुर चक्र भ्रमइ जेसने ॥ २७६ ॥
कर्णमूळे हात देइ पळाइला तहुँ ।
फुटि जाइ कान मुळुँ बहिजाए लहु ॥ २७७ ॥
महाव्यथा पाइ दैत्य बाहुड़ि आसइ ।
एकाके जाइ बिलंका भुवने पशइ ॥ २७८ ॥

जिससे वह पर्वत दानव के शरीर की चोट से चूर-चूर हो गया । २७० दैत्य को मृत न देखकर हनुमान को आश्चर्य हुआ । फिर पवननन्दन ने उसे समुद्र में फेंक दिया । २७१ वह जल में भी नहीं मरा, तैरकर बाहर निकल आया । उसने किनारे पर बलवान वानर को देखा । २७२ अत्यन्त कुपित होकर वह उसे पकड़ने के लिए दौड़ा । हनुमान डरकर उसके सामने से भाग गये । २७३ हनुमान भाग रहे थे, पीछे से असुर दौड़ रहा था । उसके शरीर की हवा से पर्वत और वृक्ष चूर-चूर हुए जा रहे थे । २७४ भरत ने कुपित होकर पीछे से बाटुली अस्त्र से प्रहार किया । वह पक्षी के समान आकाश में पहुँच गया । २७५ बज्र के समान बाटुली असुर के कान में लग गई थी । जिससे असुर चक्र के समान चक्कर खाने लगा । २७६ वह कान के नीचे हाथ लगाकर भागा । कान फूटने से रक्त बहने लगा था । २७७ महान कष्ट पाकर दैत्य लौट आया और अकेले बिलंका में घुस गया । २७८ किसी से बिना कुछ

एमन्त भाळिबा बेळे रघुकुळमणि ।
गुणे बसाइले एक बाण बाछि आणि ॥ १३२ ॥
छाड़ि देले बिश्वामित्र गुरुंक सुमरि ।
बोइले प्रभु पुणि से बाणकु तिआरि ॥ १३३ ॥
दानब राजार थाट न रखिबु एक ।
एमन्त प्रभुंक मुखु शुणि से सायक ॥ १३४ ॥
चळिला गर्जन करि पबनहुँ बेगे ।
काटिगला असुरंक मुण्ड महारागे ॥ १३५ ॥
पड़िले से छिन्न छन्न होइ एणे तेणे ।
बृक्ष शाखा छिड़ि गले जे सनेक बने ॥ १३६ ॥
दिशन्ति तेसन शोभा पाइ रण भुइँ ।
केहि केहि नाचुछन्ति थेइ थेइ होइ ॥ १३७ ॥
केउँ मुण्ड तळे पड़ि हुए टह टह ।
घड़िके असुर थाट गले जम गृह ॥ १३८ ॥
बहिला रुधिर नई बारजुण माड़ि ।
सो ते भासि जाउछन्ति मड़ा सबु पड़ि ॥ १३९ ॥
सात ताळ उत्सर्ग जे रक्त नदी गोटि ।
लहरी मान तहिँरु गिरि प्राय उठि ॥ १४० ॥

रघुकुल में श्रेष्ठ श्रीराम ने छाँटकर एक बाण प्रत्यञ्चा पर चढ़ाया । १३२ गुरु विश्वामित्र का स्मरण करके उसे छोड़ दिया । फिर भगवान ने उस बाण से आगाह करते हुए कहा कि दानवराज की सेना में एक को भी नहीं छोड़ना । इस प्रकार भगवान के मुख की वाणी को सुनकर वह बाण गर्जन करता हुआ पवन से भी अधिक गति से चल पड़ा और उसने अत्यन्त क्रोध से असुरों के शिर काट डाले । १३३-१३५ वह इधर-उधर क्षत-विक्षत होकर गिर पड़े जैसे वन में वृक्ष की शाखाएँ टूटकर गिर पड़ती हैं । १३६ उसी प्रकार की शोभा पाकर समरभूमि दिख रही थी । कोई-कोई थेई-थेई करते हुए नाच रहे थे । १३७ कोई शिर नीचे गिरकर अट्टहास कर रहा था । एक घड़ी में ही असुरवाहिनी यमपुर को चली गई । १३८ बारह योजन के विस्तार में असुरों के रक्त की सरिता बहने लगी । स्रोत में पड़कर शव उतराते बह रहे थे । १३९ उस रक्त सरिता की गहराई सात ताल वृक्षों के बराबर थी । उसमें पर्वताकार लहरें उठ रही थीं । १४० जितने भी हाथी, घोड़े, पैदल सिपाही, पायक

जेते घोड़ा हाती रथी पदाति पाइक ।
छिड़ि जाइ अछि रणे समस्तंक बेक ॥ १४१ ॥
भासुछन्ति गिरिप्राय मड़ा कोटि कोटि ।
भासि भासि आसि पुणि हुअन्ति एकाठि ॥ १४२ ॥
शून्ये देबताए देखि हेले आचम्बित ।
बोइलेक धन्य धन्य बीर रघुनाथ ॥ १४३ ॥
दिने देखि नाहुँ आम्भे एमन्त समर ।
सत्यजुगे थिला बीर महिषा असुर ॥ १४४ ॥
शुम्भ निशुम्भ आबर चण्ड मुण्ड बेनि ।
रक्तबीर्ज्य दनुजर देखिछु सइनि ॥ १४५ ॥
महा मायींकर संगे कले सेहि रण ।
ए जुगरे महाबीर बोलाइ रावण ॥ १४६ ॥
तोर समान न थिले धनुर्द्धर केहि ।
एक बाणे एते सेना काटिलु हो तुहि ॥ १४७ ॥
दश कोटि पदादिक पांच कोटि जेना ।
अयुतेक रथ रथी बार पद्म सेना ॥ १४८ ॥
पांच लक्ष हय मत्त गज सहस्रेक ।
खर्ब खर्ब राउत जे माहुन्त पाइक ॥ १४९ ॥

रथी थे उन सबकी गर्दनें कट चुकी थीं । १४१ कोटि-कोटि शव पर्वतों के समान उतरा रहे थे । बहते-बहते वह सब आकर एक जगह एकत्रित हो रहे थे । १४२ आकाश से देवता लोग यह देखकर अचम्भे में पड़ गये । हे रघुनाथ जी ! तुम धन्य हो ! धन्य हो ! इस प्रकार कहने लगे । १४३ इस प्रकार का युद्ध हमने एक दिन भी कहीं नहीं देखा । सतयुग में पराक्रमी महिषासुर था । १४४ शुम्भ-निशुम्भ तथा दोनों चण्ड और मुण्ड तथा रक्तबीर्य असुर की भी सेना हमने देखी है । १४५ उन्होंने महामाया के साथ युद्ध किया था । इस युग में रावण भी महान पराक्रमी कहा जाता था । १४६ परन्तु तुम्हारे समान धनुर्धर कोई भी नहीं था । आपने एक बाण से ही इतनी सेना काट डाली । १४७ दश करोड़ पैदल सैनिक, पाँच करोड़ योद्धा, एक अयुत रथ और रथी तथा बारह पद्म सेना । पाँच लाख घोड़े एक हजार मस्त हाथी, खर्ब-खर्ब सैनिकों, महावतों तथा पायकों को, सिंहों, वाराहों के अगणित झुण्डों को आप ने एक

शार्दूळ बराह ओट के पारिब गणि।
एक बाण जाइ सबु पकाइला हाणि ॥ १५० ॥
बिभीषण आदि बीरे देखि ए अद्भुत।
बोइले धन्य हो तुहि राजा दशरथ ॥ १५१ ॥
धन्य धन्य कउशल्या राम गर्भधारी।
धन्य धन्य धनुर्द्धर जानकी बिहारी ॥ १५२ ॥
लक्षशिरा रथे थाइँ देखि ए समर।
मने बिचारिला एत महाधनुर्द्धर ॥ १५३ ॥
एका बाणे एते सैन्य पकाइला मारि।
सारथि त नाहिँ पुणि रथरे मोहरि ॥ १५४ ॥
कि बुद्धि करिबि मोर मले सबु सैन्य।
कि हेब थाइ मोहर लक्षेक बदन ॥ १५५ ॥
दुइ लक्ष भुज थाइँ रखि न पारिलि।
अकारणे असुरंकु आणि मराइलि ॥ १५६ ॥
बिलंकारे असुर त नाहान्ति गोटिए।
असुरी अछन्ति पुरे कोटिए कोटिए ॥ १५७ ॥
बाळ बृद्ध अछन्ति जे बार पद्म तहिँ।
मुख देखाइबि जाइँ काहाकु जे मुहिँ ॥ १५८ ॥
कि बोलिबे मोते पुणि बिलंका नगरे।
लाज पाइलइँ एका मानब आगरे ॥ १५९ ॥

ही बाण से सबको काट गिराया। १४८-१५० विभीषण आदि यह आश्चर्य देखकर बोले, हे राजा दशरथ! तुम धन्य हो। १५१ श्रीराम की गर्भधारिणी कौशल्या! तुम धन्य हो। धनुर्धारी जानकी-विहारी श्रीराम! तुम धन्य हो! धन्य हो! १५२ रथ पर बैठे हुए लक्षकण्ठ ने यह संग्राम देखकर मन में विचार किया कि यह तो महान धनुर्धर है। १५३ एक बाण से ही इसने इतनी सेना मार गिराई। मेरे रथ में सारथी भी तो नहीं है। १५४ अब क्या करूँ? मेरी तो सारी सेना ही चली गई। मेरे लाख शिर रहने से क्या होगा। १५५ दो लाख भुजाओं के रहते मैं रक्षा नहीं कर पाया। बिना कारण ही असुरों को लाकर मरवा डाला। १५६ बिलंका में तो एक भी असुर नहीं है। नगर में करोड़ों की संख्या में असुर-स्त्रियाँ हैं। १५७ बारह पद्म बालक और वृद्ध वहाँ पर हैं। मैं किसको जाकर अपना मुख दिखलाऊँगा। १५८ बिलंका नगर में लोग

जाणि थिलि सिना नर आम्भर आहार ।
आहार आम्भंकु गिले एत चमत्कार ।। १६० ।।
शशा गोटा आसि सिंह पल देला खाइ ।
ए बिचित्र काहा आगे कहिबि मुँ जाइ ।। १६१ ।।
शुणि ए कथाकु केहि न जिबे परते ।
हसरे उड़ाइ देबे शळामाने मोते ।। १६२ ।।
एमन्त से भाळु भाळु उदे हेला क्रोध ।
धनुधरि से प्रतापी दैत्य कला जुद्ध ।। १६३ ।।
श्रीराम ता हस्तु धनु काटि पकाइले ।
छत्र चामर जेतेक थिला ता काटिले ।। १६४ ।।
लक्ष गोटा मुकुट जे थिला तार शिरे ।
काटि पकाइले राम ताहा तीक्ष्ण शरे ।। १६५ ।।
गदा करे धरि बीर पड़िलाक डेइँ ।
चक्र आकार बुलाइ क्रोधरे धामइँ ।। १६६ ।।
ता देखि पबन सुत बीर हनुमान ।
लांजरे धइला तार गदाकु बहन ।। १६७ ।।
छड़ाइण किंगि देला पड़िला सागरे ।
निसत होइला शस्त्र न थिबारु करे ।। १६८ ।।

मुझसे क्या कहेंगे ? मुझे एक मानव के आगे लज्जित होना पड़ा । १५९ मैं तो समझता था कि नर हमारे भोज्य पदार्थ हैं । आहार ही हमें निगल गया, यह तो आश्चर्य है । १६० एक खरगोश ने आकर सिंह के दल को खा डाला । यह विचित्र बात मैं किसके आगे जाकर कहूँगा । १६१ यह बात सुनकर कोई विश्वास ही नहीं करेगा । सारे लोग हँसकर मेरी बात उड़ा देंगे । १६२ ऐसा सोचते-सोचते उसे क्रोध हो आया । उस प्रतापी दैत्य ने धनुष उठाकर युद्ध किया । १६३ श्रीराम ने उसके हाथ से धनुष काट गिराया । जितने भी छत्र और चामर थे उन्हें भी काट डाला । १६४ उसके शिर पर जो एक लाख मुकुट थे उन्हें भी तीक्ष्ण बाण से श्रीराम ने काट डाला । १६५ पराक्रमी दैत्य हाथ में गदा लेकर कूद पड़ा । वह कुपित होकर उसे चक्र के आकार में घुमाते हुए दौड़ रहा था । १६६ उसे देखकर पवन के पुत्र पराक्रमी हनुमान ने उस गदा को अपनी पूंछ से शीघ्रता से पकड़ लिया । १६७ उसे छीनकर समुद्र में फेंक दिया । हाथ में शस्त्र न होने से वह निःशस्त्री

डेइँ जाइ हनु तार कान्धरे बसिला ।
जाम्बवान जाइ तार पादकु धइला ।। १६९ ।।
सुग्रीव अंगद नळ नीळ गले धाइँ ।
मस्तक उपरे डेइँ बसिलेक जाइँ ।। १७० ।।
देखि कोपे से दुर्द्दान्त दैत्य गला डेइँ ।
पडिले ए सबु बीरे खण्डे दूरे जाइ ।। १७१ ।।
देखि राम धनु धरि बिन्धिलेक शर ।
कोटि कोटि लक्ष लक्ष कंक मुना तार ।। १७२ ।।
शत्रुघन बिभीषण करे धनु धरि ।
बाण बिन्धुछन्ति असुरकु लक्ष्य करि ।। १७३ ।।
बज्र गिरि प्राय उभा होइछि दनुज ।
उपुड़ि पड़न्ति देहे पडिण नाराज ।। १७४ ।।
रहिछि से रण रंका मने नाहिँ शंका ।
नाराच मानंक मून होइलाणि बंका ।। १७५ ।।
भरत शत्रुघ्न जेते नाराच बिन्धिले ।
बिभीषण तांक संगे बाण जे सन्धिले ।। १७६ ।।
सबु दानबर देहे पड़ि हुए चूना ।
असुरर देह गोटा अटे बज्र सेन्हा ।। १७७ ।।

हो गया । पौरुषहीन हो गया । १६८ हनुमान उछलकर उसके कन्धे पर बैठ गये । जामवन्त ने बढ़कर उसके पैर दबोच लिये । १६९ सुग्रीव, अंगद, नल तथा नील दौड़कर उसके मस्तक पर जा बैठे । १७० यह देखकर दुर्दान्त दैत्य उछल गया । यह सभी वीर थोड़ी दूरी पर जा गिरे । १७१ यह देखकर श्रीराम ने एक बाण छोड़ दिया जिसमें लाखों, करोड़ों नोकें थीं । १७२ शत्रुघ्न तथा विभीषण हाथ में धनुष उठाकर असुर को लक्ष्य करके बाण छोड़ने लगे । १७३ वज्र के पर्वत के समान दानव खड़ा था । बाण देह पर लगकर उखड़ जाते थे । १७४ वह रण-बाँकुरा मन में बिना किसी शंका के खड़ा था । बाणों की नोकें टेढ़ी हो गई थीं । १७५ भरत और शत्रुघ्न ने जितने भी बाण छोड़े तथा उनके साथ बिभीषण ने भी जितने बाण मारे वह सभी दानव की देह में लगकर चूर-चूर हो गये । असुर का शरीर क्या मानों वज्र का ढेर था । १७६-१७७ चारों वीर बाण चला-चलाकर थक गये । तब राजा

फुटिण रहिले बिन्धि बिन्धि चारि बीरे ।
सुग्रीव राजन जाइ असुरकु धरे ॥ १७८ ॥
सूचिमूने मेरु गिरि पड़इ कि टळि ।
चापोड़ा माइला ताकु कोपे महाबळी ॥ १७९ ॥
खण्डे दूरे पड़िला से मुण्डकु घुराइ ।
खुड़ु तार दशा देखि अंगद जे धाइँ ॥ १८० ॥
दानबकु पकाइला बज्र सम बिधा ।
गर्जिला दानब सिंह पाइ महाबाधा ॥ १८१ ॥
अंगदकु धइला से बढ़ाइण कर ।
एमन्त देखिण कोपे गला नळ बीर ॥ १८२ ॥
बसिण ता शिरे जाइ मोड़न्ते ता बेक ।
करकु बढ़ाइ देला असुर नायक ॥ १८३ ॥
ए मुण्डरु से मुण्डकु डेइँ जाए नळ ।
देखुछन्ति देवगणे जुद्ध कुतुहळ ॥ १८४ ॥
असुर धरिबा पाइँ बढ़ाउछि कर ।
डेइँ जाइ बसे आर मुण्डरे ताहार ॥ १८५ ॥
दुइ लक्ष हस्त दैत्य बढ़ाइण देला ।
अंगदकु छाड़ि नळ कपिकि धरिला ॥ १८६ ॥

सुग्रीव ने जाकर असुर को पकड़ लिया । १७८ पर क्या सुई की नोक से मेरुपर्वत उखड़ सकता है । महापराक्रमी ने कुपति होकर उसे एक चपत मारी । १७९ सिर चकराने से वह थोड़ी दूर पर जाकर गिरा । अपने काका की दशा को देखकर अंगद दौड़ पड़ा । १८० उसने दानव के एक वज्रमुष्टि जड़ दी । दानव-शार्दूल महाव्यथा पाकर गरज उठा । १८१ उसने हाथ बढ़ाकर अगद को पकड़ लिया । यह देखकर पराक्रमी नल कुपित हो गया । १८२ वह उसके शिर पर चढ़कर उसकी गर्दन मरोड़ने लगा । तभी असुरनायक ने अपना हाथ बढ़ा दिया । १८३ नल इस शिर से उस शिर पर कूदने लगा । देवगण युद्ध को कौतूहल से देख रहे थे । १८४ असुर पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाता था । तभी वह उछलकर दूसरे शिर पर कूदकर जा बैठता था । १८५ दैत्य ने दो लाख हाथ प्रसारित कर दिये । उसने अंगद को छोड़कर नल वानर को पकड़ लिया । १८६ महापराक्रमी उसे काँख में दृढ़ता से दबाकर किलकता

काखतळे दृढ़े जाकि धरि महाबळी ।
श्रीरामंक निकटकु धामइ कुरुळि ॥ १८७ ॥
देखिण जाम्बव बूढ़ा गला धीरे धीरे ।
दनुज जानुकु जाइ पळआड़ु धरे ॥ १८८ ॥
गोड़े गोड़ छन्दि देइ पकाइला फाश ।
चळि न पारिला सेहि प्रतापी राक्षस ॥ १८९ ॥
मूळ छिड़ि गले तरु पड़े जेउँ परि ।
भूमिरे पड़िला तेन्हे दानब केशरी ॥ १९० ॥
नळ क्षुद्र रूपे काखतळु बाहारिला ।
दानब जाती रे बसि बिधाए माइला ॥ १९१ ॥
क्षणे मूर्च्छा गला तेड़े बड़ बीर गोटा ।
जाम्बव माइला दैत्य नाकरे गोइठा ॥ १९२ ॥
हृद ठारु दैत्य नाभि अधिक गभीर ।
पाद न पाइला गळि पड़े ऋक्ष बीर ॥ १९३ ॥
थळ कूळ न पाइण अइला बाहारि ।
उठिला दानब बीर गरजन करि ॥ १९४ ॥
देखि डरे नळ कपि डेइँ पळाइला ।
नळ पच्छे पच्छे उठि दैत्य गोड़ाइल ॥ १९५ ॥

हुआ श्रीराम के समीप दौड़ आया । १८७ यह देखकर वृद्ध जामवन्त धीरे-धीरे बढ़े । उन्होंने पीछे जाकर दानव की जघाओं को पकड़ लिया । १८८ पैर से पैर भिड़ाकर फँसरी बनाकर उसे डाल दिया । तब वह प्रतापी राक्षस चल नहीं पाया । १८९ जड़ कट जाने से जैसे वृक्ष गिर जाता है वैसे ही दानवकेशरी पृथ्वी पर गिर पड़ा । १९० छोटा रूप बनाकर नल काँख से निकल पड़ा तथा उसने दानव की छाती पर बैठकर एक मुक्का जमा दिया । १९१ उतना बड़ा वीर एक क्षण के लिए मूर्च्छित हो गया । तभी जामवन्त ने दैत्य की नाक पर एक थप्पड़ मारा । १९२ हृदय से भी राक्षस की नाभि अधिक गहरी थी । पैर न टिक पाने से पराक्रमी ऋक्षराज उसी में गिर पड़े । १९३ थाह न मिलने पर वह बाहर निकल आये । पराक्रमी दानव गर्जना करते हुए उठ बैठा । १९४ देखते ही नल वानर डर से कूदकर भाग गया । दैत्य उठकर पीछे से नल को खदेड़ने लगा । १९५ पवन से भी तीव्र गति से पराक्रमी

पळाउछि नल बीर पबनहुँ बेगे ।
गोड़ा इछि पच्छे पच्छे दैत्यराज आगे ॥ १९६ ॥
देखि नीळ कपि गला गरुड़ पराय ।
बसिला दानब कान्धे बढ़ाइण काय ॥ १९७ ॥
नृत्यकला ताळि मारि ता देखि असुर ।
नीळकु धरिला करे होइ कोपधर ॥ १९८ ॥
नीळ धरा पड़िबार देखि हनुमान ।
लांजकु बढ़ाइ देला सहस्रे जोजन ॥ १९९ ॥
दानबकु निबिड़रे पकाइला बान्धि ।
न चळि पारिला दैत्य होइलाक बन्दि ॥ २०० ॥
नीळकु से छाड़ि देइ धइला लांगुड़ ।
फिटउ फिटउ हनु माइला चापोड़ ॥ २०१ ॥
क्षुद्र रूप धरि तहुँ शून्य मार्गे गला ।
देखि दानवर महाकोप जात हेला ॥ २०२ ॥
रामंक पाखकु बेगे असिलाक धाइँ ।
ताहा देखि हनुमान बेगे धाइँ जाइँ ॥ २०३ ॥
पर्बते आणि तार मुण्डे कचाड़िला ।
मन्दर गिरिरे टेका खण्डे कि पड़िला ॥ २०४ ॥

नल दौड़ रहा था। पीछे-पीछे कुपित होकर दैत्य खदेड़ रहा था। १९६ यह देखकर नील वानर गरुड़ के समान चला गया तथा अपनी काया को बढ़ाकर दानव के कन्धे पर चढ़ बैठा। १९७ वह ताली बजाकर नृत्य करने लगा। उसे देखकर असुर ने कुपित होकर नील को पकड़ लिया। १९८ नील को पकड़ा हुआ देखकर हनुमान ने अपनी पूँछ एक हज़ार योजन की बढ़ा ली। १९९ उन्होंने दानव को मजबूती से बाँध गिराया। दैत्य चल नहीं सका इसी से वह बन्दी बन गया। २०० नील को छोड़कर उसने पूँछ पकड़ ली। छुड़ाते-छुड़ाते हनुमान ने उसे एक तमाचा मारा। २०१ फिर छोटा रूप धारण करके वह आकाश में चले गये। यह देखकर दानव को अत्यन्त क्रोध हो गया। २०२ वह शीघ्र ही राम के पास दौड़ आया। यह देखकर हनुमान ने शीघ्र गति से जाकर पर्वत लाकर उसके शिर पर दे पटका। लगता था मानो मन्दराचल पर्वत पर एक ढेला गिर पड़ा हो। २०३-२०४ बीरशिरोमणि ठठाकर

काहाकु किछि न कहि गला अन्तःपुरे ।
खुरणसि राणी आसि मिळिला पाशरे ॥ २७९ ॥
बोइला भो नाथ एका सैन्य गले काहिँ ।
दुइ लक्ष नयनरु लुह पड़े बहि ॥ २८० ॥
शिरे कर मारि बोले आहारे दइब ।
अपमान देले छार बानर मानब ॥ २८१ ॥
एमन्त भाळि से किछि न कहि राणीकि ।
भाबनारे बसिअछि चाहि पृथिबीकि ॥ २८२ ॥
पिठिकि आउँषि देइ पचारइ राणी ।
मउन होइ घड़िए जाए नृपमणि ॥ २८३ ॥
कहइ मुँ कि कहिबि राणी गो तो आगे ।
जुद्ध करिबाकु गलि मानबर संगे ॥ २८४ ॥
हाती घोड़ा रथ रथी नाहिं तार किछि ।
प्रचण्ड पर्बत परे आसि रहिअछि ॥ २८५ ॥
प्रथमे थिला ताहार बहुत गो थाट ।
पृथिबीकि घोटि रहिथिले गो मर्कट ॥ २८६ ॥
मोर गदा बाते सबु जाक गले उड़ि ।
काहाकु न पाइ मुहिँ अइलि बाहुड़ि ॥ २८७ ॥
पुणि थाट साजि रहि थिबार पर्बते ।
मो आगरे जणाइले आसि मोर दूते ॥ २८८ ॥

कहे वह अन्तःपुर में चला गया । रानी खुरणसी उसके निकट जा पहुँची । २७९ वह बोली, हे नाथ ! आप अकेले हैं । सेना कहाँ गई ? उसके दो लाख नेत्रों से आँसू बहने लगे । २८० हाथों से शिर धुनते हुए उसने कहा, अरे दैव ! तुच्छ नर और वानर से मुझे अपमानित करा दिया । २८१ ऐसा सोचकर वह रानी से बिना कुछ कहे पृथ्वी की ओर देखते हुए भावुक बन गया । २८२ रानी ने पीठ सहलाते हुए पूछा । नृपश्रेष्ठ एक घड़ी के लिए मौन ही रह गया । २८३ फिर वह बोला कि रानी ! मैं तुम्हारे आगे क्या कहूँ ? मैं मानव के साथ युद्ध करने को गया । २८४ उसके पास हाथी, घोड़ा, रथ, रथी कुछ भी नहीं है । वह आकर प्रचण्ड पर्वत पर रह रहा है । २८५ पहले उसकी सेना बहुत थी । वानरों से पृथ्वी भर गई थी । २८६ मेरे गदा की हवा से सब उड़ गये थे । किसी को न पाकर मैं लौट आया । २८७ पुनः हमारे दूतों ने मुझे सूचित किया

शाळक गण मंत्रीकि जगाइ ए पुर।
बड़ बड़ सेनापति रखिण आबर ॥ २८९ ॥
दुइ हजार असुर तांक संगे देइ।
साजिलि मुँ थाट गोटा आगो महादेई ॥ २९० ॥
न रखिलि ए बिलंका नगरे पुरुष।
समस्तंकु बोइलि मुँ सज होइ आस ॥ २९१ ॥
अइले असुरबल घोटिलेक मही।
ताहांक प्रताप सूर्य्य न पारिला सहि ॥ २९२ ॥
चळिले थाट अठर जोजन जे माड़ि।
जेसने समुद्र मध्ये उठइ लहड़ि ॥ २९३ ॥
थाट देखि भय पाइ से रामर थाट।
पळाइले रहिले गो पाञ्चटि मर्कट ॥ २९४ ॥
गोटिए राक्षस पुणि गोटिए जे ऋक्ष।
तिनि गोटि मानव जे इन्द्र समकक्ष ॥ २९५ ॥
ताहांक मध्यरे राम बड़ धनुर्द्धर।
कोटि सूर्य्य ठारु बळि तेज गो ताहार ॥ २९६ ॥
एका बाणकरे मोर थाट देला मारि।
मुहिं एकाके तहिँरु अइलि उबुरि ॥ २९७ ॥

कि वह फिर सेना लेकर पर्वत पर आकर रुक गया है। २८८ सालों तथा मंत्री से इस नगर की रक्षा करने को कहकर और बड़े-बड़े सेनापतियों को दो हजार असुरों को देकर, हे महादेवी ! मैंने एक सेना सजाई। २८९-२९० इस बिलंका नगरी में एक भी पुरुष को नहीं छोड़ा। सबसे मैंने तैयार होकर आने को कहा। २९१ असुरदल ने आकर सारी पृथ्वी को छाप लिया। उनके प्रताप को सूर्य सहन नहीं कर पाया। २९२ अट्ठारह योजन के विस्तार को दलती हुई सेना चल दी, जिस प्रकार से समुद्र में लहर उठती है। २९३ सेना को देखकर राम की फ़ौज डरकर भाग खड़ी हुई। केवल पाँच बन्दर रह गये। २९४ एक राक्षस, एक भालू तथा इन्द्र के समान पराक्रमी तीन मानव भी थे। २९५ उनमें राम बहुत बड़ा धनुर्धारी है। उसका तेज करोड़ सूर्य से भी अधिक है। २९६ एक बाण से उसने मेरी सेना का संहार कर डाला। मैं अकेला वहाँ से बचकर आ गया। २९७ और एक भी नहीं बचा। सभी यमपुर को

आउ एक न रहिले गले जमधर ।
सात ताळ उच्चरे गो बहिला रुधिर ॥ २९८ ॥
मुहिँ कोपे संग्राम गो कलइँ बहुत ।
पांच जण मो आघाते होइले मोहित ॥ २९९ ॥
धनुर्धारी चारि बीर गोटिए बानर ।
एमाने कले मो संगे बहुत समर ॥ ३०० ॥
सात दिन सात राति जुझि मोर संगे ।
न पारि संग्राम तेजि गले पृष्ठभंगे ॥ ३०१ ॥
गोड़ाइ गलि मु तांकु जोजनेन जाए ।
श्रीराम भाइ माडला बाटुळि गोटाए ॥ ३०२ ॥
बज्रठारु आण्ट पुणि बाटुळि ताहार ।
कर्ण मूळे बाजि बहि पड़िला रुधिर ॥ ३०३ ॥
महाव्यथा पाइ राणी असम्भाळ होइ ।
बिलंकापुरकु बोलि अइलि पळाइ ॥ ३०४ ॥
कि कहिबि एते बेळ जाए पोड़ु अछि ।
तेणु मुँ घड़िए जाए न कहिलिँ किछि ॥ ३०५ ॥
शुणि महादेई पाइ बहुत बिकळ ।
बोइला भो नाथ किछि मनरे न भाल ॥ ३०६ ॥
जय पराजय जाण संग्रामर रीति ।
केते बेळे हार हुए केते बेळे जिति ॥ ३०७ ॥

चले गये । सात ताल वृक्षों की ऊँचाई में रुधिर बहा । २९८ मैंने क्रुद्ध होकर बहुत युद्ध किया । पाँचों लोग मेरे आघात से मूर्च्छित हो गये । २९९ चारों वीर धनुर्धरों ने तथा एक वानर ने हमारे साथ बहुत युद्ध किया । ३०० सात दिन और सात रात्रि हमारे साथ युद्ध करके अक्षम होकर संग्राम छोड़कर पीठ दिखाकर भाग गये । ३०१ एक योजन तक मैं उन्हें खदेड़ता गया । श्रीराम के भाई ने एक बाटुली मारी । ३०२ उसकी बाटुली वज्र से भी कठोर थी । मेरे कान के नीचे लगने से रक्त बहने लगा । ३०३ हे रानी ! अत्यन्त कष्ट पाकर मैं सम्हल न सका और बिलंकापुर को लौट आया । ३०४ क्या कहूँ अभी तक जल रहा है, इसी से मैंने एक घड़ी तक कुछ भी नहीं कहा । ३०५ यह सुनकर महारानी बहुत व्याकुल होकर बोली, हे नाथ ! आप मन में कुछ भी चिन्ता न करें । ३०६ हार-जीत तो युद्ध की रीति होती है । कभी हार होती

एबे थाउ राम संगे जुद्ध न करिबा ।
चाल जाइँ तार पादे शरण पशिबा ॥ ३०८ ॥
शुणिछि से राम अटे जगत ठाकुर ।
असुर मारिबा पाइँ जनम ताहार ॥ ३०९ ॥
लंकापुरे पशि एका माइला रावण ।
मोर पुत्रंकु माइला सेहि एका जाण ॥ ३१० ॥
बिलंकाकु पोछि देइ बुलाइला मइ ।
देखिलत साक्षातरे एबे जुद्धे जाइँ ॥ ३११ ॥
एक बाणके बिलंकारे कला शून्य ।
एणु कहुछि पशिबा ता पादे शरण ॥ ३१२ ॥
राणीर मुखुँ एमन्त शुणि हसे दैत्य ।
छार नर बानरंकु डरिलु कि तुत ॥ ३१३ ॥
बइरी पादरे जाइँ पशिबि शरण ।
एथिरु भल त जाण जुद्धरे मरण ॥ ३१४ ॥
पुत्र नाति मले मोर मुहिँ अछि एका ।
असुर शून्य हेलाणि ए मोर बिलंका ॥ ३१५ ॥
आम्भर जे भक्ष सेहि होइछि बइरी ।
शरण पोशिबि राणी कहुछु कि परि ॥ ३१६ ॥

है और कभी विजय । ३०७ अब रहने दें । राम के साथ युद्ध न करें । चलें उसके चरणों की शरण ग्रहण कर लें । ३०८ सुना है कि राम संसार का स्वामी है । असुरों का संहार करने के लिए उसका जन्म हुआ है । ३०९ लंकापुर में घुसकर उसने अकेले ही रावण को मार डाला । और उसी ने अकेले ही मेरे पुत्र को मार डाला । ३१० बिलंका को ध्वंस करके सिरावन चला दी । अब तो युद्ध में जाकर आपने भी उसे साक्षात् देख लिया । ३११ एक बाण से ही उसने बिलंका को शून्य कर दिया । इसी से कह रही हूँ कि उसकी चरण-शरण ग्रहण कर लें । ३१२ रानी के मुख से ऐसा सुनकर दैत्य हँसा और बोला कि तू तो तुच्छ नर और वानर से डर गई । ३१३ शत्रु के चरणों की शरण ग्रहण करूँ, इससे तो युद्ध में मर जाना श्रेयस्कर है । ३१४ मेरे पुत्र, नाती मर गये । मैं अकेला ही हूँ । मेरी बिलंका असुरों से खाली हो गई । ३१५ हमारा जो भक्ष्य है वह ही शत्रु बन गया है । मैं शरण ग्रहण कर लूँ, हे रानी ! यह तुम कैसे कह रही हो ? ३१६ रणयज्ञ करूँगा । भले ही बाद में

रण जज्ञ करि पच्छे लभिबि मरण ।
किछि न कहिण राणी होइला मउन ॥ ३१७ ॥
मणोहि करि निश्चिन्ते शोइला से राति ।
पर दिन प्रभातरु उठि दैत्यपति ॥ ३१८ ॥
आस्थाने बसिला जाइ पाछ मंत्री आसि ।
छामुरे दर्शन करि आसनरे बसि ॥ ३१९ ॥
बोइले भो देब कुह समर बिधान ।
शुणिण बोइला तांकु बिलंका राजन ॥ ३२० ॥
पात्र मित्र मंत्री जाक बिचारिले बसि ।
बिलंका नाशिले नर बानर त आसि ॥ ३२१ ॥
शरण पशिबा जेबे न छाड़िब केबे ।
अणाइ अछन्ति ताकु कहि करि देबे ॥ ३२२ ॥
आसि अछि असुरकु मारिबा निमन्ते ।
बिचार करन्ति बसि मंत्रीए एमन्ते ॥ ३२३ ॥
सेनापति माने शुणि बोइले किम्पाइँ ।
एमन्त बिचार कर लाज माड़ु नाहिं ॥ ३२४ ॥
छार नर बानरंकु एते किम्पा डर ।
आज्ञा देले धरि आणि देबु जे छामुर ॥ ३२५ ॥

मैं मर जाऊँ। कुछ न कहती हुई रानी चुप हो गई। ३१७ मानता मानकर वह रात्रि में निश्चिन्त होकर सो गया। अगले दिन प्रभात से ही दैत्यराज उठकर सिंहासन पर जा बैठा। ३१८ सभासद, मंत्री सब आकर दर्शन करके आसनों पर बैठ गये। ३१९ वह बोले, हे देव! अब युद्ध की विधि बतलाइये। यह सुनकर बिलंकेश ने उन्हें समझाया। ३२० सभासद, मित्र तथा मंत्री बैठकर विचार करने लगे। नर और वानर ने आकर बिलंका का नाश कर दिया। ३२१ यदि शरण ग्रहण करेंगे तो वह कभी नहीं छोड़ेगा। क्योंकि देवताओं ने उसे कहकर बुलवाया है। ३२२ असुरों को मारने के लिए ही वह आया है। मंत्री लोग यही विचार बैठकर कर रहे थे। ३२३ यह सुनके सभी सेनापति बोले कि ऐसा विचार क्यों कर रहे हैं? क्या लज्जा नहीं लगती। ३२४ तुच्छ नर-वानर से इतना क्यों डर रहे हो? आज्ञा देने से हम उन्हें पकड़कर आपके पास ला देंगे। ३२५ हम एक-एक तीनों पुरों को जीत सकते हैं।

एके एके पाहँ आम्भे तिनि पुर जिणि ।
इन्द्र चन्द्र बरुणकु संग्रामे न गणि ।। ३२६ ।।
वीरंक मउड़मणि आम्भर राजन ।
जाहार आज्ञारे सूर्य्य करइ गमन ।। ३२७ ।।
तेतीश कोटि देबता तार आज्ञाकारी ।
से शरण जिब नर बानरंकु डरि ।। ३२८ ।।
भो देब बिलंकाधिप असुराधिराय ।
बिलम्ब किम्पाइँ कर बेगे आज्ञा दिअ ।। ३२९ ।।
नर बानरंक मुण्ड हाणि देबु आणि ।
शुणि सानन्द होइला दुइ लक्ष पाणि ।। ३३० ।।
बोलइ मुँ जाणे तुम्भे महा महाबीर ।
तुम्भे थाउँ थाउँ मोर काहाकु रे डर ।। ३३१ ।।
जाइँ कालि आणि दिअ शत्रु मुण्ड मोते ।
ए बिलंकापुर भोग कर रे निश्चिन्ते ।। ३३२ ।।
एमन्त बोलि आस्थानु आपे उठि जाइ ।
गउरब करि शिरे शाढ़ी देला नेइ ।। ३३३ ।।
जगत जन जननी माता गो काळिका ।
खपर पाति संहार करु मा गो एका ।। ३३४ ।।

इन्द्र-चन्द्र तथा वरुण की गिनती हम युद्ध में नहीं करते । ३२६ हमारे राजा वीर चूड़ामणि हैं जिनकी आज्ञा से सूर्य भी चलता है । ३२७ तेंतीस कोटि देवता उनकी आज्ञा का पालन करनेवाले हैं । वह नर-वानर से भयभीत होकर शरण ग्रहण करेगा । ३२८ हे देव बिलंकेश्वर ! असुराधिपति ! आप विलम्ब क्यों कर रहे हैं ? शीघ्र ही आज्ञा प्रदान करें । ३२९ नर-वानर के शिर काटकर ला देंगे । यह सुनकर दो लाख भुजाओंवाला दैत्य प्रसन्न हो गया । ३३० वह बोला, मैं जानता हूँ कि तुम महान पराक्रमी हो । तुम्हारे रहते हुए मुझे किसका डर है । ३३१ कल जाकर शत्रु के शिर मुझे लाकर दो और निश्चिन्त होकर बिलंकापुर का उपभोग करो । ३३२ ऐसा कहकर सिंहासन से उठकर उसने स्वयं ही उनका सम्मान करके उनके शिरों पर पगड़ी बाँध दी । ३३३ हे जगन्माता कालिका ! तुम अकेले ही खप्पर चलाकर संहार करनेवाली हो । ३३४ तुम्हारी दाढ़ से कोई बचकर नहीं जा

तोहर दाढ़रु केहि न जिब गो बत्ति ।
चक्रधर तो पयर भजे दिबा राति ॥ ३३५ ॥
न गला मोहर दुःख कहिबि काहागे ।
दुःख भोगु अछि मन्द कर्मफळ जोगे ॥ ३३६ ॥
तु बेगे उद्धार ताकु करिब ना मात ।
शरण पशिछि तोर पादे दिबारात्र ॥ ३३७ ॥
तुहि न रखिले मुहिँ होइलि अरक्ष ।
जगत जननी मोते हुअ साहापक्ष ॥ ३३८ ॥

जम्ब कुजम्ब आदि सेनापतिकर युद्ध ओ मृत्यु

एथु अनन्तरे पुणि बोइले पार्बती ।
श्रीराम कि बिचारिले कुह पशुपति ॥ १ ॥
शकर कहन्ति शुण शइळ दुलाळी ।
प्रतापी दइत खाइ भरत बाटुळि ॥ २ ॥
पळाइला पछकु से न चाँहिला आउ ।
सानन्द होइले ताहा देखि महाबाहु ॥ ३ ॥
भरतकु स्नेह भरे कले आळिंगन ।
बिभीषण बोले चाल कमळलोचन ॥ ४ ॥

सकता । चक्रधर दिन-रात तुम्हारे चरणों का भजन करता है । ३३५ मेरा दुःख नहीं गया, यह मैं किसके आगे कहूँ ? अपने नीच कर्मों के कारण दुःख भोग रहा हूँ । ३३६ हे माँ ! क्या तुम उसका उद्धार शीघ्र ही नहीं करोगी । मैं दिन-रात तुम्हारे चरणों की शरण में ही रहता हूँ । ३३७ तुम यदि मेरी रक्षा नहीं करोगी तो मैं अरक्षित हो जाऊँगा । हे जगज्जननी ! मेरी सहायता करो । ३३८

जम्ब, कुजम्ब आदि सेनापतियों का युद्ध और मृत्यु

इसके अनन्तर पार्वती जी ने कहा, हे पशुपति ! बताइये कि श्रीराम ने क्या विचार किया ? १ शंकर जी बोले, हे शैलकुमारी ! सुनो । प्रतापी दैत्य भरत की बाटुली से घायल होकर भागा । उसने पीछे मुड़कर भी और नहीं देखा । उसे देखकर महाबाहु श्रीराम प्रसन्न हो गये । २-३ उन्होंने स्नेहपूर्वक भरत का आलिंगन किया । बिभीषण ने कहा, हे कमललोचन श्रीराम ! चलिये । ४ देखें सुग्रीव आदि कपिगण

देखिबा सुग्रीव आदि कपि केणे गले ।
असुर बिषम घाते मोहे पड़ि थिले ।। ५ ।।
शुणिण श्रीराम तहुँ गले तर तरे ।
भरत शत्रुघ्न हनु घेनि संगतरे ।। ६ ।।
रण भुइँरे देखिले पडिछन्ति मोहे ।
पंच गोटा बीर जोगुँ महीदेबी शोहे ।। ७ ।।
देखिण श्रीराम प्रभु आकाशकु चाहिँ ।
बोइले अमृत बृष्टि कर सुरसाइँ ।। ८ ।।
तक्षणे अमृत आणि सिंचिला बासव ।
उठिले अगद नळ नीळ जे जाम्बव ।। ९ ।।
सुग्रीव राजन उठि बसिलाक तहिँ ।
जुद्धर कथा श्रीरामचन्द्र तांकु कहि ।। १० ।।
कि बुद्धि करिबा दैत्य मरिब केमन्ते ।
एहा तुल्य बीर नाहिँ ए तिनि जगते ।। ११ ।।
भाग्ये सिना भरतर बाटुळिकि खाइ ।
पळाइला आम्भ पाञ्च जणे छाड़ि देइ ।। १२ ।।
नोहिले ताहार मुखु आम्भे कि उबुरि ।
जाइथान्तु अजोध्याकु एहि देह धरि ।। १३ ।।
बदन बिस्तारि धाएँ जे काले दइत ।
गिरि गुहा प्राय दिशे बड़ बड़ दान्त ।। १४ ।।

कहाँ गये । यह लोग असुर के आघात से मूच्छित होकर पड़े थे । ५ यह सुनकर श्रीराम तुरन्त भरत, शत्रुघ्न तथा हनुमान के साथ वहाँ गये । ६ उन्होंने रणभूमि में उन्हें मूच्छित पड़े हुए देखा । पाँचों वीरों से पृथ्वी सुशोभित हो रही थी । ७ यह देखकर श्रीराम ने आकाश की ओर देखकर कहा कि हे सुरेन्द्र ! अमृत की वर्षा करो । ८ इन्द्र ने उसी समय अमृत लाकर छिड़क दिया । अंगद, नल, नील तथा जामबन्त उठ पड़े । ९ तब राजा सुग्रीव उठकर बैठ गये । श्रीरामचन्द्र जी ने उनसे युद्ध के समाचार बताये । १० क्या उपाय किया जाय ? दैत्य कैसे मरेगा ? इन तीनों लोकों में इसके समान कोई वीर नहीं है । ११ भाग्यवश वह भरत की बाटुली से घायल होकर हम पाँच लोगों को छोड़कर भाग गया । १२ नहीं तो क्या हम लोग उसके मुख में पड़कर बचकर इस शरीर के साथ अयोध्या जा पाते । १३ जब वह दैत्य मुख फैला

से काळे बिकट मुख बिकराळ मूर्त्ति ।
देखिले जम देबता पाइबे जे भीति ॥ १५ ॥
मानब कि ताहा देखि रखिब जीवन ।
कि करिबा कह मित बानर राजन ॥ १६ ॥
आहे बिभीषण तु जे लंकार ईश्वर ।
जाम्बवान अटन्ति त बुद्धिर सागर ॥ १७ ॥
बिचारि कह केमन्ते मरिब दइत ।
हनुमान बोले प्रभु न हुअ आरत ॥ १८ ॥
अवश्य मारिबा ताकु बळे अबा कळे ।
एकाळे बिलंकापुर बाद्यरे उछुळे ॥ १९ ॥
बीर तूर बाद्यनाद शुणि बोले हनु ।
आसिब असुर प्रभु बेगे धर धनु ॥ २० ॥
एमन्त कहु असुरे होइले बाहार ।
बिशशिरा दैत्य होइअछि आगभर ॥ २१ ॥
लक्षशिरार अटइ सेहि अणनाति ।
शतशिरार नन्दन दुरन्त से अति ॥ २२ ॥
तार पच्छे छन्ति जम्ब कुजम्ब ए दुइ ।
तार पच्छे जलोद्भव दानब अछइ ॥ २३ ॥

कर दौड़ता है तो उसके मुख पर्वत की गुफाओं के समान दिखाई पड़ते हैं। बड़े-बड़े दाँतोंवाले भयानक मुख और विकराल रूप को देखकर उस समय यमराज भी भयभीत हो जाते हैं। १४-१५ उसे देखकर क्या मनुष्य जीवित रह सकता है? हे मित्र वानरराज! अब कहो क्या किया जाय? १६ हे बिभीषण! तुम तो लंकेश्वर हो! जामवन्त भी बुद्धि के सिन्धु हैं। १७ सोचकर बताओ कि दैत्य कैसे मरेगा? हनुमान ने कहा, हे प्रभु! आप दुखी न हो। उसे छल या बल से अवश्य ही मारेंगे। इसी समय बिलंकापुर वाद्यों से भर गया। १८-१९ वीरवाद्यों का तूर्यनाद सुनकर हनुमान ने कहा, हे प्रभु! अब असुर आयेगा। आप शीघ्र ही धनुष धारण करें। २० इतना कहते-कहते असुर बाहर निकल पड़े। दैत्य बीसकण्ठ आगे-आगे चल रहा था। २१ वह लक्षशिरा का पनाती था। वह शतकण्ठ का पुत्र अत्यन्त दुर्धर्ष था। २२ उसके पीछे जम्ब और कुजम्ब यह दोनों थे। उनके पीछे दानव जलोद्भव था। २३ उसके पीछे केतुमाल, हेन्ताल, बेताल, तालकेतु,

ता पछरे केतुमाळ हेन्ताळ बेताळ ।
ताळकेतु फाळकेतु असुर से फाळ ।। २४ ।।
जीमूतकेतु आबर दैत्य धूमकेतु ।
महाकाय गिरिकाय महाकाळकेतु ।। २५ ।।
जुगान्तक खगान्तक नागान्तक तिनि ।
रश्मिकेतु भस्मकेतु सुजपाकु घेनि ।। २६ ।।
जपा अजपा कुजपा सुनखा कुनखा ।
धूमकेतु व्योमकेतु सुर्मुखा दुर्मुखा ।। २७ ।।
एमन्ते ए महाबीरे बीरे चढ़ि गज ।
केहि रथे बसि हुए जुझिबाकु सज ।। २८ ।।
केहि केहि अश्व पृष्ठे आयुध हस्तरे ।
गर्जन तर्जन करि धामन्ति समरे ।। २९ ।।
दुइ सहस्र पाइक पदाति सइन ।
तांक पच्छे अस्त्रधरि करन्ति गमन ।। ३० ।।
ढोल दमा टमक जे बाजइ महुरी ।
देखिले पर्बते थाइ प्रभु चापधारी ।। ३१ ।।
हनुकु बोइले बाबु अइले असुरे ।
पर्बत उपरु चाल जाइँ खण्डे दूरे ।। ३२ ।।
संग्राम करिबा छाडि न देबा ताहांकु ।
एहा कहि आगभर हेले जुझिबाकु ।। ३३ ।।

फालकेतु, फालासुर दैत्य, जीमूतकेतु, धूमकेतु, महाकाय, गिरिकाय, महाकालकेतु, जुगान्तक, खगान्तक, नागान्तक, यह तीनों सुजपा के साथ रश्मिकेतु, भस्मकेतु, जपा, अजपा, कुजपा, सुनखा, कुनखा, धूमकेतु, व्योमकेतु, सुर्मुखा, दुर्मुखा इस प्रकार महान-महान पराक्रमी योद्धा कोई हाथी पर, कोई रथ पर बैठे जूझने को तैयार थे । २४-२८ कोई-कोई घोड़े की पीठ पर बैठे हुए हाथों में अस्त्र-शस्त्र लिये गर्जन-तर्जन करते हुए समरांगण में दौड़ रहे थे । २९ दो हजार पायक और पैदल सिपाहियों की सेना उनके पीछे अस्त्र लेकर चल रही थी । ३० ढोल, नगाड़े, मोहर तथा टमक बज रहे थे । धनुर्धारी प्रभु राम ने पर्वत पर से उन्हें देखा । ३१ वह हनुमान से बोले, हे तात ! असुर आ गये हैं । पर्वत के ऊपर से थोड़ी दूर चलकर युद्ध करके उन्हें नहीं छोड़ेंगे । यह कहकर युद्ध करने के लिए आगे

बिभीषण शत्रुघन भरत ए तिनि ।
सुग्रीव अंगद नळ नीळ जे पाबनि ।। ३४ ।।
ऋक्ष कपि जाम्बवान आदि नब बीरे ।
जाउछन्ति सज होइ रामंक पच्छरे ।। ३५ ।।
बाटे भेट होइ जुद्ध कले घोर तर ।
बिशशिरा सगे जुद्ध कले रघुबीर ।। ३६ ।।
कुजम्ब दानब संगे जुझे शत्रुघन ।
जम्ब संगे जुद्ध कले कैकेयी नन्दन ।। ३७ ।।
बिभीषण संगतरे जुगान्तक जुद्ध ।
नागान्तक संगे भेट पड़िले अंगद ।। ३८ ।।
रश्मिकेतु सुग्रीवर जुद्ध घोरतर ।
काळकेतु संगे नळ कलाक समर ।। ३९ ।।
धूमकेतु दानबर नीळ संगे भेट ।
गिरिकाय संगे जूझे पबनर चाट ।। ४० ।।
महाकाय जाम्बवर लागिला संग्राम ।
बिंशशिरा संगे जुद्ध करन्ति श्रीराम ।। ४१ ।।
बिंशहस्त बिंशधनु धरि कउणप ।
रामक उपरे बाण बरषे अमाप ।। ४२ ।।
असुर बाणकु राम काटन्ति नाराचे ।
रथरे थाइ असुर मने मने पाञ्चे ।। ४३ ।।

बढ़े । ३२-३३ बिभीषण, भरत, शत्रुघ्न यह तीनों तथा सुग्रीव, अंगद, नल, नील, पवन-नन्दन हनुमान, ऋक्षराज जामवन्त —यह नौ वीर तैयार होकर श्रीराम के पीछे चल रहे थे । ३४-३५ मार्ग में भेंट हो जाने से घोरतर युद्ध करने लगे । रघुवीर राम बिंशशिरा के साथ युद्ध करने लगे । ३६ दानव कुजम्ब के साथ शत्रुघ्न जूझ गये । जम्ब के साथ कैकेयीनन्दन भरत ने युद्ध किया । ३७ बिभीषण के साथ जुगान्तक जूझा और अंगद की भेंट नागान्तक से हो गई । ३८ रश्मिकेतु और सुग्रीव का घोरतर युद्ध होने लगा । कालकेतु के साथ नल ने युद्ध किया । ३९ धूमकेतु दानव की भेंट नील से हुई । गिरिकाय के साथ पवननन्दन जूझ गये । ४० महाकाय के साथ जामवन्त का संग्राम छिड़ गया । श्रीराम बिंशशिरा के साथ युद्ध कर रहे थे । ४१ दैत्य बिंशकंठ ने बीस हाथों में बीस धनुष लेकर श्रीराम के ऊपर असंख्य बाणों की वर्षा की । असुर के बाणों को श्रीराम बाण से काट

पितृ बइरी मोहर अटइ ए राम ।
जाणइ ए बीर गोटा बिचित्र संग्राम ॥ ४४ ॥
एहाकु आजि मुँ रणे पारे जेबे जिणि ।
तेबे बोलाइबि सिना बीरंक अग्रणी ॥ ४५ ॥
एमन्त बिचारि दैत्य बिन्धुअछि शर ।
प्रतिशरे काटन्ति ता प्रभु रघुबीर ॥ ४६ ॥
नाराच बिअर्थ हेबा देखि कउणप ।
ब्रह्मशर प्रहारिला करि महाकोप ॥ ४७ ॥
देखि रघुनाथ ब्रह्मशिरा शर मारि ।
गगन मार्गरे ब्रह्मशरकु निवारि ॥ ४८ ॥
तहुँ कोपे नागपाश बिन्धिला असुर ।
गरुड़ास्त्र निबारिले राम धनुर्द्धर ॥ ४९ ॥
पर्बतास्त्र प्रहारिला बिंशशिरा कोपे ।
देखि बज्रशर राम बसाइले चापे ॥ ५० ॥
लक्ष लक्ष गिरि घोटि आसुथिले शून्ये ।
बज्रशर जाइँ चूना कला से गगने ॥ ५१ ॥
मेघाशर प्रहारिला कोपे से दनुज ।
पबनास्त्र उड़ाइले ताकु राम राज ॥ ५२ ॥

रहे थे। रथ में बैठा हुआ असुर मन ही मन सोचने लगा। ४२-४३ यह राम मेरे पिता का शत्रु है। यह पराक्रमी विचित्र प्रकार का युद्ध जानता है। यदि आज मैं इसे युद्ध में जीत सकूँ तो मुझे वीरों में अग्रगण्य कहा जाएगा। ४४-४५ ऐसा सोचकर दैत्य बाण चला रहा था। जिन्हें रघुवीर श्रीराम प्रत्येक बाण से काट देते थे। ४६ बाणों को व्यर्थ देखकर दैत्य ने अत्यन्त कुपित होकर ब्रह्मशर का प्रहार किया। ४७ देखते ही श्रीराम ने ब्रह्मशर चलाकर आकाश-मार्ग में ही ब्रह्मशर को हटा दिया। ४८ तब असुर ने क्रुद्ध होकर नागपाश छोड़ा जिसे धनुर्धारी श्रीराम ने गरुड़ास्त्र से हटा दिया। ४९ कुपित होकर बिंशशिरा ने पर्वतास्त्र का प्रहार किया। यह देखकर श्रीराम ने धनुष पर बज्रशर सधाना। ५० आकाश में लाख-लाख पर्वत घिरे चले आ रहे थे। वज्रशर ने आकाश में जाकर उन्हें चूर्ण कर डाला। ५१ क्रोधित होकर दनुज ने मेघशर छोड़ा। तब राजा राम ने उसे पवनास्त्र से उड़ा दिया। ५२ इस प्रकार वह जितने भी वार कर रहा था,

एमन्ते से जेते मारे निवारन्ति राघु ।
दानबर धनु जाक काटिलेक प्रभु ॥ ५३ ॥
दश बाणे सारथिर प्राण नेले हरि ।
चारि बाणे छेदिलेक रथ अश्व चारि ॥ ५४ ॥
बिरथ निरस्त्र होइ प्रचण्ड दानव ।
शकतिए प्रहारिला ता देखि राघव ॥ ५५ ॥
बाबल शरे ता काटि कले खण्ड खण्ड ।
देखि दैत्य धाइँलाक धरि रथ दण्ड ॥ ५६ ॥
इन्द्र अस्त्रे काटिले ता असुर हस्तरु ।
मुष्टि उञ्चाइ धाइँला देखि राम दुरु ॥ ५७ ॥
बइष्णवी चक्रे काटि पकाइले शिर ।
गरजन करि तळे पड़िला असुर ॥ ५८ ॥
कुजम्ब दानव मला शत्रुघन हस्ते ।
जम्ब दानब जुझइ भरत संगते ॥ ५९ ॥
नारायण शर मारि कैकेयी नन्दन ।
जम्ब दानबर शिर कलेक छेदन ॥ ६० ॥
बिभीषण हस्ते देला जुगान्तक प्राण ।
अंगद संगते करे नागान्तक रण ॥ ६१ ॥

उन सबको राम काट देते थे। तब भगवान श्रीराम ने दानव के सारे के सारे धनुष काट डाले। ५३ दस बाणों से उन्होंने सारथी के प्राण हरण कर लिये। चार बाणों से रथ के चारों घोड़ों को छेद दिया। ५४ प्रचण्ड दानव बिरथ और निःशस्त्री हो गया तब उसने शक्ति का प्रहार किया जिसे देखकर श्रीराम ने बावल नामक बाण ने उसे काटकर उसके खण्ड-खण्ड कर दिये। यह देखकर दैत्य रथ का दण्ड लेकर दौड़ा। ५५-५६ इन्द्रास्त्र से उन्होंने असुर के हाथ के दण्ड को काट डाला। तब वह मुष्ठिका उठाकर दौड़ा। उसे देखकर श्रीराम ने दूर से ही वैष्णवी चक्र से उसका शिर काट डाला। गर्जना करते हुए असुर भूमितल पर गिर पड़ा। ५७-५८ शत्रुघ्न के हाथों कुजम्ब दानव मारा गया। जम्ब दानव भरत से युद्ध कर रहा था। ५९ कैकेयीनन्दन भरत ने नारायण-शर मारकर जम्ब दानव का शिर काट डाला। ६० बिभीषण के हाथों जुगान्तक ने प्राण दे दिये। अंगद के साथ नागान्तक संग्राम कर रहा था। ६१ दोनों महान योद्धा थे। कोई भी एक कदम भी पीछे नहीं

दुहेँ महाक्षत्री पादे न घुंचन्ति केहि।
अगद धइला कोपे दैत्य पाद दुइ ॥ ६२ ॥
दुइ फाळ करि ताकु पकाइला चिरि।
रश्मिकेतुकु सुग्रीव दुइ हस्ते धरि ॥ ६३ ॥
भूमिरे पकाइ तार बिदारिला छाति।
मला से दानब गोटा करि रक्तबान्ति ॥ ६४ ॥
काळकेतु संगतरे जुझुथिला नळ।
कोपे धाइँ धइलाक दनुजर बाळ ॥ ६५ ॥
खड़ग गोटाए मारि छेदिला ता शिर।
धूमकेतु संगे नीळ जुद्ध गुरुतर ॥ ६६ ॥
माल जुद्ध करन्ति से गड़ागड़ि होइ।
असुर छातिरे नीळ बसिलाक जाइँ ॥ ६७ ॥
बिधाए माइला कोपे गर्जिला दइत।
दशद्वार देइ तार बहिला शोणित ॥ ६८ ॥
मला से दनुज गोटा बिधार आघाते।
गिरिकाय जुद्ध करे हनुर संगते ॥ ६९ ॥
महाबळबन्त अटे से दानब गोटा।
गिरिप्राय अटइ ता देह अति मोटा ॥ ७० ॥

हट रहा था। अंगद ने कुपित होकर दैत्य के दोनों पैर पकड़ लिये। ६२ उन्होंने उसके दो टुकड़े करके चीरकर फेंक दिया। सुग्रीव ने रश्मिकेतु को दोनों हाथों से पकड़कर भूमि पर पटककर उसका वक्ष विदीर्ण कर दिया। वह दानव खून की उल्टी करके मर गया। ६३-६४ कालकेतु के साथ नल युद्ध कर रहा था। दौड़कर उसने कुपित होकर दैत्य के बाल पकड़कर एक तलवार उठाकर उसका शिर काट दिया। धूमकेतु के साथ नील का तुमुल युद्ध चल रहा था। ६५-६६ वह दोनो गिरते-गिराते हुए मल्लयुद्ध कर रहे थे। नील असुर की छाती पर जा बैठा। ६७ उसने क्रुद्ध होकर मुक्का मारा जिससे दैत्य गरज उठा। उसके दश द्वारों से रक्त प्रवाहित होने लगा। ६८ एक मुक्के के आघात से वह दानव मर गया। गिरिकाय हनुमान के साथ युद्ध कर रहा था। ६९ वह दानव महान पराक्रमी था। उसका अत्यन्त स्थूल शरीर पर्वत के समान था। ७० हनुमान द्वारा उसके दोनों पैर पकड़कर घुमाकर पीटने से राक्षसों की सेना मर गई। ७१ बहुत से मर गये, बहुत भाग गये।

ताहार चरण दुइ धरि हनुमान ।
बुलाइ पिटन्ते मले राक्षस सहन ॥ ७१ ॥
थोकाए मले थोकाए गलेक पळाइ ।
नीळ सुन्दर पर्बते पिटिलाक नेइ ॥ ७२ ॥
पर्बत फाटिला दैत्य कपाळ फाटिला ।
घोर गरजन करि पराण छाड़िला ॥ ७३ ॥
महाकाय जाम्बवर हेला घोर रण ।
दनुज जे धनुधरि बिन्धुअछि बाण ॥ ७४ ॥
कुदि जाइ जाम्बवान बसिला ता रथे ।
धनुकु छड़ाइ भांगि देला तार हस्ते ॥ ७५ ॥
चापोड़े माइला तार छिड़ि गला मुण्ड ।
आउ दानबे ता देखि हेले लण्ड भण्ड ॥ ७६ ॥
भरत शत्रुघ्न बाणे गले जमपुर ।
आसिथिले संग्रामकु जेतेक असुर ॥ ७७ ॥
समस्ते मले गोटिए न गले बाहुड़ि ।
दूत राजार छामुरे कहे कर जोड़ि ॥ ७८ ॥
भो बीर मउड़मणि असुराधिराय ।
तोर सेनापति जाक रणे गले क्षय ॥ ७९ ॥
समस्ते मले उबुरि न आसिले केहि ।
बिशशिरा मला तोर कि कहिबि मुहिँ ॥ ८० ॥

फिर उसे नील सुन्दर पर्वत पर ले जाकर पटक दिया । ७२ पर्वत फटने के साथ ही दैत्य का शिर फट गया । घोर गर्जना करते हुए उसने प्राण त्याग दिये । ७३ महाकाय तथा जामवन्त का तुमुल संग्राम हुआ । दैत्य धनुष लेकर बाण चला रहा था । ७४ जामवन्त कूदकर उसके रथ पर जा बैठे तथा उसके हाथ से उन्होंने धनुष छीनकर तोड़ फेंका । ७५ तमाचे मारने से उसका शिर टूट गया । अन्य दानव उसे देखकर भौचक्के रह गये । ७६ युद्ध करने के लिए जितने भी असुर आये थे वह भरत और शत्रुघ्न के बाणों से यमपुर चले गये । ७७ सभी मर गये, एक भी लौटकर नहीं जा पाया । दूत ने राजा के समक्ष हाथ जोड़कर कहा । ७८ हे वीर शिरोमणि असुराधिपति ! आपके सभी सेनापति रण में काम आ गये । ७९ सभी मर गये, कोई भी बचकर नहीं आया । मैं क्या कहूँ ? आपका बिशकण्ठ भी मारा गया । ८० सुनते ही लक्षकण्ठ

शुणि लक्षशिरा ढलि पड़िला भूमिरे ।
कळपा सिंचिला नीर आणि ता मुखरे ॥ ८१ ॥
घड़िके चेतना पाइ बोलइरे बाबू ।
तुहि एकाथिलु पुत्र नाति मले सबु ॥ ८२ ॥
शोक समुद्ररे कुळ बुड़िला मोहर ।
नर हस्ते प्राण देलु होइ एड़े बीर ॥ ८३ ॥
बहुत प्रतिज्ञा करि जाइ थिलु बाबु ।
बुद्धि बळ पराक्रम हराइलु सबु ॥ ८४ ॥
तुहि सिना बाबु मोर पिण्डर कारण ।
तोते हराइ रहिछि ए निर्लज्ज प्राण ॥ ८५ ॥
एमन्ते बहुत शोक कला दैत्यपति ।
पाताळकेतु नामरे असुर दुमति ॥ ८६ ॥
बोइला किम्पाइँ शोक कर अकारणे ।
सम्मुख संग्रामे प्राण देले बीर गणे ॥ ८७ ॥
एथि पाइँ किम्पा शोक करिबा राजन ।
कालि मुहिं संग्रामकु करिबि गमन ॥ ८८ ॥
नर बानरंकु मारि रखिबइँ कथा ।
मो बंश नाशिला तार काटिबइँ मथा ॥ ८९ ॥

पृथ्वी पर लुढ़क गया। कल्पा ने पानी लाकर उसके मुख पर छींट दिया। ८१ एक घड़ी में होश आने पर कहने लगा, हे बेटा ! तू ही तो एक था। पुत्र तथा नाती सभी मर चुके थे। ८२ मेरा कुल शोक-सिन्धु में डूब गया। इतने बड़े वीर होकर मानव के हाथों प्राण दे दिये। ८३ बेटा ! तुम तो बहुत प्रतिज्ञा करके गये थे। बुद्धि, बल तथा पराक्रम सब खो दिया। ८४ तुम्हीं तो बेटा ! मेरे पिण्ड के सहारे थे। तुझे खोकर भी यह निर्लज्ज प्राण बचे हुए हैं। ८५ इस प्रकार दैत्यराज ने बहुत शोक किया। तभी दुर्बुद्धि पाताळकेतु नामक असुर बोला कि अकारण ही शोक क्यों कर रहे हैं ? उन वीर गणों ने समर में सामने से प्राण त्यागे हैं। ८६-८७ हे राजन् ! इसमें शोक क्यों करें ! कल मैं युद्ध हेतु प्रस्थान करूंगा। ८८ नर और वानर को मारकर मैं आपकी बात रखूंगा जिसने मेरे वंश को नष्ट किया है। उसका मस्तक काट लूंगा। ८९ मेरे बड़े-बड़े सौ पराक्रमी पुत्र थे। तुच्छ नर होकर उसने

मोर शत पुत्र थिले महा महाबीर ।
ताहांकु माइला सेहि छार होइ नर ।। ९० ।।
पुत्र शोक निवारिबि हा रुधिर पिइ ।
एमन्त शुणि कळपा असुर बोलइ ।। ९१ ।।
मुहिँ जिबि तोर संगे करिबि समर ।
शुणि सानन्द होइला बिलंका ईश्वर ।। ९२ ।।
दुहिँकर शिरे नेइ बान्धि देला पाट ।
दुहेँ त मंत्री जाणन्ति बहुत कपट ।। ९३ ।।
कूट मायारे निपुण अटन्ति से दुइ ।
माया बिस्तारिले सेहि पुर मध्ये थाइ ।। ९४ ।।
माया रथ चढ़ि दुहेँ करन्ति गमन ।
मायारे से भिआइले बहुत सइन ।। ९५ ।।
बिचार करन्ति दुहेँ चाल आम्भे जिबा ।
रामर संगतरे जे समर करिबा ।। ९६ ।।
बोलइ पाताळकेतु कळपाकु चाहिँ ।
माया सैन्य घेनि जुद्ध करुथिबु तुहि ।। ९७ ।।
मुँ कपटे घेनि जिबि रामकु पाताळे ।
अन्धकूपे पकाइण आसिबि भूतळे ।। ९८ ।।
तुहि अंग लुचा देइ करुथिबु रण ।
माया थाट गोटाकु तु आगे चळाइण ।। ९९ ।।

उन्हें मार डाला । ९० उसका रक्त पीकर पुत्र-शोक दूर करूँगा । ऐसा सुनकर कल्पासुर बोला । ९१ मैं भी तेरे साथ चलकर युद्ध करूँगा । यह सुनकर बिलंकेश्वर प्रसन्न हो गया । ९२ उसने दोनों के शिरों पर पगड़ी बाँध दी । दोनों ही मंत्री बहुत माया जानते थे । ९३ वह दोनों कपट-माया में पारंगत थे । उन्होंने नगर के बीच में रहकर माया का विस्तार किया ९४ माया-रथ पर चढ़कर दोनों चल दिये । उन्होंने माया से बहुत सी सेना तैयार कर ली । ९५ दोनों बिचारने लगे कि चलो हम लोग चलें तथा राम के साथ युद्ध करें । ९६ पातालकेतु ने कल्पा की ओर देखकर कहा कि तुम माया की सेना लेकर युद्ध करते रहना । ९७ मैं छल करके राम को पाताल ले जाकर अन्धे कुएँ में गिरा कर पृथ्वी-तल पर लौट आऊँगा । ९८ तुम अपने शरीर को गुप्त रखकर युद्ध करना तथा माया की सैन्यवाहिनी को आगे चलाते रहना । ९९